0-3 वर्ष की आयु वाले बच्चों का अंतराक्षेपण के लिए

पूर्वोत्तर क्षेत्र में देशज प्रथाओं का अध्ययन

मिजोरम | मेघालय | त्रिपुरा

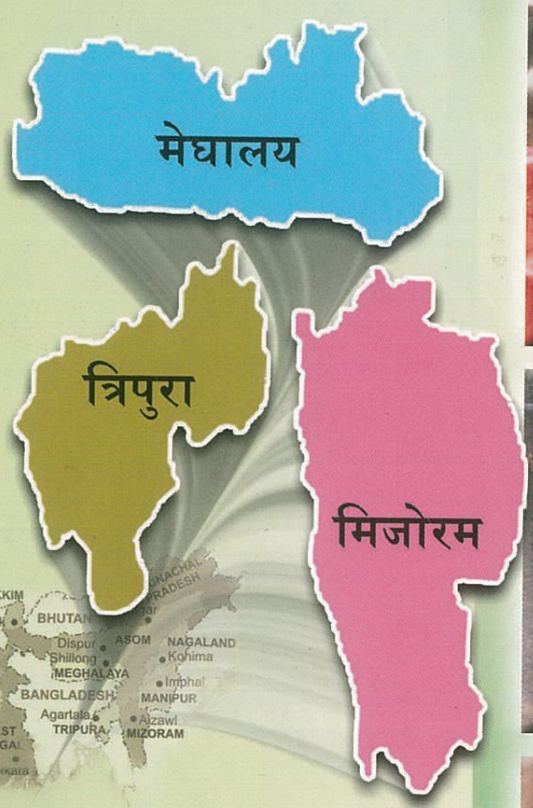

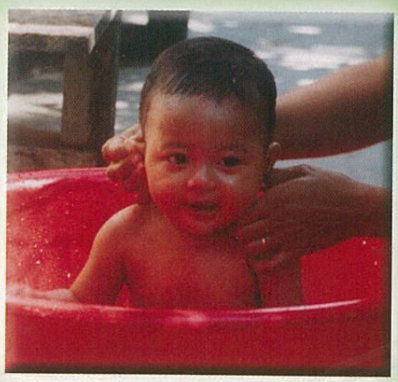

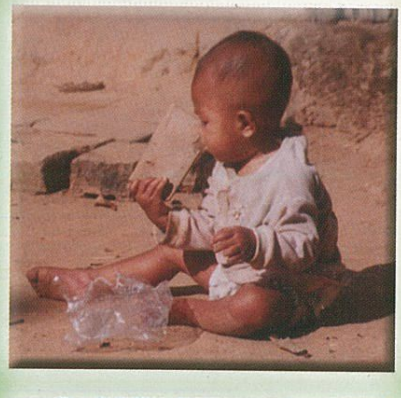

डॉ.अमर ज्योति पर्शा
डॉ.जयन्ती नारायण
श्री आर.सी.नितनवरे
डॉ.मार्ता डेविड

nqa. ISO 9001 Registered

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(निःशक्तजन कार्य विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
(आई.एस.ओ.9001:2008 संस्थान)

0-3 वर्ष की आयु वाले बच्चों का अंतराक्षेपण के लिए

पूर्वोत्तर क्षेत्र में देशज प्रथाओं का अध्ययन

मिजोरम | मेघालय | त्रिपुरा

डॉ.अमर ज्योति पर्शा

डॉ.जयन्ती नारायण

श्री आर.सी.नितनवरे

डॉ.मार्ता डेविड

nqa. ISO 9001 Registered

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान

(निःशक्तजन कार्य विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)

(आई.एस.ओ.9001:2008 संस्थान)

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद 500 009, आँध्रप्रदेश, भारत

तार: मनोविकास, फोन:040-27751741 फैक्स: 040-27750198

ई.मेल: library@nimhindia.org वेबसाइट: www.nimhindia.gov.in

0-3 वर्ष की आयु वाले बच्चों का अंतराक्षेपण के लिए

पूर्वोत्तर क्षेत्र में देशज प्रथाओं का अध्ययन

(मिजोरम मेघालय त्रिपुरा)

लेखक:
डॉ.अमर ज्योति पर्शा
डॉ.जयन्ती नारायण
श्री आर.सी.नितनवरे
डॉ.मार्ता डेविड

कापीराइट 2013
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
सिकंदराबाद 500 009

सभी अधिकार आरक्षित

ISBN 81 89001 93 7

Printed at : **Sree Ramana Process Pvt. Ltd.,** Secunderabad-3. Ph : 040-27811750

विषय सूची

प्राक्कथन

भूमिका

आभार

1. परिचय 11
2. साहित्य की समीक्षा 17
3. परिणाम 27
4. चर्चा 109
5. प्रत्येक राज्य के विशेष लक्षण 199
6. जोखिम कारकों का राज्यवार सूची 205
7. सकारात्मक प्रथाओं का राज्यवार सूची 213
8. सिफारिश 223
9. आगे की अनुसंधान का अवसर 225
10. सारांश और निष्कर्ष 227
11. बच्चे के पालन पोषण प्रथाओं पर प्रश्नावली 235
12. ग्रंथ सूची 277
13. पूर्वोत्तर की यात्रा 279

टी.सी. शिवकुमार
निदेशक
T.C. SIVAKUMAR
Director

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
NATIONAL INSTITUTE FOR THE MENTALLY HANDICAPPED
(Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India)
(An ISO 9001 : 2008 Institution)

प्राक्कथन

प्रत्येक बालक अपने विकास एवं वृद्धि में अनोखा है। यह इसलिए कि परिवार का विस्तृत प्रभाव, पालन-पोषण के तरीकें, और विभिन्न परिस्थितियाँ जिसमें उसकी वृद्धि होती है और उसका विकास होता है। भारत एक विशाल देश होने के नाते, उसमें सामाजिक आर्थिक पहलू, भौगोलिक, सांस्कृति, भाषा एवं विश्वास में कई भिन्नताओं के कारण, बच्चे और परिवारों के स्वास्थ व विकास के क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाने का आशय एवं अंतराक्षेपण कार्यक्रमों की योजना बनाना एक बहुत ही बडा कार्य है। इसके लिए परिवार व बच्चे के वृद्धि व विकास में प्रभावकारी वर्तमान कारकों को जानना आवश्यक है।

हमारी सरकार ने उत्तर पूर्वी राज्यों के स्वास्थ्य, बच्चे का विकास, सामाजिक एवं परिवार सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया है। यह परियोजना उचित नियत कालिक प्रतीत होती है।

आयोजित व्यापक कार्य से प्रत्येक राज्य का विस्तृत ज्ञान मिला है। भौगोलिक क्षेत्र में, जन संख्या विशेषता में बच्चा अपने सामान्य वातावरण में परिवार, अभिभावक, घर, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं में प्रत्येक राज्य अपने आप में एक अनोखी विशेषता रखता है। इसमें बच्चे के स्वास्थ्य, पालन-पोषण, उत्तेजना क्रियाकलाप एवं उपलब्ध साधनों व उनके उपयोग पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है।

निष्कर्ष रिपोर्ट में सामर्थ्य और सकारात्मक प्रथाओं को बताया गया है जिसे प्रोत्साहित करना है और गलत धारणाओं और प्रथाओं की सूची दी गई है जिसका उन्मूलन करना है। अत: की गई सिफारिश उन राज्यों में स्वास्थ्य एवं बच्चे की देखभाल एवं परिवार सेवाओं की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन बन सकती है। भविष्य में भारत के अन्य राज्यों में इसी तरह के अध्ययन से राज्य में अपने लोगों के लिए सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने का अवसर मिलेगा।

दिनांक: 1 मार्च, 2013
स्थान : सिकंदराबाद

टी.सी.शिवकुमार

मनोविकास नगर, सिकंदराबाद - 500 009 तार : मनोविकास दूरभाष : (का) 27759267 (नि) 27992617 फैक्स : 040-27758817
Manovikasnagar, Secunderabad - 500 009. Grams : MANOVIKAS Phones : 27759267 Fax : 040-27758817
E-mail : director@nimhindia.org, nimh.director@gmail.com Website : www.nimhindia.org

भूमिका

प्रत्येक बालक अपने विकास एवं वृद्धि में अनोखा है। यह इसलिए कि परिवार का विस्तृत प्रभाव, पालन-पोषण के तरीकें, और विभिन्न परिस्थितियाँ जिसमें उसकी वृद्धि होती है और उसका विकास होता है। भारत एक विशाल देश होने के नाते, उसमें सामाजिक आर्थिक पहलू, भौगोलिक, सांस्कृति, भाषा एवं विश्वास में कई भिन्नताओं के कारण, बच्चे और परिवारों के स्वास्थ व विकास के क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाने का आशय एवं अंतराक्षेपण कार्यक्रमों की योजना बनाना एक बहुत ही बडा कार्य है। इस कार्य को संभव करने व बनाए रखने के लिए कार्यक्रम बनाना होगा। इसके लिए परिवार व बच्चे के वृद्धि व विकास में प्रभावकारी वर्तमान कारकों को जानना आवश्यक है। इसमें भोगोलिक कारक, वातावरणीय परिस्थितियाँ, स्वस्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, घरेलू अंतराक्षेपण, सांस्कृतिक विश्वास, बच्चे के पालन-पोषण की प्रथा, बच्चे के क्रिया कलाप, परिवार सहायता, संसाधन, आदि सम्मिलित हैं। इनको व्यापक रूप में समझकर, स्वीकृत अंतराक्षेपण योजना, जिसमें मौजूद सकारात्मक प्रथाओं को बढाने के साथ साथ नकारात्मक, हानिकारक तथा गलत धारणाओं के उन्मूलन के लिए संभाव्य प्रयास, शामिल कर सकते हैं। यह, उपलब्ध संसाधनों एवं उनका उत्तम व अनुकूलतम उपयोग का मार्गदर्शन भी करेगा।

पूर्वोत्तर राज्यों में स्वास्थ्य, बाल विकास, सामाजिक तथा परिवार सेवाओं को बढ़ाने के लिए भारत के इन राज्यों पर विशेष ध्यान केन्द्रीकरण से इस अध्ययन, जिसमें उपयुक्त संबंधित सूचना सम्मिलित है, पर प्रभाव पडा। इसमें दी गई सिफारिशें अध्ययन किये गये प्रत्येक राज्य के लिए आवश्यक सेवाएँ तैयार करने व ध्यान केन्द्रित करने में सहायक होंगी।

तीन राज्यों में अध्ययन किया गया, वे हैं, मिजोरम, मेघालय एवं त्रिपुरा। संपूर्ण अध्ययन तीन भागों में विभाजित किया गया।

पहला भाग जनसांख्यिकी विवरण जिसमें उत्तरदाताओं की सूचना, बच्चे का सूचकांक, परिवार, घरेलू एवं जीवनशैली सम्मिलित हैं।

दूसरे भाग में प्रसव समय मातृक आयु, गर्भधारणाओं की संख्या, प्रसव का विवरण तथा प्रसवोत्तर देखरेख सम्मिलित हैं।

तीसरे भाग में बच्चे का विवरण सहित नवजात देखरेख, दैनिक बाल देखभाल क्रियाकलाप, स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक प्रथाएँ और बच्चे की देखभाल में परिवार सम्मेलन आवरित हैं।

आंकडों के विश्लेषण के उपरांत, सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावित करने वाले कारकों पर सिफारिशों सहित चर्चा की गई जो प्रत्येक राज्य के कार्यक्रम योजना बनाने में उपयुक्त की जा सकती है। ऐसे ही अध्ययन, भविष्य में, भारत के अन्य राज्यों में संचालन करने का अवसर है, जिसमें आंकडों को इकट्ठा करके इनका स्वास्थ्य एवं बाल विकास को बढ़ावा देने में उपयोग कर सकते हैं।

आभार

हम, मिजोरम, मेघालय एवं त्रिपुरा सरकार के आभारी हैं जिन्होने इस परियोजना के प्रारंभ करने व आयोजन करने एवं राज्य की भौगोलिक जनसंख्या संबंधी सूचना प्रदान करने में योगदान दिया। वहाँ के लोगों के स्वास्थ्य एवं उनके क्षेत्र में बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए जो उत्साह दिखाया, हम उनकी सराहना करते हैं।

सभी तीन राज्यों के स्थानीय समन्वयन संगठनों का हम उनके प्रयासों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं जिन्होंने निर्धारित समय में सफलता पूर्वक आंकडें संकलन करने का प्रयास किया। इन पर्वतीय राज्यों में घरो-घर जाकर आंकडें संकलित करने की कठिनाई से हम अवगत हैं। वहाँ परिवहन की समस्या है क्योंकि घर दूर दूर हैं। कई कठिनाइयों की सामना करते हुए भी आंकडें संकलित करने के उनके प्रयास की हम प्रशंसा करते हैं।

परियोजना में सहभागी सभी परिवारों के हम ऋणि हैं, उनकी स्वागत भरी मुस्कान एवं उनके द्वारा दिये गये बहुमूल्य समय ने हमारी परियोजना को बल दिया। इस विस्तृत जाँचसूची के उत्तर देने में उनकी सहनशीलता एवं सूचना के आदान प्रदान में अपनी इच्छा जाहिर करना, संबंधित फोटोग्राफ एवं वीडियो फिल्म बनाने में बडी प्रसन्नता हुई, यह स्मरणीय है। हम हृदयपूर्वक उन परिवारों के आभारी हैं।

श्री सूर्यप्रकाशम के प्रति हम आभारी हैं जिन्होने आंकडों का सांख्यिकी विश्लेषण किया। हम उन सभी सहकर्मियों के योगदान के सराहना करते हैं जिन्होंने आलोचनात्मक टिप्पणी एवं मार्गदर्शन दिया। हम प्रशासनिक कर्मचारियों एवं अन्य जिन्हों ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस परियोजना को पूरा करने में योगदान दिया उनके हृदयपूर्वक आभारी हैं।

डॉ.अमरज्योति पर्शा

परिचय

पुरातन टिप्पणियों से यह पता चलता है कि, मनुष्य जैसा जैसा बढ़ता है, उसमें शारीरिक परिवर्तन भी आता है। उनमें शारीरिक, मानसिक, भाषाई, चलन तथा व्यक्तित्व जैसे सभी आयामों में वृद्धि दिखाई देती है।

छोटे बच्चों में विकास की प्रक्रिया एक अत्यंत दिलचस्प घटना है, जो माता पिता तथा अन्य लोगों को खुशी दिये बिना और विस्मित किये बिना नहीं छोडती। वजन चार्ट में 50 ग्राम बढ़ना, हमेशा सर एक ओर रखने की स्थिति में से अचानक सर उठाकर रखने की क्षमता आना, खिलौनों का एक हाथ से दूसरे हाथ में लेन देन करना, अपने आप उठाया जाने वाला पहला कदम, पहले उच्चार किया गया शब्द, - ये सभी अभिव्यक्तियाँ क्रमबद्ध व क्रमिक विकास को व्यक्त करती हैं। बच्चा एक जीव होने के तथ्य में बनाए गए कुछ नियमों के अनुसार बच्चे का विकास एक वैध रूप में होता रहता है।

सभी तरह के विकास का मूल है, वृद्धि। अपने विकास के दौरान बच्चे पर्यावरण से परस्पर संबंध बनाए रखते हैं तथा अपने सूक्ष्म-वातावरण के अंश से संस्कृति निर्धारित व्यवहार को सीखते हैं, जिसमें परिवार के विश्वास प्रणालियाँ, रवैये, परम्पराएँ एवं खान-पान, पसंद, न पसंद, शामिल हैं। यह सर्व विदित है कि पोषक स्थिति, अभिभावक/ देखभालकर्ता की आय व व्यवसाय, घर के जनसंख्यिकी लक्षण, गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों का उपयोग तथा स्वस्थ्य देखभाल, नई सूचना का ज्ञान, ये सब बच्चे के देखभाल की प्रथाओं में योगदान देते हैं (वज़ीर एस., 2003)। जीवन के शुरुआती विकासशील दशाओं के दौरान बच्चा जिस वातावरण में पलता है, इसका वंशानुगत क्षमता पर जोरदार प्रभाव पड़ता है। कई पर्यावरणीय कारकों में से, छ: कारकों को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने जा सकते हैं और इसका प्रभाव लगभग एक जैसा ही है, जैसे, अनुकूल पारस्परिक संबंध, भावनात्मक स्थिति, शिशु प्रशिक्षण पद्धतियाँ, प्रारंभिक भूमिका, बाल्यावस्था की परिवार संरचना तथा पर्यावरणीय उत्तेजना। (ई.बी.हरलॉक, 1984)।

बच्चे की पालन-पोषण प्रथाएँ संसार के विभिन्न भागों में अलग अलग होती हैं। दिलचस्प बात यह है कि, सभी प्रथाओं के अपने अपने लाभ हैं। वे लोगों के सांस्कृतिक, क्षेत्रीय, धार्मिक, भाषाई तथा शैक्षणिक स्थिति के आधारिक होते हैं। कुछ प्रथाएँ बच्चों के स्वास्थ्य वृद्धि एवं विकास के स्वाभाविक तौर पर वैज्ञानिक और स्वीकार्य होते हैं, पर कुछ प्रथाएँ अंधविश्वास के आधार पर होती हैं जो कि, बच्चों के लिए हानिकारक हो सकती हैं। बच्चे के पालन के विचार एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होते है - ये धारणाएँ कभी कभी बच्चे के स्वास्थ्य सेवाओं और विकास में बाधा डाल देते हैं। हर समुदाय किसी भी नई चीज़ को स्वीकार्य करने में प्रतिरोध तो करते ही हैं। अत: यह उचित होगा कि मौजूद प्रथाओं को जान सकें, उसके लाभ व सीमाओं का विश्लेषण करें और उसके बाद गलत प्रथाओं को ठीक करने के लिए कदम उठाएँ, जो उस समुदाय को स्वीकार्य हो। इसी के मद्देनज़र, इस परियोजना में शुरुआत में तीन पूर्वोत्तर राज्यों के देशज प्रथाओं को पहचान कर बच्चों की भलाई के लिए जहाँ कहीं आवश्यक हो उन्हें, स्थानीय लोगों की भावनाओं को आहत किये बिना, बदलने के लिए नीतियाँ तैयार करने का प्रस्ताव है।

इस परियोजना का उद्देश्य पूर्वोत्तर क्षेत्र में अपनाये गये विभिन्न बच्चे के पालन-पोषण रीतियों को समझना है। यह सूचना स्वास्थ्य मंत्रालय, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय तथा भारत के महिला एवं शिशु विकास विभाग, जो लोगों द्वारा स्वीकार्य किये जाने वाले वितरण अभिगम का विकास के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, उने को उपयोगी सिद्ध होगा।

परियोजना के उद्देश्य

- पूर्वोत्तर क्षेत्र के तीन चयनित राज्यों (मिजोरम, मेघालय, तथा त्रिपुरा) के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा स्वस्थ्य देखरेख प्रथाओं पर आंकडों का संकलन करना
- अंतराक्षेपण के लिए जोखिम कारकों को पहचानना
- प्रारंभिक अंतराक्षेपण कार्यक्रमों में सम्मिलित करने के लिए मौजूद प्रथाओं को पहचानना
- अंतराक्षेपण के लिए मॉड्यूल विकसित करना जिसमें सकारात्मक प्रथाएँ, सकारात्मक प्रथाओं का वैज्ञानिक निरूपण और नकारात्मक प्रथाओं का औचित्य सहित सुधार हो, और संबंधित व्यावसायिकों और इकाइयों को मॉड्यूल उपलब्ध कराना।

अध्ययन के स्थान : यह अध्ययन तीन पूर्वोत्तर क्षेत्र, अर्थात् मेघालय, मिजोरम एवं त्रिपुरा में संचालित किया गया।

मेघालय

मेघालय पूर्वी उप-हिमालय पर्वत से छिप गया है। देश भर में यह एक अत सुंदर राज्य है। मानो प्रकृति ने इसे अत्यधिक बरसात, सूर्य के प्रकाश, वनों, ऊँचे द्वीपों, बहते झरनों, शुद्ध निर्मल जल, टेढ़ी मेढ़ी सरिताओं का वरदान दिया हो। इससे भी अधिक हट्टे-कट्टे, बुद्धिमान एवं सत्कारशील आतिथेय करने वाले व्यक्तियों से भर दिया है। शिलाँग, इसकी राजधानी है। यहाँ के सुरम्य, नयनाभिराम, सजीव परिदृश्य, देवदार के पेड से ढके पहाड, तेज़ धारा और मनोहर झरने गर्मी से राहत दिलाते हैं।

मेघालय 1970 अप्रैल में स्वायत्त राज्य के रूप में आविर्भावित हुआ तथा जनवरी 1972 में पूर्ण रूप से राज्य बन गया जो भारत के पूर्वोत्तर का भू-राजनीतिक इतिहास का एक नये युग का प्रारंभ माना गया। यह उत्तर के गोलपारा, कामरूप एवं नौगाँग जिले से, पूर्व में कर्बी, ऐंगलाँग एवं उत्तर कचर पर्वतीय जिलों से, पूरा असम एवं दक्षिण पूर्व, बाँग्लादेश से घिरा हुआ है। केन्द्रीय दक्षिणीय मेघालय में बरसात में बहुत अधिक भिन्नता दिखाई देती है।

मेघालय मुख्यत: खासी, जैनतीय एवं गारो की जन्मभूमि है एवं उनकी प्रमुख भाषा खासी, पनार, गारो और अंग्रेजी है। यहाँ का वातावरण ठंडा है, पूरे वर्ष भर ठंडी हवाएँ चलती है, 25 डिग्री सेलसियस से न्यूनतम 1 डिग्री सेलसियस तक हवामान रहता है।

मिजोरम

उत्तर पूर्वी किनारों के ऊँचे पर्वतों पर टिका हुआ मिजोरम, विभिन्न प्रकार के असीम प्राकृतिक दृश्य, पर्वतीय क्षेत्र, टेडी-मेडी दरिया, गहरी तंग घाटियाँ एवं वनस्पति व जीवजंतुओं का विपुल खजाना है। पश्चिम में बंगलादेश और पूरब और दक्षिण मे मियानमार से घिरा हुआ मिजोरम एक महत्वपूर्ण व्यूहात्मक स्थान पाया है जिसकी अंतर्राष्ट्रीय सीमा 722 कि.मी. लंबी है। ऐजवाल इसकी राजधानी है।

उनकी मेज़बानी सर्वविदित है, मिजोवासी एकता में बाँधने वाला समाज है जहाँ न कोई वर्ग भेद है और ना ही लिंग भेद। यह संपूर्ण समाज एक विशेष नीति से बंधी हुआ है।

मिजोरम एक पर्वतीय क्षेत्र है जो फरवरी 1987 में बना प्रभुसत्तात्मक राज्य है। मिजोरम भारत के पूर्वी भाग का एक भिन्न पर्वतीय प्रदेश है। पर्वत दुरारोह है एवं उत्तर या दक्षिण दिशाओं की ओर बहने वाली नदियों से अलग हुआ है जो पर्वतों की श्रेणी में गहरी घाटियों का निर्माण करती है। यहाँ सामान्यत: ग्रीष्म काल में शीतलता बनी रहती है तथा शीत काल में अधिक शीतलता नहीं होती। सारा क्षेत्र मान्सून के सीधे प्रभाव में रहता है एवं मई से सितम्बर तक अतिवृष्टि होती है। लगभग सभी प्रकार के उष्णकटिबंधीय एवं फले फूले पेड पौधे मिजोरम में पाये जाते हैं।

त्रिपुरा

त्रिपुरा, देश के उत्तर पूर्वी भाग के सात राज्यों में से एक है जहाँ 19 विभिन्न जनजातियों के समुदाय से विपुल सांस्कृतिक धरोहर पाई जाती है।

उत्तर, पश्चिम, दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व में बांगलादेश से त्रिपुरा घिरा हुआ है, पूरब में असम एवं मिजोरम की एक सामान्य सरहद है। नवम्बर 1956 में त्रिपुरा बिना विधानमंडल के प्रभुसत्ता क्षेत्र बना है और जुलाई 1963 में एक प्रचलित मंत्रालय बना। त्रिपुरा ने 1972 में राज्यत्व प्राप्त किया और अगरतला उसकी राजधानी है।

त्रिपुरा 60% पर्वतीय प्रदेश एवं वनों से घिरा उत्तर पूर्वी भारत का दूरस्थ प्रदेश है। यहाँ का तापमान 10 से 35 डिग्री सेलसियस होता है और वर्ष भर में औसत वर्षा होती है।

कृषि द्वारा इस राज्य में लगभग 64% कुल रोजगार मिलता है एवं राज्य घरेलू उत्पाद को 48% का योगदान देता है। विभिन्न जातीय समूह द्वारा बम्बू और बेंत से उत्तम कोटि की हस्तकलाएं तैयार की जाती हैं और ये हस्तकलाएँ सारे देश में प्रसिद्ध हैं। यहाँ अधिकतर बोले जाने वाली भाषा बंगाली और ककबोरक है।

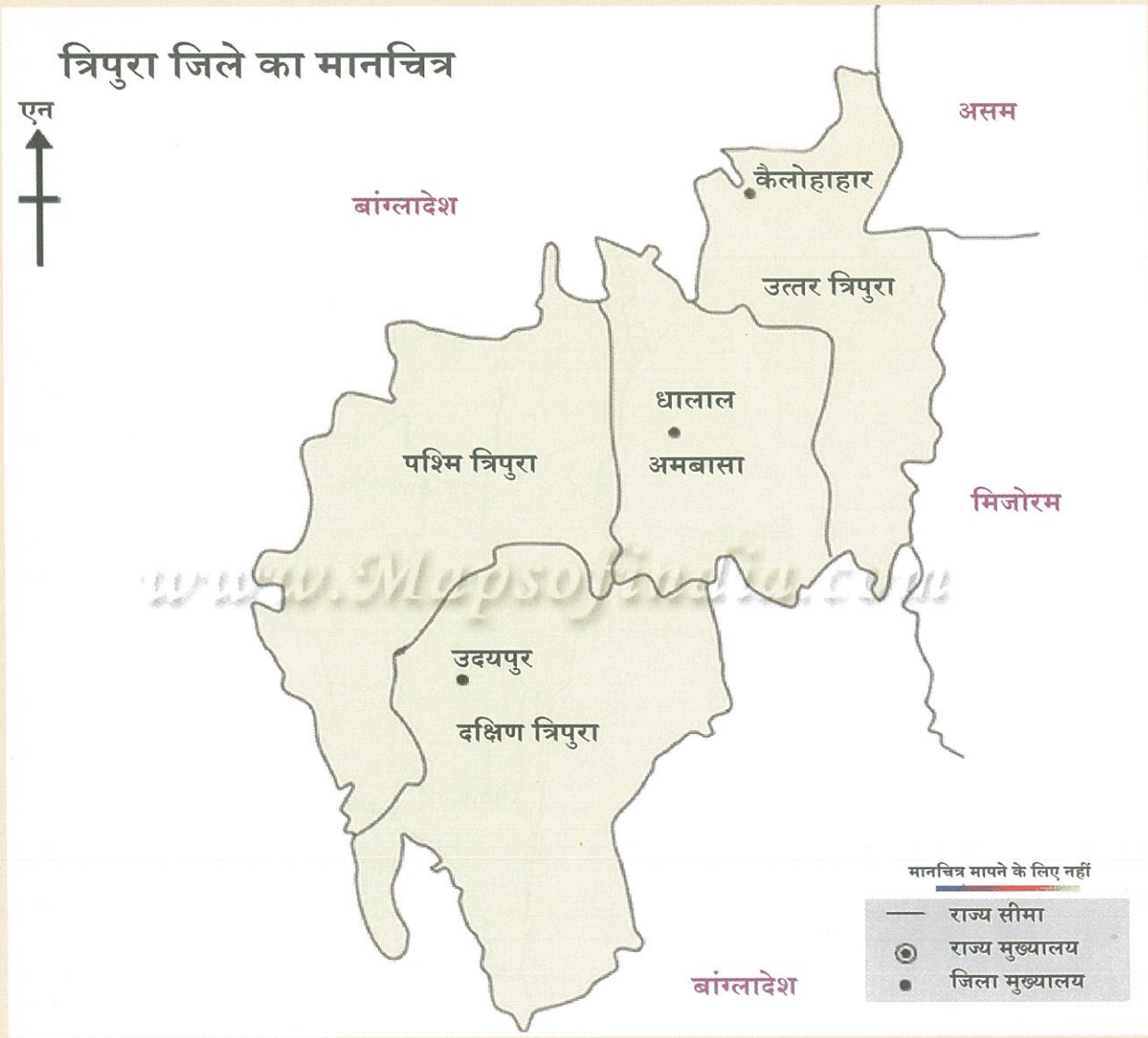

नमूना: कुल 883 परिवारों का सर्वेक्षण किया गया। नमूने में से लगभग 33.5% मिजोरम से, 30.9% मेघालय से और 35.6% त्रिपुरा से लिये गया है। चुने हुए नमूनों में से मिजोरम के 16 जिले, मेघालय से 13 जिले तथा त्रिपुरा के 7 जिले हैं। उत्तरदाताओं में बच्चे के माता-पिता या मुख्य देखभालकर्ता शामिल थे।

साधन: बच्चों के शिशु पालन-पोषण अभ्यासों के विभिन्न पहलुओं पर सूचना प्राप्त करने के लिए एक अर्ध-संरचित प्रश्नावली अन्वेषकों द्वारा विकसित की गई। प्रश्नावली में तीन भाग दिये गये, अर्थात्, जनसांख्यिकी विशेषताएँ, मातृ संबंधी इतिहास एवं बच्चे का विवरण।

जनसांख्यिकी विशेषताओं के भाग में निम्नलिखित सम्मिलित हैं-

- उत्तरदाता का विवरण
- घरेलू नमूना के विवरणात्मक पहचान
- जीवन की परिस्थितियों का विवरण
- बच्चे का विवरण
- परिवार की सूचना
- पर्यावरण ब्यौरे

मातृक इतिहास भाग में सम्मिलित विषय हैं :-

- गर्भधारण विवरण
- माँ का स्वास्थ्य
- गर्भधारण के दौरान देखभाल
- प्रसवोपरांत माँ की देखभाल
- परिवार नियोजन
- घरेलू उपाय
- गर्भवस्था के दौरान आहार

बच्चे से संबंधित विवरण के भाग में सम्मिलित विषय हैं :-

- नवजात शिशु की देखभाल
- बच्चे को स्नान कराने के अभ्यास
- बाहरी प्रयोग में लाई जाने वाली चीजें
- सौंदर्य प्रसाधन, यदि प्रयोग करते हों तो
- पहनावा
- नैपी का विवरण
- उपसाधन
- छेदन
- भोजन
- दूध पिलाना
- दूध छुडाई
- दूध और दूध के उत्पादन
- साधारण बिमारी के दौरान आहार
- भोजन समय-अभ्यास
- स्वास्थ्य
- शौचालय प्रशिक्षण
- सोने की आदतें
- स्थिति निर्धारण
- सांस्कृतिक प्रथाएँ
- बच्चे की देखभाल में पारिवारिक सदस्यों का समावेश
- खेल का विवरण
- बच्चे के खेल पारिवारिक सदस्यों का संयोग

पायलेट अध्ययन: साधन की उपयुक्तता, विश्वसनीयता तथा वैधता के परीक्षण के लिए 100 परिवारों पर पायलेट अध्ययन किया गया। अंतिम अध्ययन करने से पहले पायलेट अध्ययन के परिणामों के आधार पर संशोधन किये गये।

सांख्यिकी पद्धतियाँ: ऐसे प्राप्त आंकडों का सांख्यिकी रूप से विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणाम 'परिणाम' नामक शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत किये गये। सांख्यिकी विश्लेषण विवरणात्मक एवं सह सबंधी प्रक्रिया के प्रयोग से किये गये।

-❖-

साहित्य की समीक्षा

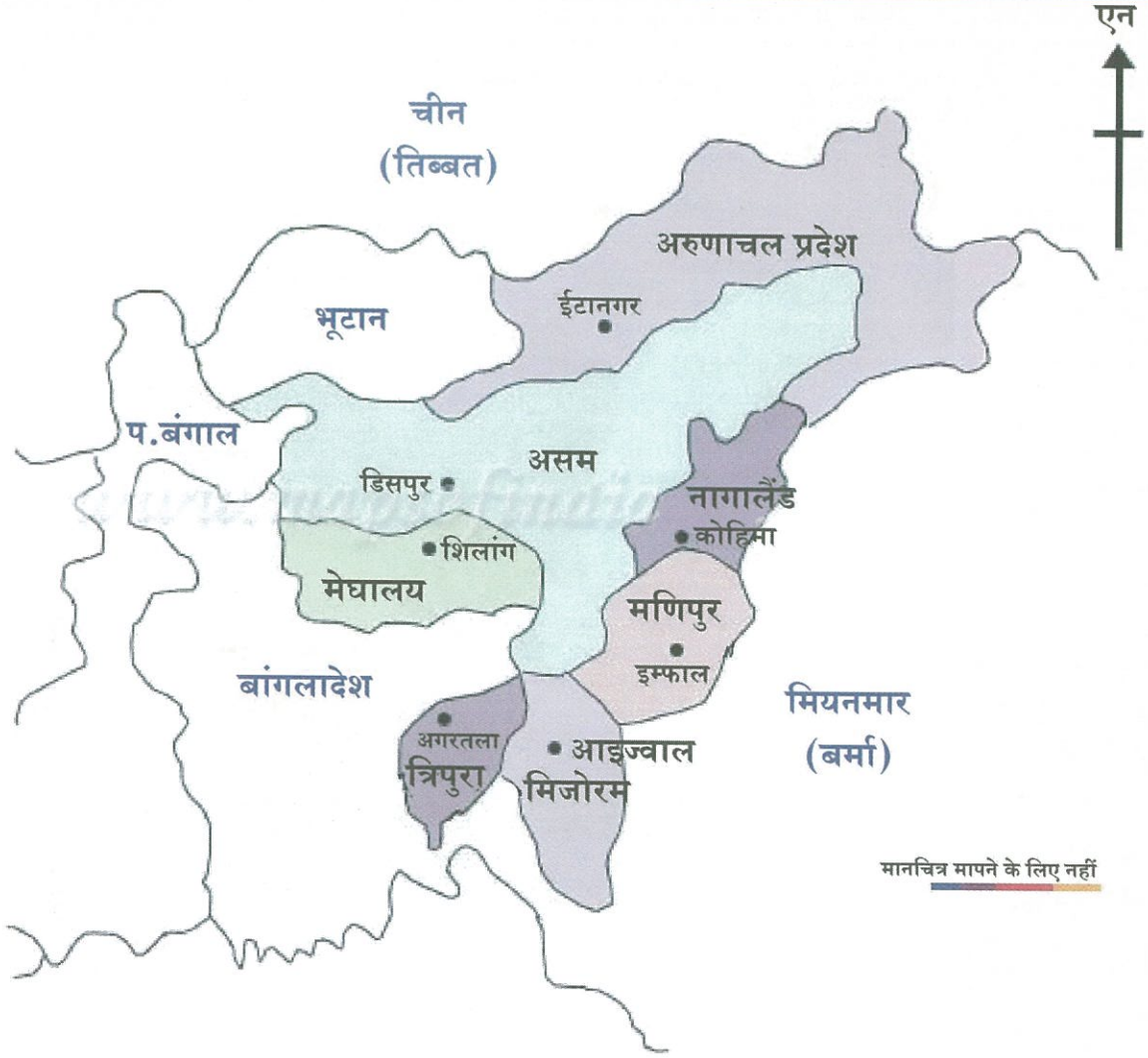

पूर्वोत्तर भारत में असम, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर एवं नागालैंड राज्य स्थित हैं।

पूर्वोत्तर भारत को तिब्बत से मैकमोहन लाइन विभाजित करती है। यह क्षेत्र भारत के अन्य भागों के साथ उत्तर बंगाल के एक संकरीले मार्ग से जुडा हुआ है जिसकी अनुमानित चौडाई पूर्व दिशा में 33 कि.मी. और पश्चिम दिशा में 21 कि.मी. है। यह संकरीला मार्ग 'सिलिगुड़ी नेक' या 'चिकन नेक' नाम से जाना जाता है।

उत्तर पूर्वी भारत अधिकतर पर्वतीय प्रदेश है; ब्रह्मपुत्र नदी के दोनो ओर समतल भूमी है एवं उसके अतराफ़ हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के एवं असंख्य वनस्पति एवं जीवजंतु पाये जाते हैं।

देश के कुल भाग में से 7.8% भाग में यह क्षेत्र बसा हुआ है। क्षेत्र के उत्तर प्रांत को हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ सुरक्षित रखती हैं।

बर्फीली रेखा के ऊपर यह क्षेत्र पर्वतों से बना हुआ है और समुद्र तल से कुछ ऊपर समतल भूमी है।

यह बच्चा अपनी माँ के गोद में आराम से सो रहा है

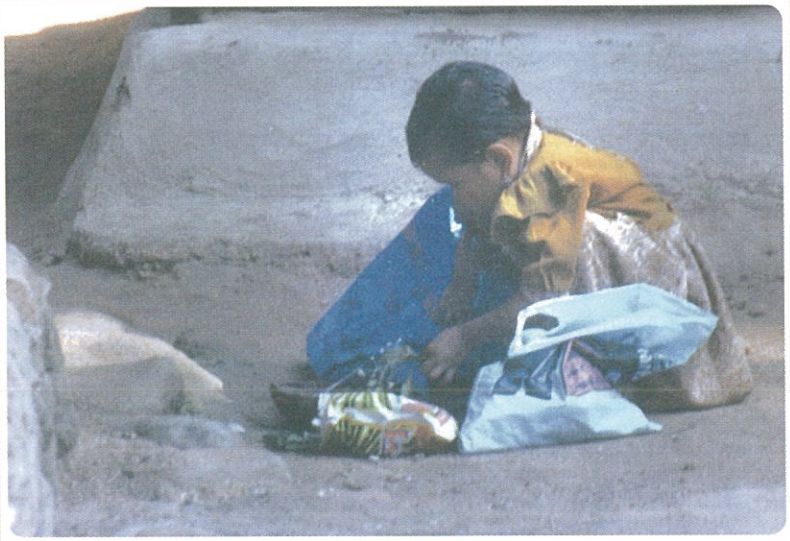

यह बच्चा अकेला खेल रहा है

यह क्षेत्र देश के लिए व्यूहात्मक महत्व रखता है क्योंकि भारत के अंतर्राष्ट्रीय सीमा में से लगभग 90% की सीमा इसी क्षेत्र की बनी हुई है।

स्थलाकृति

क्षेत्र के लगभग 70% पर्वतीय प्रदेश है तथा प्रत्येक राज्य की स्थलाकृति अलग है। अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड, मेघालय का अधिकतर भाग तथा त्रिपुरा का आधा हिस्सा, असम का 1/5 भाग तथा मणिपुर का 1/9 भाग पर्वतों एवं पहाडियों से घिरा हुआ है।

क्षेत्र के समतल भाग अलग अलग भूमी समूह के हैं - असम में ब्रह्मपुत्र घाटी एवं बरक घाटी तथा दक्षिण में त्रिपुरा की समतल भूमि। मणिपुरी में घाटी छोटी है जो कुल राज्य क्षेत्र की 10% है।

असम में उत्तर लखिमपुर से डुब्री जिले तक ब्रह्मपुत्र घाटी लगभग 730 कि.मी. तक फैली हुई है। बरक नदी से बनी हुई बरक घाटी तथा उसके उपनदी असम के कचर, करीमगंज एवं हाइलाकांडी जिलों को आवरित करता है। गंगा-ब्रह्मपुत्र की विस्तारित समतल भूमि में त्रिपुरा बसा है।

पहाडियों की स्थलाकृति सामान्यत: ऊबड-खाबड हैं और कई क्षेत्र अगम्य है।

वर्षा

इस क्षेत्र में साधारणतया वर्षा ऋतु मार्च में आरंभ होकर अक्तूबर महीने के बीच तक रहती है। प्रत्येक क्षेत्र में वार्षिक बारिश विशेषत: अलग होती है। खासी एवं जेयन्तिया पहाडों में वर्षा की तीव्रता चेरापुंजी और मॉसिनरम के आस पास लगभग 1080 से.मी.तक पहुँच जाती है (विश्वभर में सबसे अधिक वर्षा होती है)। असम के रेन शैडो क्षेत्र की नांगाँव जिले में विशेषत: कम होती है। वार्षिक बारिश में से दो-तिहाई बारिश जून से सितम्बर तक चार मानसून महीनों में होती है।

जनसंख्या

इस समय में, पूर्वोत्तर क्षेत्र की आबादी देश की कुल जनसंख्या के 3.75 प्रतिशत है।

आबादी की घनता (जनगणना आंकडें, 2001)

राज्य	आबादी की घनता (प्रति वर्ग किलोमीटर)
असम	340
त्रिपुरा	304
मणिपुर	107
मेघालय	103
नागालैंड	120
मिजोरम	42
अरुणाचल प्रदेश	13

निर्वाचन राज्यों में आबादी का असमान स्थानीय वितरण के लिए यह क्षेत्र जाना जाता है, इसका मुख्य कारण यह है कि, पहाडों एवं कठिन इलाकों में से समतल भूमि एवं घाटियाँ, आबादी की विलीनता के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं ।

असम तथा त्रिपुरा के अलावा, पूर्वोत्तर राज्यों में एक अनोखे सामाजिक व सांस्कृतिक प्रथाओं के जनजातियाँ अधिकतर बसी हुई हैं। कहा जाए तो, इस क्षेत्र की कुल आबादी में से 30% से अधिक जनजाती के लोग हैं। परन्तु, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम तथा नागालैंड में कुल आबादी में से जनजातियों की संख्या 60% से अधिक है। यही कारण है कि, इन राज्यों में एक आदिवासी की बहुलता है।

परिवार के प्रकार

सामान्यत: कई परिवारों में अपने सुविधानुसार परिवार के प्रकारों का वर्गीकरण किया जाता है। ऐसे में, कई विद्वानों ने परिवार के प्रकारों की विशेषता को भिन्न तरीके से वर्गीकृत किया है । कपाडिया (1969) ने दो व्यापक परिवार के प्रकारों की पहचान की है, अर्थात्, एकल (न्यूक्लियर)/ संयुक्त/ विस्तृत, जबकि रिचर्ड एट.अल. (1989) व कॉल्डवैल एट.आल. (1988) ने परिवारों को एकल (न्यूक्लियर), वंश(स्टेम), संयुक्त, संयुक्त-वंश (जॉइंट स्टेम) एवं अन्य के रूप में वर्गीकृत किया है।

एस.निरंजन, एस.सुरीन्दर एवं जी.रामाराव द्वारा किये गये अध्ययन 'फैमिली स्ट्रक्चर इन इंडिया - एविडेन्स फ्रम एन.एफ.एच.एस.' में पाया कि कई वर्षों से एकल एवं संयुक्त परिवारों में वृद्धि हुई है, हालाँकि, एकल परिवार ग्रामीण और शहरी, दोनो क्षेत्रों में, आगे हैं। दूसरी ओर, एकल सदस्य, टूटा परिवार, विछिन्न परिवार तथा पूरक परिवार में पतन पाया गया है। देश के अन्य राज्यों की तुलना में नागालैंड में न्यूक्लियर परिवार अधिक पाये गये हैं। पारिवारिक ढांचे की भिन्नता से यह पता चलता है कि, भारत के न्यूक्लियर परिवार की वृद्धि में पारिवारिक मुखिया की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। पारिवारिक संरचना में ये परिवर्तन पारिवारिक सदस्यों का रवैया और व्यवहार पर पड़ने वाले सही प्रतीत होने वाले परिणामों को सूक्ष्म स्तर पर परीक्षण करने की माँग करता है।

यद्यपि सामान्यत: यह महसूस किया गया कि, संयुक्त परिवार जिसके सदस्य आम पुरखे एवं आम संपत्ति से बंधे होते थे उनका शासन चलता था, किन्तु इस पर मतभेद है। गोरे (1968) कहते हैं कि, ' भाईचारे या सगोत्र परिवार कभी भी आम रूप का नहीं था'। गूडे (1968) दावा करते हैं कि, भारत में किसी भी समय में बृहत संयुक्त परिवार साधारण नहीं था इसका कारण शायद पहले बहुओं के बीच और बाद में भाइयों के बीच विखंडन। कर्नाटक राज्य के तीन अलग अलग जिलों के तीन गाँवों में किए गए अध्ययन में, दो तिहाई विलग परिवार थे और बाकी विभिन्न प्रकार के संयुक्त परिवार थे (राव, कुलकर्णी एवं रायप्पा, 1986)। यद्यपि यह तर्क किया जाता है कि, बरसों से संयुक्त परिवार धीरे धीरे एकल परिवार का मार्ग निकाल रहे हैं, कई अध्ययनों से यह पता चलता कि, एकल परिवार के सेट अप में रहते हुए भी कई अनावासीय परिवार के सदस्यों से क्रियात्मक संबंध बनाए रखते हैं (अग्रवाल, 1962; देसाई, 1964; कपडिया, 1969, गोरे, 1968)। वैसे भी, भारत में अभी भी अधिकतर विवाह माता पिता द्वारा तय किये जाते हैं, वैवाहिक जीवन पहले माता-पिता के परिवार में आरंभ होते हैं बाद में परिस्थिति के अनुसार माता-पिता या परिवार के किन्ही वृद्ध सदस्यों द्वारा उनके रहने के लिए एक रहने का स्थान दिया जाता है (रिचर्ड एट अल, 1985)। अत: यह संभव है कि, एकल परिवार के सदस्यों के द्वारा लिये गये निर्णय उनके माता पिता या सगे संबंधियों के मार्गदर्शन से लिये जाते हैं।

फिर भी, यह कुछ हद तक, परिवार संरचना के विभिन्न प्रकारों पर आधारित है। साधारणत: परिवार के प्रकारों का वर्गीकरण कई अध्ययनों में सुविधानुसार विलग या संयुक्त परिवार के रूप में किया जाता है। ऐसे में, परिवार सदस्यों के आधार पर परिवारों के प्रकार की महत्ता के बारे में एक अर्थपूर्ण निष्कर्ष लेना कठिन है।

परिवार का आकार

शहरीकरण और औद्योगीकरण में बढोत्तरी के कारण, भारत में परिवार की धारणा, जो कभी पारिवारिक सदस्यों में सामान्य संस्कृति निर्माण व निर्वाह करती थी, में परिवर्तन आ रहे हैं। फिर भी बीटेल्ले (1964) के अनुसार, सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के बावजूद, पारिवारिक जीवन और पारिवारिक संरचना भारतीय समाज के एक अंतर्भाग के रूप में रह गई हैं चूँकि, इसमें एकजुटता की भावना बनाए रखने वाली शक्ति है। रॉस (1961) ने पाया कि कई भारतीय अपने परिवार के प्रकारों से गुज़रे हैं जिसमें वे विभिन्न क्रमों में रहे हैं, जैसे बृहत संयुक्त परिवार, छोटा संयुक्त परिवार, आश्रय सहित विछिन्न परिवार। डी'सूजा (1971) का यह तर्क है कि, भारतीय परिवारों को तनाव और दबाव सहना पडा और सदियों से परिवर्तन के रोक करने पर भी धीरे धीरे परिवर्तन दिखाई देने लगा है। कोहेन (1981) के अनुसार ' दस हजार से अधिक वर्षों से परिवारों की मात्रा में कमी होने लगी है, अभी तक भी, और विकसित हो रही तकनीकी के कारण जहाँ खाना पाने, बच्चों के पालन पोषण एवं बिमारों की देखभाल में सहयोग करने वाले लोगों की जरूरत कम महसूस होने लगी'।

नवजात देखभाल

प्रसव के समय में जो देखभाल की जाती है वह माँ और शिशु के स्वास्थ्य और जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। नवजात की मृत्यु का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपर्याप्त जन्म पद्धतियों को जिम्मेदार ठहराया गया है।

शिशु देखभाल

विलग परिवारों में जहाँ पत्नी भी परिवार के खर्चे में योगदान देती है, वहीं अनिवार्य रूप से, पिता भी बच्चे के पालन-पोषण की जिम्मेदारी उठाते हैं। यह जीवन का एक अभिन्न भाग है जो माता-पिता व बच्चे के बंधन को मज़बूत करता है। बच्चा अक्सर अपनी माँ से क्लेश समय पर माँग करते रहता है जिससे वह थक जाती है। ऐसे समयों पर परिवार के अन्य सदस्य माँ का बोझ अपने ऊपर लेकर उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं। स्तनपान की प्रथा भारत में साधारण है। सभी समुदायों में स्तनपान की प्रथा को सुरक्षित करना, प्रोन्नत करना एवं समर्थन करना सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

सभी साधारण शिशुओं के स्वास्थ्य वृद्धि व विकास के लिए स्तनपान ही सही आहार है और यही एक अच्छा मार्ग है। इससे यह पता चलता है कि, दूध पिलाने वाली माँ के लिए अच्छा पोषण महत्वपूर्ण है। शिशु के लिए प्रथमस्तन्य या पहले पिलाया जाने वाला दूध विशेषत: मोल रखता है क्योंकि, इसमें बहुत सारे प्रोटीन एवं वसा घुलादेने वाले विटमिन एवं विरोधी संक्रामक गुण हैं। यह बच्चे का प्रथम प्रतिरक्षीकरण है। फिर भी, कई ग्रामीण लोकजाति इस कीमती चीज़ को त्याग देते हैं। आदर्शरूप से, शिशु के जीवन के प्रथम 4-6 महीने तक केवल स्तनपान कराया जाना चाहिए और घर पर बनाया हुआ मुलायाम आहार शिशु के आहार में जोड़ना चाहिए। बढ़ते हुए बच्चे के लिए माँ का दूध विशेष रूप से बनाया गया है। माँ का दूध की बनावट में दिनों दिन और यहाँ तक कि, दूध पिलाने में हर बार परिवर्तन होता रहता है जिसको अभी समझना है।

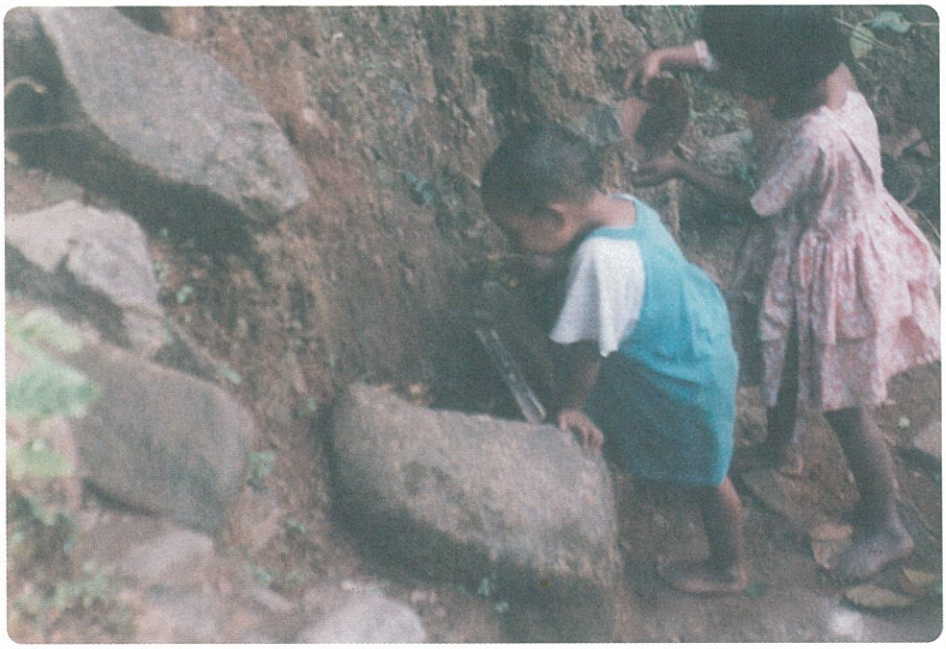

यह बच्चा घर के बाहर अपनी बहन के साथ खेल रहा है

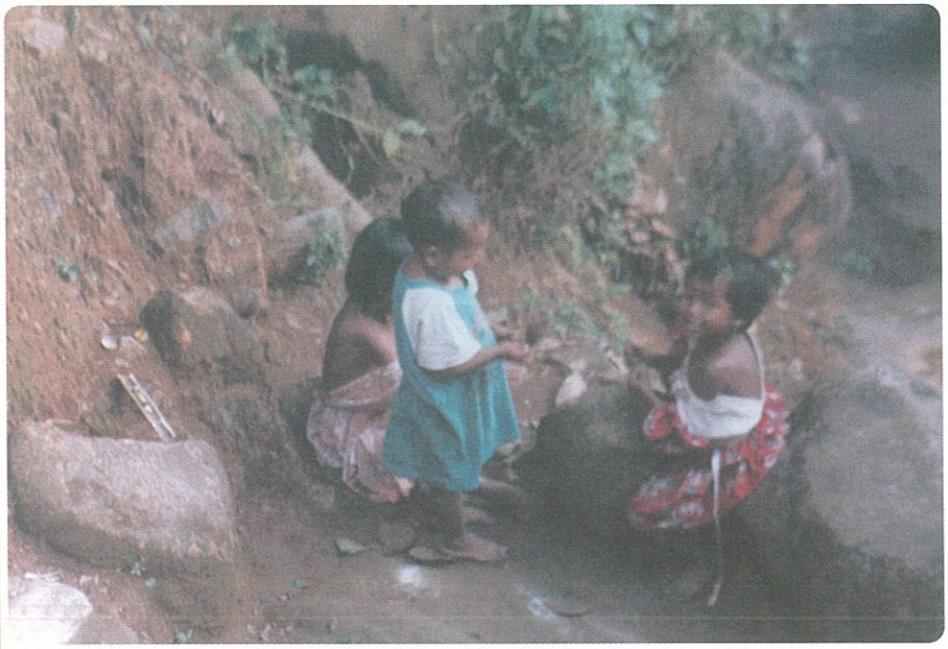

एक साथ खेल रहे बच्चों का समूह

बच्चे में अपने प्रतिरक्षा व्यवस्था प्रारंभ होने तक नवजात शिशु को निरंतर प्रतिरक्षा संरक्षण प्रदान करने के लिए प्रकृति स्तन दुग्ध तैयार करती है और यह शिशु जन्म के लगभग छ: महीने तक यह प्रतिरक्षा व्यवस्था आरंभ नहीं होती है। जब बच्चे की आहार नली इस लगातार सुरक्षा में भीगती जाती है और स्तनपान एवं दूध पीने से मिल रहा आराम बच्चे को शांत रखता है, तब माँ को भी लाभ पहुँचता है। माँ के शरीर में तरह तरह के हार्मोन उत्पन्न होते हैं जो उन्हें शांत रखने और बच्चे पर ध्यान देने के लिए बनाए गये हैं।

बाल समारोह

विश्व के कुछ भागों में, बच्चे के जन्म में सम्मिलित प्रथाएँ, प्रथम दृष्टि में, कम व्यावहारिक होते हैं। गुयाना में वायापी पिता अपने बच्चे के जन्म के तीन दिन तक बच्चे के साथ झूले में आराम करते हैं, इस विश्वास के साथ कि, वे अपने शिशु और स्वयं को दुष्टात्मा के ध्यान से हटा रहे हैं। भारत में अभिभावक अपने नवजात के माथे को खूब धुँधुआते कोयले का धुँआ देते हैं, इस विश्वास के साथ कि, काला रंग बुरी नज़र को टालता हैं और हानिकारक आत्माएँ डर जाती हैं। कई समुदायों में, इस दुनिया से बचने के लिए बच्चे को ताबीज, ब्रेसलेट या कोई अन्य धागा बाँध देते हैं।

चाहे औद्योगिकीय नगर या केनिया के समतल या फ्रेंच गुयाना के जंगल हों, अभिभावक अपने बच्चे को सुरक्षित रखने तथा आश्रित रखने की कोशिश करते हैं, उनके दैनिक-आहार का प्रबंध कराते हैं, उन्हें साफ सुथरा एवं स्वस्थ्य रखते हैं तथा उनके विकास और वृद्धि में साथ देकर एक जैसी जिम्मेदारी निभाते हैं। इन चुनौतियों के उपाय उतने ही अधिक है जितने संस्कृतियाँ उत्पन्न करती हैं। जबकि, ये बच्चे के सांस्कृतिक पहचान की नींव डालते हैं, जो बच्चे का मौलिक अधिकार है, ये किसी एक समुदाय के मूल्यों और विश्वासों को प्रतिबिंबित करते हैं। यह बाल्यावस्था, किशोरावस्था और बच्चे के प्रौढ़ होने के बाद अपने बच्चे की परवरिश तक प्रभावित करता है।

नहलाना

केनिया, न्यू केलिडोनिया तथा सुमात्रा में एक पारम्परिक प्रथा है कि, माँ अपने मुँह में पानी भरकर अपने बच्चों के शरीर पर फूँक कर उनका शरीर साफ करती है। मसई माँ पानी छिडकती है और सुमात्रा में बटक माँ एवं गुयाना में वायापी माँ मुँह से पानी फूँकती है। जबकि, नहलाने की तकनीक भिन्न है, सभी बच्चों को गर्म पानी से नहलाया जाता है। कोटे डी आइवाइर के बौले में शिशुओं को दिन में दो बार नहलाया जाता है और गर्म पानी, साबुन और सब्जियों के स्पाँन्ज से मल मल कर बच्चों की मालिश की जाती है। दो बार बच्चों को नहलाने व सुखाने के बाद उसका रोना या चीखना बंद करवाने के लिए माँ बच्चे को स्तनपान कराती है। तब बच्चे के कुल्हे और कंधे रगडकर, उसके सर को इधर उधर घुमाकर, दबाकर मसाज की जाती है। बच्चे को क्रीम लगाते हैं, बहुत सारा पाउडर लगाते हैं, इत्र और कोलीन, मुलायम सफेद मिट्टी से उसके शरीर को लीप देते हैं। ऐसा करते समय बच्चा आँखे बडी करके शांत या चुप हो जाता है। इस विधा के पश्चात्, बच्चे में सावधानी, स्फूर्ति आ जाती है और वह जागते रहता है पर शांत रहता है और बच्चे को कपड़े पहनाकर परिवार के किसी अन्य सदस्य को संभालने के लिए उसे दे दिया जाता है।

गोद में लेना

कई संस्कृतियों में, बच्चे को बाहर ले जाने के लिए बच्चे को गोद में बिठाकर ले चलना ही माता पिता या देखभालकर्ता के लिए एक स्वाभाविक पद्धति है। बच्चे को सुरक्षित रखना, उसे मांसपेशियों को मजबूत करने तथा उत्तेजना प्रदान करने का यह भी यह एक तरीका है। गोफन, कमर बंद, तुंबा या झूले में ले जाने से, बच्चा माँ के शरीर से - माँ के बाहों में या उसकी

पीठ से, हमेशा चिपका रहता है। माँ अपनी दिनचर्या में जब व्यस्त रहती है तब बच्चा उनके विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेता है तथा निरंतर स्पर्श और दृश्य उत्तेजना का अनुभव करता रहता है। उसकी माँ जहाँ भी जाती है, वह भी उसके साथ हिलता डुलता रहता है, पिता जब चाकू की धार तेज करने के लिए धरती की ओर झुकता है या नृत्य करते समय टकराता है, उनके गतिविधियों के अनुकूल बच्चे की माँसपेशियों की सदैव कसरत होती रहती है । वेनेजुएला में ईक्वाना भारतीय बच्चे के जन्म से रेंगने तक उन्हें गोद में संभाले रखते हैं। जवनीस बच्चे अधिकतर अपना समय अपनी माँ के पास छाती से चिपके, शॉल में ृपेटे रहता है, जिससे जब चाहे तब देखभाल की जा सके। बच्चा जब तक कि वह सात वर्ष का नहीं हो जाता तब तक बच्चे को शारीरिक कष्ट से बचाने के लिए माँ बच्चे का पैर धरती पर रखने नहीं देती।

प्रचलित ज्ञान यह बताता है कि, प्रारंभिक अवस्था में माँ के साथ बच्चा बंधे रहना, प्रसूति के दौरान या बच्चे को निरंतर गोद में उठाकर ले जाने या चाहने पर बच्चे को स्तन पान कराने से, बच्चे के सुरक्षित रखने की भावना, अन्यों पर विश्वास तथा स्व मूल्य की भावना के विकास को बढ़ाता है। पश्चिमी देशों में बच्चों को घुमक्कड़ों (स्ट्रॉलर) में से निकालकर गोफन में बच्चों को ले जाने वाले अभिभावकों की संख्या बढ़ती जा रही है। बच्चे के संवेदन को उत्तेजित करने वाले तथा उसके विकास

बच्चे को दूध पिलाने की स्थिति का एक चित्र

को बढ़ाने वाली ये परम्पराएँ और यहाँ तक कि, बच्चे की सुरक्षा के लिए पारम्परिक तौर पर मनाये जाने वाले चमत्कारिक रिवाज़, आधुनिक प्रथाओं से भिन्न होते हैं, चूँकि, ऐसा लगता है कि, छोटे बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने में ये किस तरह उपयुक्त होंगे, यह नजदीक से जांच करना जरूरी है।

बच्चों की देखरेख में अभिभावकीय सम्मेलन

भारतीय बच्चा माँ एवं ममतामई व्यक्तियों के साथ गहरे भावनात्मक संबंध में पलता है। बच्चों को जब चाहे तब उसे स्तनपान कराया जाता है, कई बार वर्षों तक, माता-पिता या नाना-नानी या दादा-दादी के साथ सोता है, चाहने वाले /परिजनों के द्वारा नहलाया जाता है और बहुत कम समय में वो अकेला होता है। तेल से मालिश की जाती है, प्यार से गोद में लेते हैं, शौचालय प्रशिक्षण दिया जाता है और व्यवहार से संतुष्ट किया जाता है, छोटे बच्चे अच्छेपन का आंतरिक क्रोड विकसित करते हैं और अन्य लोगों से सुरक्षा की गहरी उम्मीद रखते हैं। ऐसी आसक्ति एवं नज़दीकी संबंध, अन्यों से एक प्रतीकात्मक संबंध को उत्पन्न करता है और रिश्तेदारों से गहरा संबंध स्थापित करने के साथ विकास पर प्रभाव पडता है, जो कि, भारतीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण है। नन्हा बच्चा बहुत जल्द ही परिवार का अनुक्रम सीख लेता है, क्यों कि, वह बडे व छोटे, स्त्री पुरुष के बीच के प्रेम एवं आदरपूर्ण संबंधों को देखता रहता है। अक्सर छोटे बच्चों को सबसे बडे सहोदर द्वारा गोद में लिया जाता है और सहोदरों के बीच नजदीकी संबंध विकसित होते हैं। पश्चिमी देशों की तरह सहोदरों के बीच कलह सामान्य नहीं है; बल्कि, पूरा परिवार एकजुट होकर काम करता है चूँकि, उसे बाह्य दुनिया की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

लिंग अनुपात

एन.एफ.एच.एस.-1 तथा एन.एफ.एच.एस.-2 के दौरान इकट्ठा किया गया जन्म इतिहास यह दर्शाता है कि कुछ जनसंख्या समूह में पुरुषों का जन्मानुपात असाधारण रूप से ज्यादा है और यह दर्शाता है कि, कन्या भ्रूण निरस्तीकरण होता है। उन परिवारों में जहाँ पहले ही बेटियाँ हैं और बेटे नहीं हैं तथा स्त्रियों में शैक्षणिक एवं मीडिया का प्रदर्शन स्तर अधिक है, वहाँ कुछ पश्चिमी एवं उत्तरी राज्यों में पुरुषों की जन्म संख्या का विशेष रूप से आधिपत्य है। स्त्री का आदर्श लिंग अनुपात (बेटों की अपेक्षा बेटियों की आदर्श संख्या) दर्शाता है कि, अधिकतर सामाजिक आर्थिक दृष्टि में सभी राज्यों में बेटों की प्राथमिकता का पतन हो रहा है तथापि जीव विज्ञान के नियमों से आदर्श लिंग अनुपात कहीं ज्यादा है, इसका मतलब यह है कि, लिंग-चयन गर्भपात स्तर में वृद्धि की अभी भी संभावना है। (स्रोत: नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे, 1992-93)।

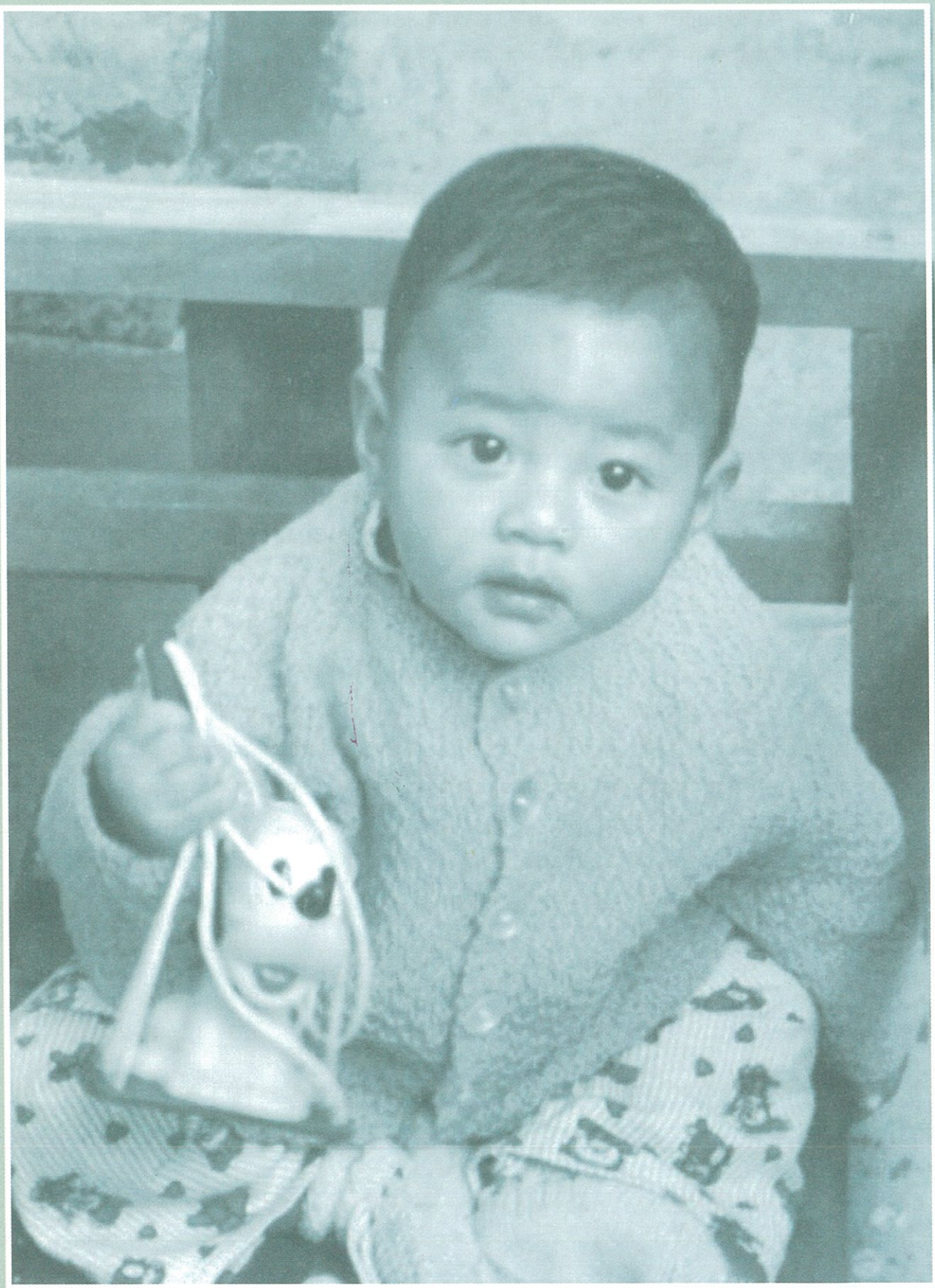

परिणाम

भाग - क : जनसांख्यिकी विशेषताएँ

I. उत्तरदाताओं की सूचना

तालिका 1: उत्तरदाताओं का वितरण राज्य वार

क्र.	राज्य	(एन=883)	प्रतिशत
1.	मिजोरम	296	33.5
2.	मेघालय	273	30.9
3.	त्रिपुरा	314	35.6

नमूने की मात्रा और मापदंड के अनुसार 0-3 वर्ष की आयु वाले बच्चों के माता-पिता या देखभालकर्ताओं को अध्ययन के लिए चुना गया। नमूने में क्रमश: मिजोरम, मेघालय और त्रिपुरा से 33.5%, 30.9% और 35.6% थे।

तालिका 2: बच्चे से संबंध

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ	91.9	89.3	87	89.4
2.	पिता	3.0	5.1	7.6	5.3
3.	सहोदर	-	2.2	0.3	0.8
4.	दादा-दादी, नाना-नानी	3.7	2.6	4.1	3.5
5.	अन्य कोई	1.4	0.7	1.0	1.0

उत्तरदाताओं में अधिकतर माताएँ थी। यह सारे तीन राज्यों में एकरूप दिखाई दिया। मिजोरम (91.9%), मेघालय (89.3%), त्रिपुरा (86.9%) एवं संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य (89.3%)।

तालिका 3: उत्तरदाताओं की आयु

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	30 से कम आयु	67.2	59.7	78.3	8.9
2.	30 से अधिक आयु	32.8	40.3	21.7	31.1

अधिकतर उत्तरदाताओं की आयु 30 वर्ष से कम थी। तीन राज्यों में से, 30 वर्ष से कम आयु वाले उत्तरदाताओं की संख्या त्रिपुरा (78.3%) में अधिक थी।

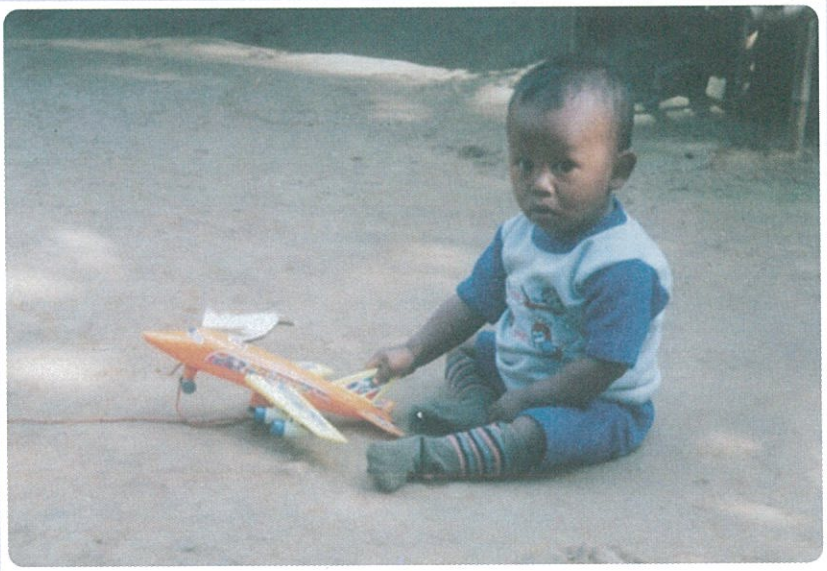

बच्चे के खिलौनों का एक चित्र

एक वर्षीय बच्चे के कमर में एक छोटी सी घंटी और एक तरह के औषधीय पौधे को बांधे हुए बच्चे का चित्र (असाधारण रोने को रोकने के लिए कमर में औषधीय पौधे बांधे जाते हैं)

तालिका 4: उत्तरदाताओं का लिंग

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पुरुष	5.7	10.3	11.1	9.1
2.	स्त्री	94.3	89.7	88.9	90.9

चूँकि, उत्तरदाताओं में अधिकतर माताएँ थीं, अत: सभी तीन राज्यों में उत्तरदाताओं में महिलाओं की जनसंख्या अधिक था।

II. बच्चों की सूचना

तालिका 5: बच्चों का आयुवार वितरण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	1 वर्ष से कम	26.7	35.2	27.4	29.6
2.	1-2 वर्ष	33.8	29.6	30.9	31.4
3.	2-3 वर्ष	39.5	35.2	41.7	39.0

लिये गये नमूने में, 0-1 वर्ष की आयु वाले बच्चों में से अधिकतम मेघालय से थे। 1-2 वर्ष की आयु श्रेणी में अधिकतम बच्चे मिजोरम के थे (33.8%) तथा 2-3 वर्ष की आयु वाले अधिकतम बच्चे त्रिपुरा के थे (41.7%)।

तालिका 6: बच्चों का लिंग-वार वितरण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पुरुष	57.1	50	52.2	53.2
2.	महिलाएँ	42.9	50	47.8	46.8

अध्ययन में लडका और लडकियों की संख्या लगभग समान थी। परन्तु, लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या अधिक था।

तालिका 7: बच्चों की क्रमसंख्या स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	प्रथम बच्चा	40.2	19.8	54.5	39
2.	दूसरा बच्चा	29.4	12.8	31.2	24.29
3.	तीसरा बच्चा	20.3	15.4	9.9	15.1
4.	चौथा बच्चा	8.4	14.6	2.2	8.2
5.	पाँचवा बच्चा	1.7	37.4	2.2	12.9

यह पाया गया कि, अधिकतर प्रथम बच्चे मिजोरम (40.2%) और त्रिपुरा (54.5%) के थे, जबकि, मेघालय में पाँचवे बच्चे अधिक थे (37.4%)।

यह बच्चे के (11 महीने का) गले में तथा कमर में अस्थमा को रोकने के लिए एक काला धागा पहनाया गया है। इस बच्चे का अभी तक कोई इलाज नहीं किया गया है।

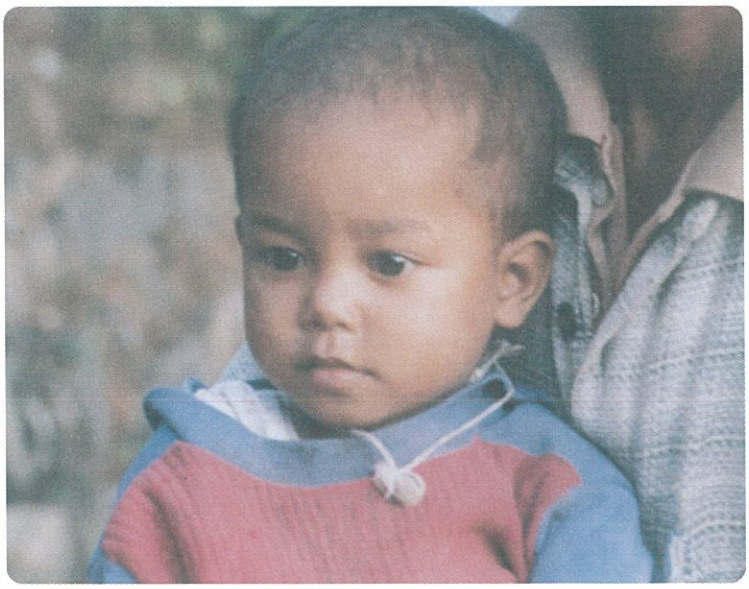

इस बच्चे के गले में तावीज़ पहनाया गया है।

III. परिवार के ब्यौरे

तालिका 8: रचना के आधार पर परिवार के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	एकल	7.9	72.5	63.7	47.9
2.	विस्तारित	67.1	8.1	4.2	26.3
3.	संयुक्त	25.0	19.4	32.1	25.8

संरचना के आधार पर परिवार का प्रकार विलग से संयुक्त तक भिन्न रहा। मिजोरम में अधिकतर विस्तरित परिवार थे। मेघालय में विलग परिवार क्रमश: मेघालय तथा त्रिपुरा (72.5%) तथा (63.7%) थे। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में देखा जाएतो, विलग परिवार अधिक थे (47.9%)।

तालिका 9: वंशज आधार पर परिवार के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मातृसत्तात्मक	1.4	98.9	2.3	32.3
2.	पितृसत्तात्मक	98.6	1.1	97.7	67.7

वंशज के आधार पर परिवार के प्रकार में यह देखा गया कि, मिजोरम एवं त्रिपुरा में कई परिवार पितृसत्तात्मक थे जबकि, मेघालय में मातृसत्तात्मक परिवारों की संख्या अधिक रही। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र के संदर्भ में यह स्पष्ट है कि, कई परिवार पितृसत्तात्मक पद्धति पर आधारित हैं।

तालिका 10: परिवार का परिमाण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	5 सदस्य से कम	6.9	25.3	53.2	32.4
2.	5-7 सदस्य	55.7	39.9	37.3	44.3
3.	8 से अधिक सदस्य	27.4	34.8	9.5	23.3

औसतन 5-7 सदस्यों का परिवार परिमाण मिजोरम (55.7%) तथा मेघालय (39.9%) था। त्रिपुरा में औसतन परिवार परिमाण 5 से कम (53.2%)। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र (44.3%) में यह पाया गया कि, नमूने परिवार सदस्य में अधिकतम 5-7 सदस्य थे।

तालिका 11: धर्म

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हिन्दुत्व	1.0	0.3	73.5	26.4
2.	इस्लाम	0	0	19.5	6.9
3.	ईसाई	98.3	89	6.4	60.6
4.	अन्य धर्म	0.7	10.7	0.6	3.7

धर्म के संबंध में, यह पाया गया कि, मिजोरम और मेघालय में हिंदुत्व, ईसाई एवं अन्य धर्मों का अनुसरण करने वालों में समता है। दिलचस्प बात यहा है कि, चयन किये गये परिवारों में न तो मिजोरम और न ही मेघालय में ईसाई धर्म का पलन करते हैं। मिजोरम एवं मेघालय की जन संख्या अधिकतर (83%) एवं (89%) ईसाई धर्म का पालन करती हैं। त्रिपुरा में हिन्दु धर्म के लोग अधिक हैं, तब भी तीनों धर्म के लोग दिखाई देते हैं। जो अन्य धर्मों का पालन करते हैं वे हैं, बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म।

तालिका 12: सामाजिक समूह

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अनुसूचित जाति	1.4	0.4	26.9	10.1
2.	अनुसूचित जनजाति	98.3	98.5	22.1	71.4
3.	अन्य पिछडा वर्ग	0.3	0	26.9	9.6
4.	अन्य कोई	0	1.1	24.1	8.9

चूँकि, पूर्वोत्तर क्षेत्र आदिवासी जनसंख्या के लिए जाना जाता है, इन राज्यों की अत्यधिक जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की हैं, मिजोरम (98.3%) एवं मेघालय (98.5%)। त्रिपुरा में अनुसूचित जाति एवं अन्य पिछडे वर्ग की जनसंख्या समान था। पर पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वाले लोग अधिक थे।

तालिका 13: माताओं के शिक्षा की स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	निरक्षर	2.7	31.5	24.9	19.5
2.	1-5 कक्षा	11.5	28.6	27.5	22.5
3.	6-9 कक्षा	29.2	25.3	30.7	28.6
4.	10 वी कक्षा	39.6	11.0	11.5	20.7
5.	इंटरमीडियेट	7.8	2.9	3.5	4.7
6.	स्नातक और स्नातकोत्तर	9.2	0.7	1.9	4.0

माँ की शैक्षणिक स्थिति यह बताती है कि, मिजोरम में अधिकतर माताओं ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की हैं। मेघालय में अधिकतर माताएँ (31.5%) निरक्षर हैं। त्रिपुरा में 30.7% माताओं ने 1 से 9 वें कक्षा तक पढ़ाई की हैं। इससे यह भी पता चलता है कि, मिजोरम की महिलाएँ अन्य दोनों राज्यों की तुलना में अधिक शिक्षित हैं। पूरे क्षेत्र की माताओं ने 6-9 कक्षा तक पढ़ाई की है।

यह बच्चा अपने बडे भाई के साथ खेल रहा है

यह बच्चा (1 वर्ष 7 महीने) फुटबाल जैसे गुब्बारे को लात मार रहा है।

बच्चा अपने खिलौने से खेल रहा है

तालिका 14: पिताओं की शैक्षणिक स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	निरक्षर	0	0	0.6	0.3
2.	1-5 कक्षा	1.0	37.5	20.8	19.2
3.	6-9 कक्षा	8.2	25.4	20.2	17.8
4.	10 वी कक्षा	20.4	25.7	30.8	35.3
5.	इंटरमीडियेट	58.5	7.0	21.8	20.0
6.	स्नातक और स्नातकोत्तर	11.9	4.4	5.8	7.4

दिलचस्प की बात यह है कि, मिजोरम तथा मेघालय में ऐसा कोई पिता नहीं है जो निरक्षर हैं। मिजोरम में कई पिताओं ने (58.5%) इंटरमीडियेट तक पढ़ाई की है। इसके बाद, अधिकतर पिताओं ने, जो 10वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की है जिनकी संख्या (20.4%) है।

मेघालय में 27.5% पिताओं ने 1-5 कक्षा तक पढ़ाई की हैं जबकि, त्रिपुरा में अधिकांश पिताओं ने मैट्रिक्युलेशन तक पढ़ाई की (30.8%)। मेघालय एवं त्रिपुरा की तुलना में यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकतर पिता स्नातक हैं।

पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में यह पाया गया कि, अधिकतर पिताओं ने 10वी कक्षा तक पढ़ाई की है।

तालिका 15: माताओं की व्यावसायिक स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	गृहिणी	85.5	58.5	93.9	80.3
2.	नौकरी पेशा	3.0	1.9	1.3	2.1
3.	व्यापार	3.7	5.3	0.3	3.0
4.	श्रमिक	1.4	9.8	3.2	4.6
5.	कृषि	6.1	24.5	1.0	9.8
6.	अन्य	0.3	0	0.3	0.2

माताओं की व्यावसायिक स्थिति के संदर्भ में, यह पाया गया कि, इन सभी तीन राज्यों में अधिकतर महिलाएँ गृहिणी हैं। यह परिणाम पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में दिखाई दिया।

तालिका 16: पिताओं की व्यावसायिक स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बेरोजगार	13.9	0.4	2.2	5.6
2.	नौकरी पेशा	39.5	10.9	18.5	23.3
3.	व्यापार	7.8	8.3	25.6	14.3
4.	श्रमिक	10.5	34.6	31.6	25.4
5.	कृषि	23.8	41..0	20.4	27.8
6.	अन्य	4.4	4.9	1.6	3.6

उपरोक्त आंकडें से यह पता चलता है कि ,मिजोरम में नौकरी करने वाले पिताओं की संख्या (39.5%) अधिक है। मेघालय में 41% पिता कृषक हैं जबकि, त्रिपुरा में 31.6% पिता कार्मिक थे। पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में हम यह देख सकते हैं श्रमिक वर्ग में अधिकतर कृषक हैं।

तालिका 17: परिवार की आय

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	<1000	7.5	26.7	15.6	16.3
2.	1000-3000	18.1	62.2	53.2	43.9
3.	3000-5000	26.7	7.3	21.8	19
4.	>5000	47.5	4	9.1	20.7

परिवार के आय के बारे में हम यह देख सकते हैं कि, मेघालय एवं त्रिपुरा में आय पैटर्न समरूप हैं; पर मिजोरम में अलग है। मिजोरम में 47.6% परिवारों की मासिक आय 5000 रूपये या उससे अधिक थी। मेघालय में 62.3% तथा त्रिपुरा में 53.2%, अधिकतर जनसंख्या की मासिक आय 1000-3000 रुपये थी। इन परिणामों से यह पता चलता है कि, मेघालय तथा त्रिपुरा की तुलना में मिजोरम के लोगों की आर्थिक स्थिति बेहतर है।

तालिका 18: सगोत्र विवाह

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	3.1	5.6	10.0	6.3
2.	नहीं	96.9	94.4	90.0	93.7

यह पाया गया कि, सभी तीन राज्यों में और पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में सगोत्र विवाह करने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है।

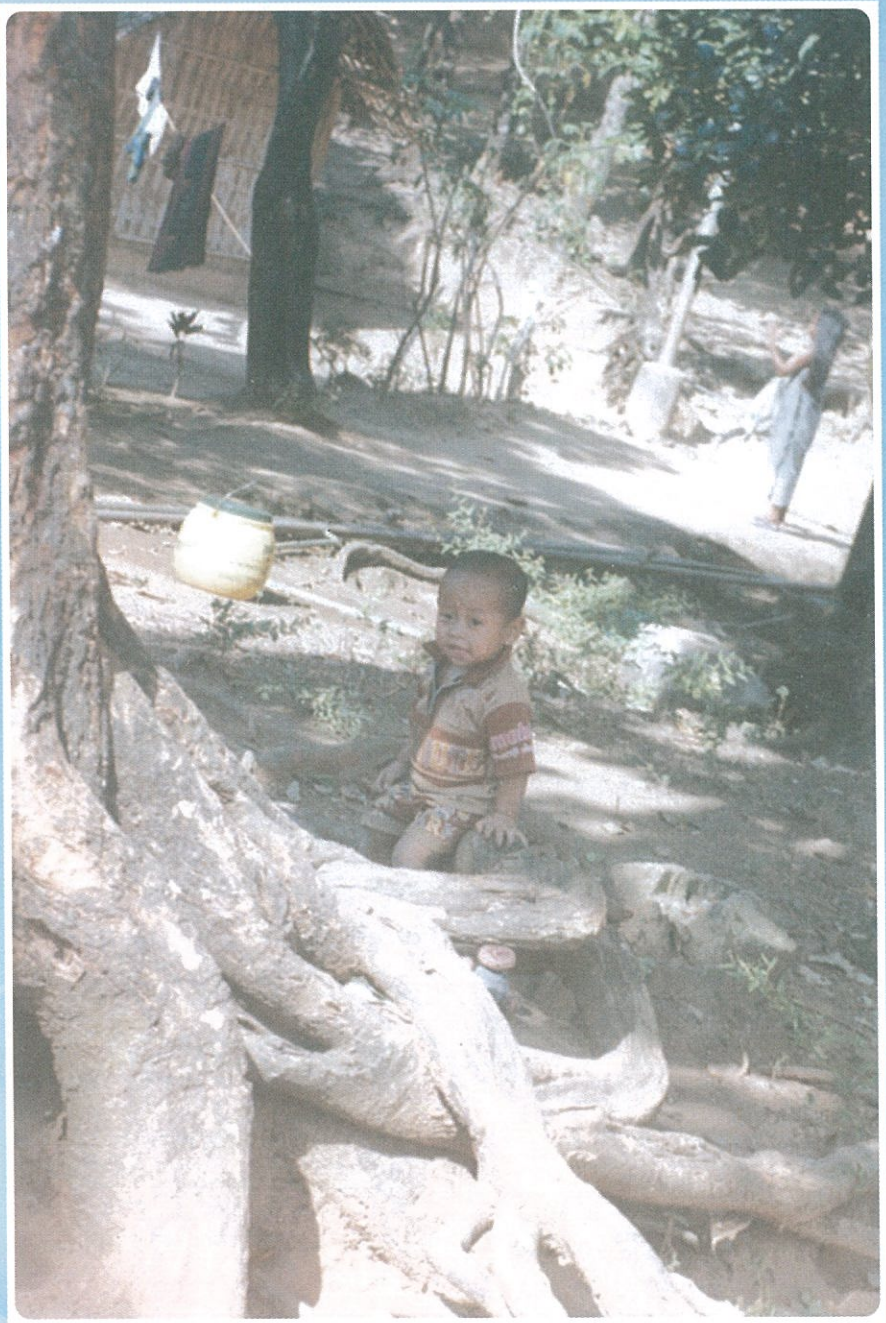

बच्चा अकेला पेड़ के नीचे खेल रहा है

IV. जीवन की परिस्थितियों के ब्यौरे

तालिका 19 : आवास के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अपना घर	73.8	75.5	72.9	73.8
2.	किराये घर	26.7	24.5	27.1	26.2

सभी तीन राज्यों में अधिकतर परिवार अपने घर में रह रहे हैं और पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र की स्थिति एक समान है।

तालिका 20: घरों के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कच्चा	33.8	54.9	72.1	54.1
2.	आधा पक्का	52.4	43.3	21.2	38.4
3.	पक्का	13.8	1.8	6.7	7.5

मिजोरम में अधिकांश घर (52.4%) और मेघालय में (43.2%) से अर्ध पक्के हैं। त्रिपुरा में 72.1% घर कच्चे हैं। और संपूर्ण पूर्वोत्तर में अधिकांश अर्ध पक्के हैं।

एक 2 1/2 वर्षीय बच्चा टिन को धागा लपेट कर खेल रहा है (पतंग उडाने के लिए)

तालिका 21: कमरों की संख्या

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	एक कमरा	2.4	8.8	31.8	14.8
2.	दो कमरे	22.3	48.7	42.4	37.6
3.	तीन कमरे	29.1	31.1	13.4	24.1
4.	4 से अधिक	46.3	11.4	12.4	23.4

चार कमरों और अधिक कमरों वाले घर में रहने वाले परिवारों की संख्या मिजोरम में अधिक है। मेघालय (48.7%) तथा त्रिपुरा (42.4%) के लोग 2 कमरे वाले घर में रह हैं।

तालिका 22: हवादार और रोशनी

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अच्छा	35.8	3.3	27.4	22.8
2.	ठीक	55.7	53.5	35.7	47.9
3.	सही नहीं	8.4	43.2	36.9	29.3

मिजोरम तथा मेघालय में अधिकांश (55.7%) तथा (53.5%) घरों में रोशनी ठीक थी। मेघालय तथा त्रिपुरा के भी उतने ही घरों में रोशनी कम थी। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में अधिकांश परिवार (47.9%) के घरों में रोशनी ठीक थी।

तालिका 23: पीने के पानी का मुख्य स्रोत

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	नल	49.1	32.6	31.1	37.6
2.	ट्यूबवेल	4.5	8.1	52.9	22.8
3.	टैंक /तालाब	16.8	42.5	8.8	21.8
4.	हैंड पम्प	7.2	0	5.8	4.5
5.	नदी /नहर	19.9	9.9	1.6	10.3
6.	वसंत ऋतु	2.4	7.0	0.3	3.1

मिजोरम में लगभग 49.1% परिवार पीने के पानी के लिए नल पर निर्भर होते हैं। मेघालय में 42.5% परिवार टैंक या तालाबों में से पानी लेते हैं। त्रिपुरा में अधिकांश (52.9%) पीने के पानी के लिए ट्यूब वेल पर निर्भर होते हैं। पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में यह पाया गया कि, अधिकांश परिवार पीने के पानी के लिए नल पानी पर निर्भर हैं।

माँ बाप जब काम के लिए बाहर गये हैं, तब पाँच वर्षीय भाई अपने छोटी बहन की देखभाल कर रहा है

तालिका 24: रोशनी के लिए ऊर्जा स्रोत

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	तेल	0	43.0	40.7	27.9
2.	गैस	0.7	0	0.3	0.3
3.	मोमबत्ती	0.3	0.7	1.3	0.8
4.	बिजली	99.0	56.3	57.7	71.0

रोशनी के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत मिजोरम (99.0%) में बिजली था, मेघालय 56.3% तथा त्रिपुरा (57.7%), संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में अधिकांश परिवार रोशनी के लिए बिजली का उपयोग करते हैं।

तालिका 25: खाना पकाने के लिए ऊर्जा का स्रोत

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	पूरे पूर्वोत्तर
1.	कोयला / कोक	0	6.2	13.7	6.8
2.	लकड़ी/पत्ते / घास-फूस / तिनके	34.0	91.9	68.1	64.2
3.	एल.पी.जी. / पाइप का गैस	65.6	1.5	17.9	28.6
4.	अन्य कोई	0.3	0.4	0.3	0.3

मिजोरम में खाना एल.पी.जी. गैस पर बनाया जाता है जबकि, मेघालय तथा त्रिपुरा में लकड़ी / पत्ते तथा घास-फूस / का ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

V. पर्यावरण विवरण

तालिका 26: नाली व्यवस्था

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई व्यवस्था नहीं	3.4	77.2	53.4	44.2
2.	खुली नाली	85.5	21.7	16.9	41.1
3.	कच्ची नाली	4.5	1.1	21.4	9.5
4.	खुली पक्की नाली	3.1	0	7.3	3.7
5.	भूमिगत	3.4	0	1.0	1.5

मिजोरम में अधिकांश (85.5%) परिवारों के घरों में खुली नाली की व्यवस्था है। त्रिपुरा में (53.4%), मेघालय में (77.2%) घरों में नाली व्यवस्था नहीं है। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में कई घरों में (44.2%) कोई नाली व्यवस्था मौजूद नहीं है।

तालिका 27: कूडा-कचरा फेंकने की व्यवस्था

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई व्यवस्था नहीं	3.2	96.3	62.6	53.8
2.	रहवासी लोगों द्वारा मिलकर की गई व्यवस्था	90.7	3.3	33.2	42.6
3.	पंचायत/नगरपालिका /नगर निगम	6.1	0.4	4.2	3.6

कूडा-कचरा फेंकने की व्यवस्था के संबंध में यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकांश (90.7%) परिवारों के स्थानीय लोगों ने मिलकर व्यवस्था कर ली हैं। मेघालय में (96.3%) तथा त्रिपुरा में (62.6%) कोई व्यवस्था मौजूद नहीं थी। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में कई परिवारों में स्थानीय लोगों द्वारा कोई व्यवस्था नहीं की गई है।

तालिका 28: पिछले पाँच वर्षों में प्राकृतिक आपदा

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	भू-स्खलन	11.6	31.3	3.2	19.3
2.	दावानल	84.6	59.6	3.2	44.4
3.	बाढ़	0	9.1	85.6	33.1
4.	अनावृष्टि/ सूखाग्रस्त	0	0	4.8	1.6
5.	कोई अन्य	3.8	0	3.2	1.6

मिजोरम एवं मेघालय में पिछले पाँच वर्षों में दावानल जैसी प्राकृतिक आपदा बतलायी गयी। त्रिपुरा में (85.5%) पिछले पाँच वर्षों में बाढ़ से प्रभावित हुए। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में अधिक दावानल (44.4%) थे।

भाग - ख : मातृ संबंधी इतिहास

I. गर्भधारणा विवरण

तालिका 29: गर्भावस्था की पुष्टि

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	चिकित्सीय	51.2	40.6	66.9	53.5
2.	देशज पद्धति	48.8	59.4	33.1	46.5
3.	अन्य कोई	0	0	0	0

मिजोरम तथा त्रिपुरा में गर्भधारणा की पुष्टि के लिए कई माताओं ने चिकित्सीय पद्धति अपनायी जबकि, मेघालय में अधिकांश माताओं ने देशज पद्धति अपनायी।

तालिका 30: प्रसव करवाने वाले व्यक्ति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	प्रशिक्षित व्यक्ति	94.2	57.4	68.9	73.8
2.	अप्रशिक्षित व्यक्ति	5.8	42.6	31.1	26.2

सभी तीन राज्यों तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में यह पाया गया कि, अधिकांश प्रसव प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा करवाया जाता है। मिजोरम में 94.2%, मेघालय में 57.4%, त्रिपुरा में 68.9% तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में 73.8%।

II. परिवार नियोजन

तालिका 31: परिवार नियोजन अपनाने वाले परिवारों की प्रतिशतता

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	27.9	3.0	26.8	20.0
2.	नहीं	72.1	97.0	73.2	80.0

अध्ययन के परिणामों के अनुसार, अधिकांश लोगों ने, मिजोरम में (72.1%), मेघालय में (97%), त्रिपुरा में (73.2%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (80%) परिवार नियोजन की पद्धति नहीं अपनाई।

तालिका 32: परिवार नियोजन पद्धति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	गोलियाँ	15.6	75.0	75.9	44.9
2.	वैसेक्टमी	7.3	25.0	1.1	4.8
3.	ट्यूबेक्टमी	63.6	0	1.1	33.2
4.	निरोध	4.2	0	12.6	8.0
5.	कॉपर-टी	8.3	0	9.3	8.6
6.	अन्य कोई	1.0	0	0	0.5

परिवार नियोजन अपनाने वाले नमूने के अनुपात के लिए, परिवार की अधिक प्रचलित पद्धति गोलियाँ खाना है जो मेघालय में 75%, त्रिपुरा में 75.9% तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में 44.9% रही। मिजोरम में ट्यूबेक्टमी, जो स्थायी पद्धति है, यह अपनाने वालों की जनसंख्या 63.6% रही।

III. माँ का स्वास्थ्य

तालिका 33: स्वास्थ्य समस्या वाली माताओं का प्रतिशत

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	22.0	55.4	23.6	32.8
2.	नहीं	78.0	44.6	76.4	67.2

परिणामों के अनुसार, मेघालय को छोड़कर जहाँ 55.4% माताओं को स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में बताया गया, वहाँ अधिकांश माताओं में कोई स्वास्थ्य समस्याएँ रिपोर्ट नहीं की गई।

तालिका 34: माँ की स्वस्थ्य समस्याएँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मधुमेह	0.3	2.2	2.9	1.8
2.	रक्तचाप	4.4	27.5	5.7	12.0
3.	कमर दर्द	10.1	25.6	14.3	17.2
4.	आर्थ्रैटिस	6.1	2.9	1.6	3.5
5.	अन्य कोई	10.8	10.3	1.0	7.1

जिन माताओं में स्वास्थ्य समस्याओं की रिपोर्ट की, उनमें से मिजोरम में अधिकांश (10.80%) ने अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की शिकायत की जैसे बारंबार मलेरिया, दस्त, शारीरिक कमजोरी, गैस्ट्रिक समस्याएँ तथा कमर दर्द (10.1%)। मेघालय में, 27.5% माताएँ रक्तचाप और 25.6% कमर दर्द से पीडित थे। संपूर्ण पूर्वोत्तत्तर क्षेत्र में ज्यादातर मातायें कमर दर्द 17.2% और रक्तचाप 12% से पीडित थीं।

तालिका 35: जिनसे चिकित्सीय मदद माँगी

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई चिकित्सक	72.4	8.1	20.3	31.0
2.	पी.एच.सी. डाक्टर	25.6	58.8	59.1	49.5
3.	स्वयं दवा लेना	1.0	11.9	0.7	4.5
4.	हक़ीम	0	0.4	4.3	1.8
5.	स्थानीय देशज चिकित्सक	1.0	20.8	15.6	13.2

मिजोरम में लगभग 72% माताओं ने अपने चिकित्सा संबंधी समस्याओं के लिए चिकित्सकों का परामर्श लियाँ । जबकि, मेघालय तथा त्रिपुरा में (58.9%) तथा (59.1%) ने पी.एच.सी. डाक्टरों का परामर्श लिया। मेघालय में 20.8% स्थानीय देशज चिकित्सकों से चिकित्सीय सहायता माँगी। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (49.5%) माताओं ने स्वास्थ्य समस्याओं के लिए पी.एच.सी. डाक्टरों का परामर्श लिया।

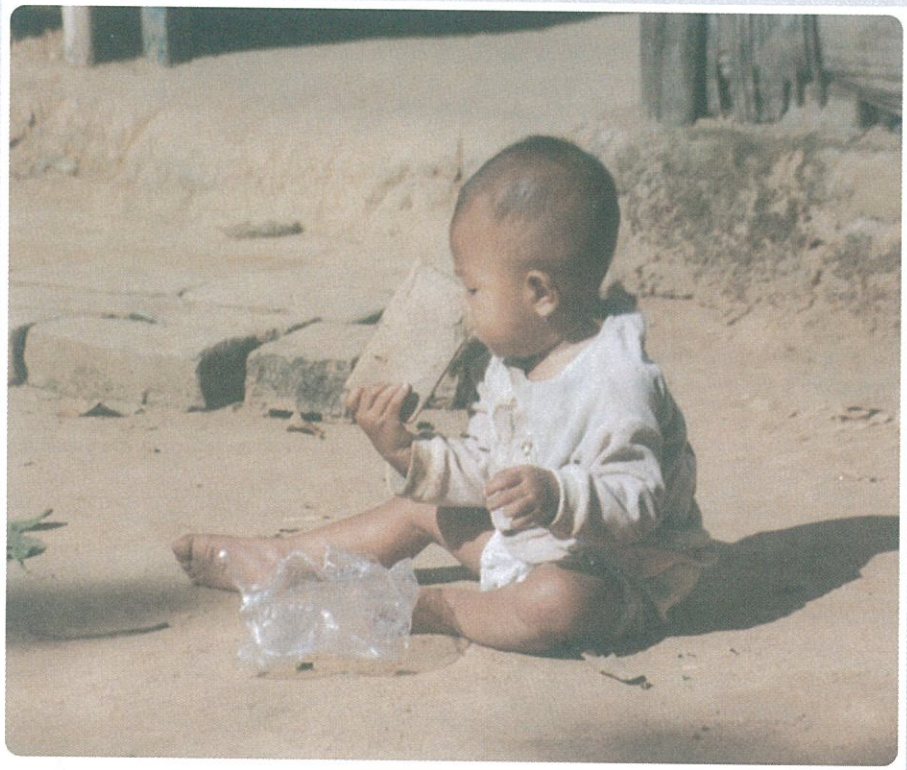

एक दो वर्षीय बच्चा लकडी के टुकडे से खेल रहा है

पीठ से बंधे बच्चे का स्तनपान करा रही माँ

IV. घरेलू उपचार

तालिका 36: साधारण सर्दी के लिए उपचार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई घरेलू उपचार नहीं लिया	33.1	46.9	35.0	38.1
2.	इनहेल करना	8.1	2.9	6.1	5.8
3.	वाणिज्यिकी तौर पर उपलब्ध पेस्ट	32.8	22.3	11.1	21.9
4.	सोंठ तथा काली मिर्च से बना काढ़ा	3.0	13.2	12.7	9.6
5.	कोई अन्य	29.4	13.6	28.0	24.0

साधारण सर्दी के लिए घरेलू उपचार में,यह पाया गया कि, अधिकांश लोगों ने सर्दी के लिए कोई घरेलू उपचार नहीं अपनाया। मिजोरम में लगभग 32.8% तथा मेघालय में 22.3% वाणिज्यिकी तौर पर उपलब्ध पेस्ट जैसे सरसों का तेल, लहसुन के साथ सरसों का तेल, होमियोपैथी, व मातहत पत्तियों का रस या तुलसी के पत्तियों के रस का उपयोग किया।

तालिका 37: ज्वर के लिए उपचार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई घरेलू उपचार नहीं	28.4	14.3	28.0	23.9
2.	गर्म कपड़े	37.5	65.2	47.1	52.3
3.	माथे पर गीले कपड़े	2.0	61.5	60.8	38.5
4.	अन्य कोई	61.8	3.7	4.1	23.3

मिजोरम में, लगभग 61.8% माताओं ने अन्य उपचार जैसे स्पाँज करना, और देशीय शराब का उपयोग किया। लगभग 37.5% मिजोरम में तथा 65.2% मेघालय में ज्वर कम करने के लिए गर्म कपडे का इस्तमाल किया। त्रिपुरा में लगभग 60.8%, मेघालय में 61.5% लोग माथे पर गीले कपडे का उपयोग किया।

तालिका 38: शूल के लिए उपचार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई घरेलू उपचार नहीं	31.9	56.3	43.6	44.3
2.	गर्म बैग से उपचार	1.7	1.9	13.4	6.3
3.	हर्बल दवा	23.5	27	26.4	25.8
4.	कोई अन्य	42.9	14.8	16.6	23.6

मिजोरम में शूल दर्द के लिए सरसों के तेल से मसाज, और पान के पत्तों का उपयोग किया गया। मेघालय में (56.3%) तथा त्रिपुरा में (43.6%) माताओं ने शूल दर्द के लिए कोई घरेलू उपचार नहीं किये। मिजोरम में 23.5%, मेघालय में 27%, त्रिपुरा में 26.4% शूल दर्द के लिए हर्बल दवा को प्राथमिकता दी।

तालिका 39: अतिसार के लिए उपचार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई घरेलू दवाई नहीं	30.4	78.3	71.2	58.2
2.	छाँछ में मेथी के दाने	0	1.6	3.0	1.6
3.	नारियल पानी	1.2	0.8	15.2	6.6
4.	छाँछ	0.4	0	5.6	3.4
5.	अन्य कोई	68.0	19.3	5.0	30.2

अतिसार के लिए घरेलू उपचार के बारे में पूछने पर, लगभग 68% घरेलू उपचार जैसे ओआरएस सिरप तथा घर में बनाया हुआ सलाईन का उपयोग किया जबकि, मेघालय तथा त्रिपुरा में 78.3% तथा 71.2% लोगों ने कोई घरेलू उपचार नहीं किये। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में भी अतिसार के लिए 58.2% लोगों ने कोई घरेलू उपचार नहीं किये।

तालिका 40: सिर दर्द के लिए उपचार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई घरेलू उपचार नहीं	40.9	39.7	44.9	41.5
2.	मरहम लगाना	0.8	18.7	34.1	16.7
3.	सिर की मसाज करना	0	7.6	5.9	4.5
4.	कनपटी दबाना	6.4	32.5	10.8	17.5
5.	भाप लेना	0.4	0	2.7	0.9
6.	अन्य कोई	51.5	1.5	1.6	18.9

सिर दर्द के मामलों में, मिजोरम में लगभग 40.9%, मेघालय में 39.7%, त्रिपुरा में 44% लोगों ने कोई घरेलू उपचार नहीं किये। लगभग 51.5% अन्य पद्धतियाँ जैसे हर्बल बैंडेज तथा लहसून डालकर उबले हुए तेल का उपयोग किया। मेघालय, त्रिपुरा तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र के अधिकांश 72.2%, 71.2% तथा 58.2% लोग कोई घरेलू उपचार नहीं किये।

तालिका 41: घावों के लिए उपचार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई घरेलू उपचार नहीं	6.1	12.1	29.4	15.3
2.	बैंडेज लगाना	36.8	77.0	53.8	56.1
3.	हल्दी या कॉफी पाउडर लगाना	0	1.1	11.8	4.1
4.	अन्य कोई	57.1	9.8	5.0	24.5

कटे हुए और घावों के लिए मिजोरम में लगभग 57.1% उपचार जैसे हर्बल बैंडेज, हर्बल दवा, कोलगेट पेस्ट, नींबू के साथ पान के पत्ते का उपयोग किये। मेघालय में (77%) तथा त्रिपुरा में (53.8%) कटे हुये तथा घावों के लिए बैंडेज का उपयोग किया। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में 56.1% लोगों ने कटे हुए और घावों के लिए पट्टी का उपयोग किया।

अकेला खिलौने से खेल रहा 11 महीने का बच्चा

फलों के बास्केट से खेल रहा 1 वर्ष 9 महीने का बच्चा

V. गर्भावस्था के दौरान की प्रथाएँ

तालिका 42: गर्भावस्था के दौरान के समारोह

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	स्वाद	0	0	66.5	23.7
2.	क्रिता	0	1.1	0	0.3
3.	खादी	0	0	0	0
4.	पंचामृत	0	0	9.9	3.5
5.	वोलु	0	0	32.5	11.6
6.	कोलोइ	0	0	0.6	0.2
7.	सूर्यदर्शन	0	0	3.2	1.1
8.	फारा	0	0	13.7	4.9
9.	सीमंतम	0	0	2.5	0.9
10.	अन्य कोई	0	0	1.0	0.6

निष्कर्षों से पता चला कि, केवल त्रिपुरा में ही गर्भावस्था के दौरान स्वाद (66.5%), वोलु (32.5%) और फरा (13.7%) जैसे समारोह का आयोजन किया जाता हैं। । अन्य समारोहों में पंचामृत(9.9%), सूर्यदर्शन (3.2%), सीमंतम (2.5%), और कोलोई (0.6%)।

तालिका 43: गर्भावस्था के दौरान रिवाज़

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बालों में फूल नहीं लगाना	0	0	73.9	26.3
2.	नए कपड़े नहीं पहनना	0	0	19.1	6.8
3.	अन्य कोई	0	0	0.3	1.6

कुछ रस्मे केवल त्रिपुरा में ही मानी जाती हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र के सामान्य रस्में हैं, बालों में फूल नहीं लगाना (73%) और नए कपडे नहीं पहनना (19.1%)।

तालिका 44: गर्भावस्था के दौरान सिफारिश क्रियाकलाप

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	आराम	55.4	38.1	16.9	36.4
2.	चलना	60.8	39.6	46.5	49.2
3.	अन्य कोई	0.7	12.8	17.2	10.3

गर्भावस्था के दौरान पालन किये जाने वाले क्रियाकलाप हैं चलना, मिजोरम (60.8%), मेघालय (39.6%), त्रिपुरा (46.5%)। मिजोरम में 55.4%, मेघालय में 38.1%, तथा त्रिपुरा में 16.9% आराम करने की सिफारिश की गई।

तालिका 45: गर्भावस्था के दौरान बच कर रहने वाले क्रियाकलाप

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	भारी काम-काज	90.2	31.1	39.2	53.8
2.	जोखिम वाले काम	35.8	64.5	48.1	49.0
3.	लंबी दूरी की यात्रा	50.7	49.8	5.4	34.3
4.	अन्य कोई	0.3	4.8	5.4	3.5

गर्भावस्था के दौरान जिन कार्यों से बचे रहते हैं, वे हैं जोखिम भरे काम, भारी काम, लंबी दूरी की यात्रा।

तालिका 46: गर्भावस्था के दौरान शारीरिक देखभाल

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	गर्म पानी से मसाज करना	9.8	39.2	0.6	15.6
2.	शारीरिक श्रम से बचे रहना	41.9	38.8	22.0	33.9
3.	नियमित मेडिकल चेक अप कराना	80.1	29.7	46.5	52.5
4.	शारीरिक व्यायाम तथा चलना	55.4	0.4	8.0	21.5
5.	अन्य कोई	0.3	0.4	0.6	0.5
6.	उपरोक्त में से कोई नहीं	0	0	0	0

गर्भावस्था के दौरान शारीरिक देखभाल में नियमित मेडिकल चेक अप, शारीरिक व्यायाम तथा चलना शामिल है। मिजोरम में गर्भावस्था के दौरान नियमित रूप से मेडिकल चेक अप और शारीरिक व्यायाम के लिए गई महिलाओं की प्रतिशतता अधिक हैं। पर मेघालय तथा त्रिपुरा में शारीरिक व्यायाम करने वालों में महिलाओं संख्या नगण्य रही।

जमीन पर पत्थर से चित्र बनाते हुए अकेला खेल रहा तीन वर्षीय बच्चा

आठ महीने के बच्चे को गोद लिये दादी माँ का चित्र

बिमारी का इलाज एवं बुराई को दूर करने के लिए बाँधा गया तावीज

VI. गर्भावस्था के समय आहार

तालिका 47: गर्भावस्था के दौरान जिस भोजन से परहेज करते हैं-

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	ब्रेड	3.7	0.4	11.8	5.5
2.	कटहल	28.0	3.7	18.8	17.2
3.	पपीता	1.0	4.4	3.8	3.1
4.	बबूल का पौधा	5.7	30.0	26.4	20.6
5.	मसालेयुक्त भोजन	14.9	26.4	42.4	28.2
6.	मांस	9.8	6.6	22.9	13.5
7.	ठंडे पेय	0.3	19.0	49.4	23.6
8.	सड़ा हुआ भोजन	23.6	47.3	35.0	35.0
9.	चावल	0	3.7	0.3	1.2
10.	लहसुन	9.1	8.1	13.4	10.3
11.	गोमांस	1.4	9.5	46.8	20.0
12.	सूअर का गोश्त	4.1	8.4	48.1	21.1
13.	वसायुक्त पदार्थ	7.8	8.1	29.0	15.4
14.	अन्य कोई	5.1	0	1.0	2.0

मिजोरम में गर्भावस्था के दौरान जिस खाने से अत्यधिक परहेज करते हैं, वह है, कटहल, सड़ा हुआ भोजन (23.6%)। मेघालय में, सड़ा भोजन (47.3%) तथा बबूल के पौधे (30%) से गर्भावस्था के दौरान परहेज करते हैं। त्रिपुरा में गर्भावस्था के समय में ज्यादातर ठंडे पेय (49.4%), सूअर का गोश्त (48.1%) तथा गोमांस (46.8%) से परहेज करते हैं। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में यह पाया गया कि, सड़ा हुआ भोजन (35%) तथा मसालेदार भोजन (28.2%) से गर्भावस्था के दौरान परहेज करते हैं।

घर में कोई नहीं है, तब एक 2 1/2 वर्ष बच्चा अकेला केले के पत्ते पर भोजन कर रहा है

तालिका 48: गर्भावस्था के दौरान भोजन में सम्मिलित पदार्थ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अंडा	52.4	49.8	54.5	52.3
2.	केले	58.4	63.0	43.0	54.4
3.	पपीता	33.1	46.5	38.9	39.3
4.	मछली	59.5	63.0	47.1	56.2
5.	फल	61.8	67.0	39.5	55.5
6.	आलू	44.6	67.0	28.7	45.9
7.	ब्रेड	47.3	37.4	14.0	82.4
8.	हिरण का मांस	8.8	22.7	0.3	10.1
9.	बंदर का मांस	9.1	17.9	0.3	8.7
10.	साही मांस	10.8	17.2	1.3	9.4
11.	नींबू	29.4	40.7	3.2	23.6
12.	तेल	27.0	49.1	2.9	25.3
13.	उबली हुई सब्जियाँ	44.9	66.7	26.1	45.0
14.	खट्टे फल	3.0	44.3	4.5	16.3
15.	दूध	42.2	39.2	51.6	44.6
16.	हार्लिक्स	6.4	4.4	31.5	14.7
17.	सूखे मेवे	1.4	33.0	4.8	12.3
18.	कड़वे पदार्थ (नीम/करेला)	18.9	35.9	9.9	21.0
19.	अन्य कोई	18.6	4.0	0.3	7.6

गर्भावस्था के दौरान मिजोरम में भोजन में सबसे अधिक रूप से फल (61.8%), मछली (59.5%) तथा केला (58.4%) शामिल किया गया था। मेघालय में फल (67%), आलू (67%), मछली (63%), तथा केला (63%) आहार में शामिल किये गये थे। त्रिपुरा में संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में ब्रेड (82.4%), मछली (56.2%), तथा फल (55%) गर्भावस्था के दौरान सामान्यतया भोजन में शामिल किये गये थे।

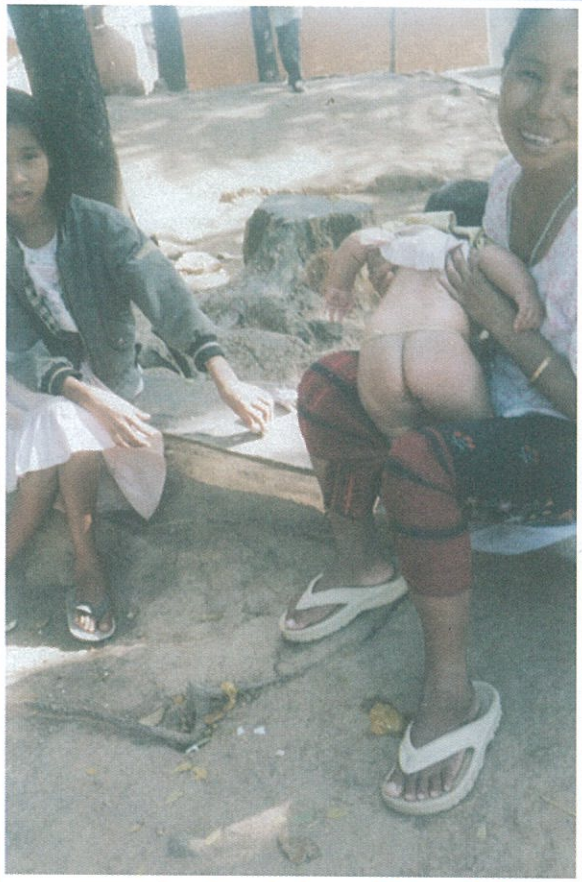

कागज/ पेपर के टुकडे से 3 महीने के बच्चे की टट्टी साफ कर रही माँ

बच्चे के माँ बाप खेत में काम के लिए गये हैं, बच्चों की देखभाल कर रही दादी/नानी (घेंघा से पीडित)

VII. प्रसव संबंधी विवरण

तालिका 49: नियमित चिकित्सा-जाँच करवाई गई महिलाओं की प्रतिशतता

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर
1.	हाँ	92.8	49.1	68.2	70.4
2.	नहीं	7.2	50.9	31.8	29.6

यह पाया गया कि, 92.8% महिलाओं ने नियमित रूप से चिकित्सा जाँच करवाई। जबकि मेघलाय में 50.9% माताओं ने चिकित्सा जाँच नहीं करवाई। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में 20.4% माताओं ने गर्भवास्था के दौरान चिकित्सा जाँच करवाई।

तालिका 50 : गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य परामर्शदाता

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर
1.	नर्स	31.1	20.8	4.4	19.2
2.	चिकित्सक	64.5	23.4	74.7	55.3
3.	देशज चिकित्सक	2.2	32.9	17.3	16.5
4.	अन्य कोई	2.2	22.9	3.6	9.0

मिजोरम एवं त्रिपुरा में 64.5% तथा 74.7% महिलाओं ने गर्भावस्था के दौरान चिकित्सकों से परामर्श लिया। पर मेघालय में गर्भावस्था के दौरान 32.9% महिलाओं ने देशज चिकित्सक का परामर्श लिया। अन्य जिनसे परामर्श लिया गया था, वे थे अपंजीकृत या होमियोपैथी चिकित्सक।

तालिका 51: प्रसव का स्थान

क्र.	समूह	मिजरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर
1.	घर	8.2	72.9	36	38.3
2.	अस्पताल	90.4	23.4	60.8	59.0
3.	अन्य कोई	1.4	3.7	3.2	2.7

मिजोरम में अधिकांश 90.4% महिलाओं ने अस्पताल में बच्चों को जन्म दिया। मेघालय में 72.9% महिलाओं ने घर पर बच्चों को जन्म दिया। त्रिपुरा में अधिकांश, 60.8% महिलाओं ने अस्पताल में बच्चों को जन्म दिया। संपूर्ण पूर्वोत्तर में लगभग 59% महिलाओं ने बच्चों को अस्पताल में जन्म दिया।

तालिका 52: गर्भावस्था के दौरान महिलाओं के प्रतिरक्षीकरण की प्रतिशतता

क्र.	समूह	मिजरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर
1.	हाँ	98.3	64.3	72.2	78.4
2.	नहीं	1.7	35.7	27.9	21.6

मिजोरम में अत्यधिक प्रतिशत (98.3%) महिलाओं ने गर्भावस्था के दौरान प्रतिरक्षीकरण करवाया। मेघालय तथा त्रिपुरा में 64.3% तथा 72.2% महिलाओं ने प्रतिरक्षीकरण करवाया। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में 78.4% महिलाओं ने गर्भावस्था के दौरान प्रतिरक्षीकरण करवाया।

तालिका 53: प्रसव करवाने वाले व्यक्ति

क्र.	समूह	मिजरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर
1.	प्रशिक्षित व्यक्ति	94.2	57.4	68.9	73.8
2.	अप्रशिक्षित	5.8	42.6	31.1	26.2

मिजोरम में अधिकांश (94.2%) प्रसव प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा करवाये गये। मेघालय में 57.4% प्रसव प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा करवाये गये और अधिक मात्रा (42.6%) में प्रसव अप्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा करवाये गये। त्रिपुरा में 68.9% प्रसव प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा करवाये गये। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में अधिकांश (73.8%) प्रसव प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा करवाये गये।

तालिका 54: गर्भावस्था के दौरान समारोह

क्र.	समूह	मिजरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर
1.	अज्जन	0	0	39.9	39.6
2.	वोलु	0	0	60.1	59.1
3.	अन्य कोई	0	0	0	0.7

गर्भावस्था के दौरान मनाये जाने वाले समारोहों में यह पाया गया कि, त्रिपुरा में समारोह मनाये जाते हैं। अति साधारण रूप से (60%) लोगों द्वारा मनाया जाने वाला समारोह वोलु है।

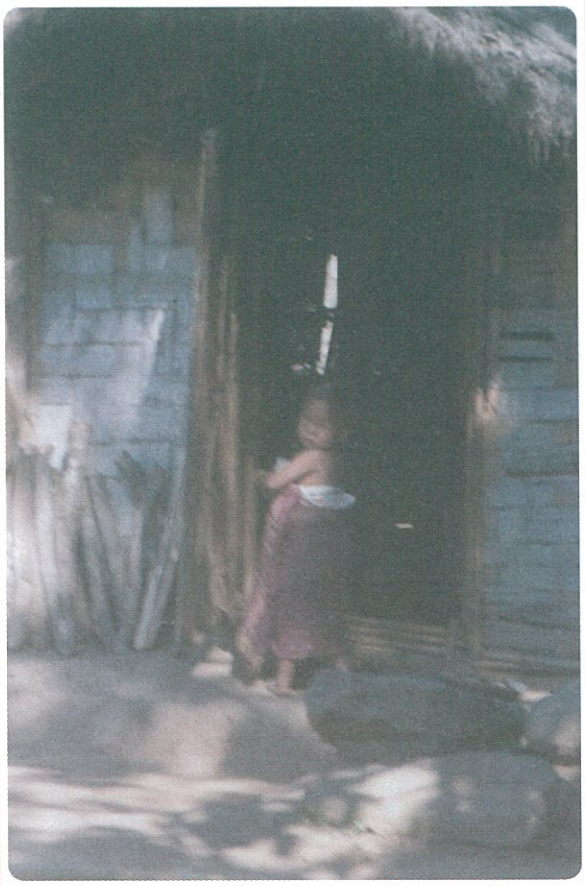

इस चित्र में अपनी माँ की नकल करती हुई लड़की अपने आप बड़ों की तरह कपडे पहन रही है

2 वर्षीय बच्चा अपने पिता के साथ बाहर जा रहा है

VIII. प्रसवोपरांत माँ की देखभाल

तालिका 55: माँ को दी गई मालिश

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	21.3	30.1	19.4	23.3
2.	नहीं	78.7	69.9	80.6	76.7

पूरे तीन राज्यों में और संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में अधिकांश माताओं की मालिश नहीं की गई।

तालिका 56: मालिश के लिए उपयुक्त सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बेसन	0	0	4.2	1.3
2.	हल्दी	47.8	95.1	94.4	80.4
3.	तेल	52.2	4.9	1.4	18.3
4.	कोई अन्य	0	0	0	0

माताओं की मालिश के लिए हल्दी का उपयोग किया गया। लगभग 47.8% मिजोरम में, 95.1% मेघालय में, 94.4% त्रिपुरा में तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में 80.4%।

तालिका 57: प्रसवोपरांत विशेष देखरेख

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	26.1	51.9	30.2	35.6
2.	नहीं	73.9	48.1	69.8	64.4

जब प्रसवोपरांत देख रेख के बारे में पूछा गया तो, अधिकांश माताओं का मिजोरम में (73.9%) तथा त्रिपुरा में (69.8%) जवाब 'नहीं' में था। मेघालय में (51.9%) यह बताया कि, प्रसवोपरांत विशेष रूप से देख रेख की गई है। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में लगभग 64.4% माताओं का प्रसवोपरांत कोई विशेष देख रेख नहीं की गई थी।

तालिका 58: प्रसवोपरांत रहने का स्थान

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मायके	5.1	18.5	21.4	15.1
2.	ससुराल	4.5	3.0	37.7	15.9
3.	अपने घर	90.4	77.5	40.9	68.7
4.	अन्य कोई	0	1.0	0	0.3

पूरे तीन राज्यों में मिजोरम (90.4%) मेघालय (77.5%), त्रिपुरा (40.9%), तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (68.7%) माताएँ प्रसवोपरांत अपने ही घर में रहीं।

तालिका 59: प्रसवोपरांत खाने से परहेज करने वाले पदार्थ।

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मसालेदार खाना	36.1	50.9	92.4	60.7
2.	मांसाहारी खाना	8.1	8.4	17.5	11.6
3.	कोई अन्य	2.7	5.1	8.3	5.4

परिणाम से यह पता चलता कि, मिजोरम में (36.1%), मेघालय में (50.9%), त्रिपुरा में (92.4%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (60.7%) माताओं ने प्रसवोपरांत मसालेदार खाने से परहेज किया।

स्तनपान कराते समय बच्चे की स्थिति का चित्र

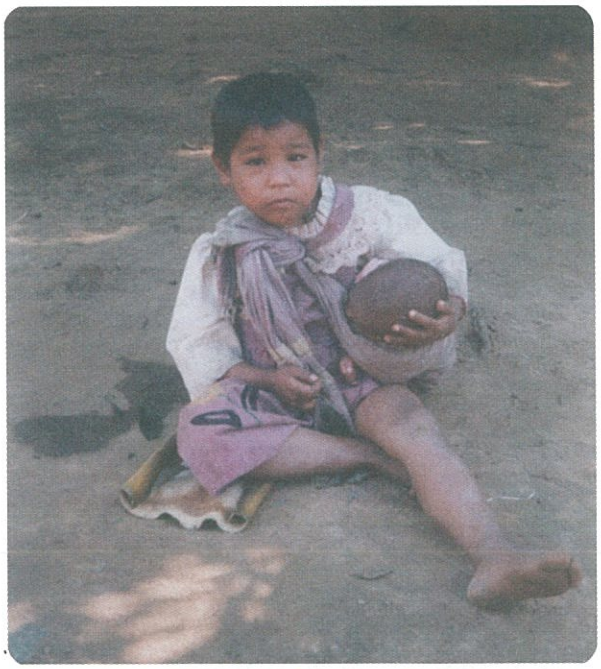

जब माँ बाप खेत में काम करने गये हैं,
तब छोटी बहन की देखभाल करती बडी बहन

भाग - ग : बच्चे से संबंधित विवरण

I. नवजात की देखरेख

तालिका 60: दूध पिलाने की प्रथाएँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बच्चे को कंधे पर उठाना	8.8	50.5	19.4	25.4
2.	दूध पिलाने से पहले स्तन धोना	38.5	18.5	15.0	23.9
3.	दूध पिलाने से पहले दूध की कुछ बूँदें टपका देना	58.1	29.5	45.5	44.7
4.	कोई अन्य	7.4	1.5	29.6	13.5

जब खिलाने की प्रथाओं के बारे में पूछा गया तो यह पाया गया कि, अधिकांश, मिजोरम में (58.1%) तथा त्रिपुरा में (45.5%) ने दूध पिलाने से पहले माँ के दूध की कुछ बूँदें टपका देने की प्रथा अधिकांश प्रचलित थीं। जबकि मेघालय में अधिकांश (50.5%) बच्चे के कंधे पर उठाने की प्रथा अधिकांशत: प्रचलित थी। वैसे संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (44.7%) ने यह रिपोर्ट किया कि, दूध पिलाने से पहले माँ के दूध की कुछ बूँद टपका देना वहाँ पर आम बात थी।

तालिका 61: नहाने की प्रथाएँ (नहलाने से पहले)

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बच्चे की मालिश	25.3	72.2	62.7	53.1
2.	घर का बना पेस्ट	16.6	1.5	14.6	11.2
3.	नाक/कान / नाभि में तेल डालना	7.1	9.9	3.2	6.6
4.	कोई अन्य	0.7	0.4	0	0.3

अध्ययन यह बताता है कि, अधिकांश नवजात शिशुओं को मिजोरम में (25.3%), मेघालय में (72.2%), त्रिपुरा में (62.7%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (53.1%) नहलाने से पूर्व मालिश की जाती है।

तालिका 62: नहलाने के बाद की प्रथाएँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बच्चे को धुँआरना	0	1.5	3.5	1.7
2.	विशिष्ट भागों की सफाई	27.0	31.9	25.5	28.0
3.	तेल लगाना	85.5	76.6	52.9	71.1
4.	अन्य कोई	10.1	0.7	0.6	3.9

यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकांशत: (85.5%), मेघालय में (76.6%), त्रिपुरा में (52.9%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (71.1%) लोग नवजात को नहलाने के बाद तेल लगाते हैं।

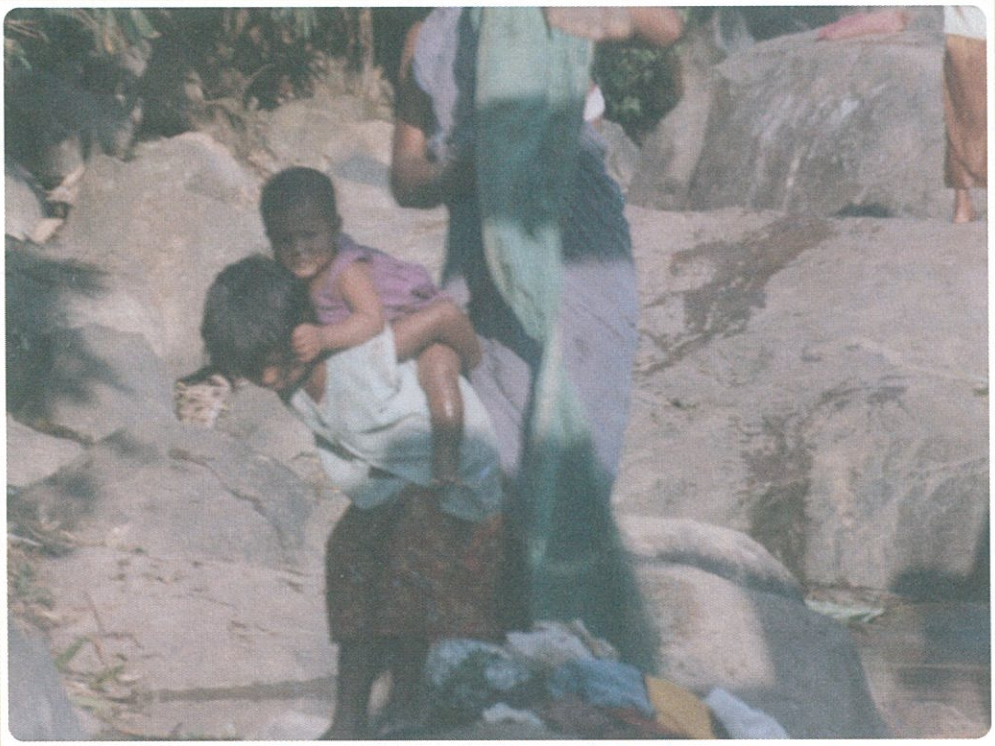

एक वर्ष के बच्चे को झरने के पानी से नहलाने के बाद माँ ने बच्चे को बडी बहन के पीठ पर ले जाने को दिया

तीन वर्ष का बच्चा केला खाने का मज़ा ले रहा है

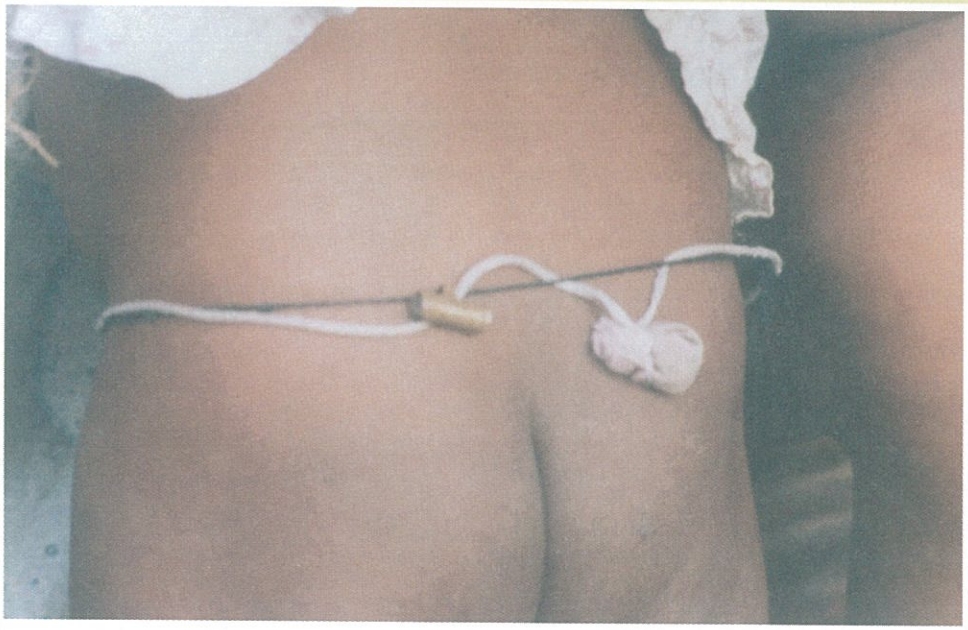

कुछ बिमारियों से बचाने के लिए बच्चे के कमर में चिकित्सीय प्रकार का तावीज़ बाँधा गया

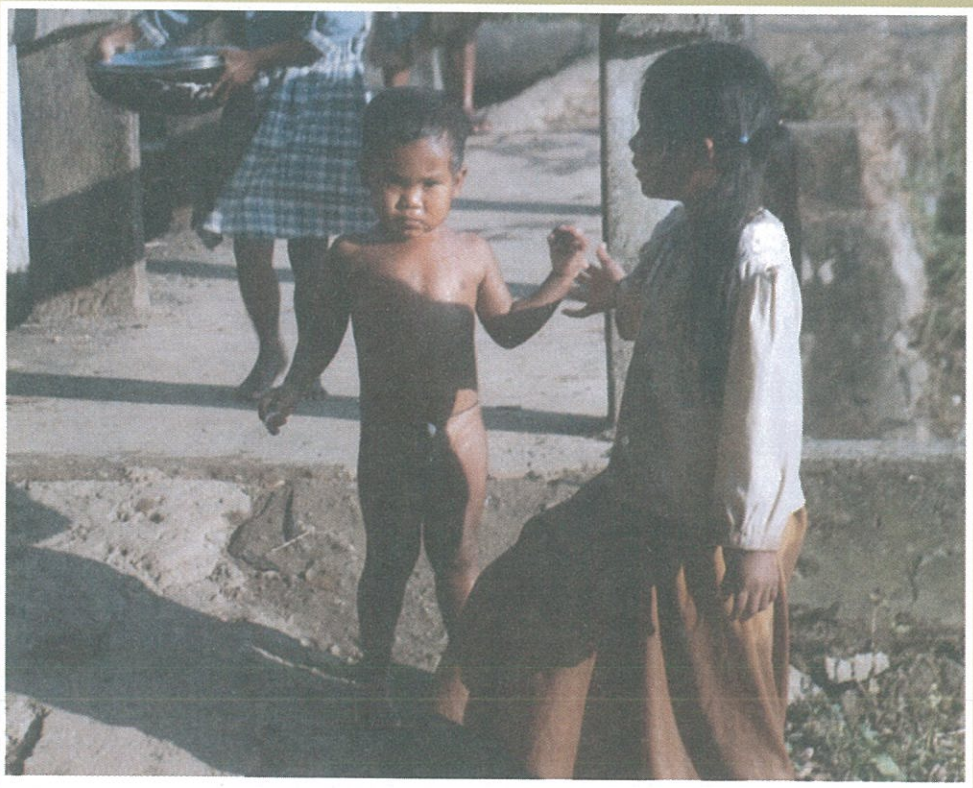

कुछ बच्चों को अक्सर दिन के समय में नंगा रखा जाता है

II. स्नान कराने/नहलाने की प्रथाएँ

तालिका 63: नियमित रूप से स्नान कराना/नहलाना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	97.6	90.8	97.4	95.4
2.	नहीं	2.4	9.2	2.6	4.6

परिणामों से यह पता चलता है कि, मिजोरम में (97.6%), मेघालय में (90.8%) तथा त्रिपुरा में (97.4%) को नियमित रूप से स्नान करवाया गया।

तालिका 64: नहलाने के लिए प्रयुक्त सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	साबुन	97.6	100	88.5	95.3
2.	घर का बना हुआ पाउडर	0.7	0	9.4	3.4
3.	अन्य कोई	1.7	0	2.1	1.3

यह पाया गया कि मिजोरम में (97.6%) लोग नहलाने के लिए साबुन का उपयोग किया, मेघालय में (100%), त्रिपुरा में (88.5%) तथा पूरे पूर्वोत्तर में (95.3%) लोगों ने साबुन का उपयोग किया।

तालिका 65: स्नान कराने की / नहलाने की सामग्री प्रयुक्त करने के कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	साफ करने की सामग्री	76.0	83.2	67.5	75.2
2.	त्वचा के लिए अच्छा	60.1	5.5	23.2	30.1
3.	पारम्परिक प्रथा	11.5	15.4	4.1	10.1

नहलाने के लिए साबुन उपयोग करने के कारणों में से यह बताया गया कि, यह एक साफ करने की सामग्री है। इनमें से अधिकांश, मिजोरम में (76%), मेघालय में (83.2%), त्रिपुरा में (67.5%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में(75.2%) बताया है कि, साबुन को एक साफ सफाई की सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

तालिका 66: बच्चे को नहलाने की स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बैठने की स्थिति	50.2	37.6	34.4	40.6
2.	खडे रहने की स्थिति	20.3	23.0	34.7	26.3
3.	माँ के पाँव पर लिटा कर	9.6	32.8	7.3	15.9
4.	टब में बिठा कर	17.2	0.7	19.4	12.9
5.	अन्य कोई	2.7	5.9	4.2	4.3

नहलाते समय कई स्थितियों में, यह पाया गया कि, नहलाते समय बच्चे को सामान्यत: बैठने की स्थिति में रखा जाता है। मिजोरम में (50.2%), तथा मेघालय में (37.6%) बच्चों को बैठने की स्थिति में नहलाया गया। त्रिपुरा में (34.4%) तथा (34.7%) बिठाकर तथा खडा करके नहलाया जाता है। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में अधिकांश (40.6%) को बिठाकर नहलाया जाता है।

तालिका 67: बच्चों को नहलाने में शामिल व्यक्ति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ	96.1	86.3	93.2	92.0
2.	नानी	3.9	8.9	6.5	6.4
3.	कोई अन्य	0	4.8	0.3	1.6

परिणाम यह दर्शाते हैं कि, अधिकांश बच्चों को माँ नहलाती है, मिजोरम में (96.1%), मेघालय में (86.3%), त्रिपुरा में (93.2%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (92%)।

तालिका 68: स्नान के बाद कपडे बदलना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	98.2	94.1	95.2	95.8
2.	नहीं	1.8	5.9	4.8	4.2

यह पाया गया कि, अधिकांश बच्चों को साफ कपडे बदल दिये जाते हैं। यह प्रथा मिजोरम में (98.2%), मेघालय में (94.1%), त्रिपुरा में (95.2%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (95.8%) पायी गयी।

तालिका 69: नहलाने के बाद प्रयुक्त सुगंधित द्रव्य

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई नहीं	10.0	49.6	28.9	29.2
2.	पत्ते	1.0	6.4	1.0	2.7
3.	पाउडर	84.7	42.8	65.0	64.5
4.	सुगंधित द्रव्य	2.5	0	0.7	1.1
5.	अन्य कोई	1.8	1.2	4.4	2.5

सक्रान करने के/नहलाने के बाद प्रयुक्त सुगंधित द्रव्यों में, यह पाया गया कि, ज्यादातर पाउडर का इस्तेमाल किया गया। मिजोरम में 84.7%, त्रिपुरा में (65%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (64.5%) बच्चों के लिए पाउडर प्रयुक्त किया गया। मेघालय में 49.6% ने बच्चों के लिए किसी सुगंधित सामग्री उपयोग नहीं किया।

तालिका 70: सुगंधित सामग्री के उपयोग करने का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बुराई दूर करने के लिए	0.3	1.8	6.4	2.9
2.	बच्चे के स्वास्थ्य के लिए	30.7	14.3	7.6	17.4
3.	ताजगी महसूस करने के लिए	73.0	38.1	55.7	56.1
4.	अन्य कोई	4.4	1.1	0.3	1.9

अधिकांशत:, मिजोरम में (73%), मेघालय में (38.1%), त्रिपुरा में (55.7%) बताया गया कि, ताजगी महसूस करने के लिए पाउडर का इस्तेमाल किया जाता है।

तालिका 71: बीमारी के दौरान नहलाने की प्रथा

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	20.3	13.7	13.5	15.8
2.	नहीं	79.7	86.3	86.5	84.2

अधिकांश बच्चों को बीमारी के दौरान नहीं नहलाया गया, मिजोरम में 79.9%, मेघालय में 86.3%, त्रिपुरा में 86.5%, तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य राज्य में 84.2%।

तालिका 72: बीमारी के समय स्नान कराने के / नहलाने का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई नहीं	5.0	10.0	16.0	10.7
2.	स्वास्थ्य प्रथा	20.4	15.7	16.7	17.3
3.	बीमारी कम होने के लिए	56.4	40.9	31.9	41.9
4.	बीमारी को बढ़ाने के लिए	2.5	15.2	3.1	7.5
5.	पारम्परिक प्रथा	2.5	12.3	6.2	7.5
6.	कारण नहीं जानते	13.2	5.9	26.1	15.1

बताए गये कारणों में से, यह मानते हैं कि बच्चे को अस्वस्थता के दौरान नहीं नहलाने से बीमारी कम हो जाएगी। अधिकांश लोग, मिजोरम में (56.4%), मेघालय में (40.9%), त्रिपुरा में (31.9%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (41.9%) लोगों ने यह बताया कि, अस्वस्थता के दौरान नहीं नहलाने से बीमारी कम हो जाएगी।

माँ जब व्यस्त है 3 वर्ष का बच्चा अपने आप नहा रहा है।

बच्चे के पैर पर बैठा टिड्डा

बच्चे को खडे हुए स्थिति में दूध पिलाती माँ

III. बाहरी अनुप्रयोग

तालिका 73: नियमित रूप से मालिश करने की प्रथा

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	65.4	56.8	81.7	68.6
2.	नहीं	34.6	43.2	18.3	31.4

अधिकांश बच्चों को नियमित रूप से मालिश की गई, मिजोरम में (65.4%), मेघालय में (56.8%), त्रिपुरा में (81.7%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (68.6%)।

तालिका 74: मालिश का समय

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	नहलाने से पहले	6.1	26.5	65.4	33.8
2.	नहलाने के बाद	93.9	73.5	34.6	66.2

मिजोरम में (93.9%), मेघालय में (73.5%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (66.2%) बच्चों को नहलाने के बाद मालिश की गई। जबकि, त्रिपुरा में (65.4%) नहलाने से पहले मालिश की गई।

तालिका 75: मालिश के लिए प्रयुक्त सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	तेल	79.4	91.8	98.6	89.9
2.	दही	3.4	0.5	0.7	1.7
3.	कोई अन्य	17.2	7.7	0.7	8.4

यहा पाया गया कि अधिकतर लोग बच्चों के मालिश के लिए तेल प्रयुक्त करते हैं। यह सभी तीनों राज्यों में पाया गया, मिजोरम (79.4%), मेघालय (91.8%), त्रिपुरा (98.6%) तथा पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र (89.9%)।

तालिका 76: मसाज करने की सामग्री प्रयुक्त करने का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	रक्त प्रसारण में वृद्धि के लिए	16.6	8.8	8.3	11.2
2.	त्वचा की बनावट में सुधार	75.7	2.6	75.5	53.0
3.	पारंपरिक प्रथा	26.0	56.8	21.7	34.0
4.	अन्य कोई	7.1	0.7	3.5	3.9

अधिकांशत: मिजोरम में (75.5%), त्रिपुरा में (75.5%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (53%) ने बताया कि, मालिश करने से त्वचा की बनावट में सुधार होता है। मेघालय में अधिकांश (56.8%) लोगों ने बताया कि, यह एक पारंपरिक प्रथा है।

तालिका 77: कान और नाक में तेल डालना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	तेल का उपयोग नहीं किया गया	76.3	57.6	57.7	62.9
2.	नारियल का तेल	1.4	4.6	2.1	2.7
3.	एरंडी का तेल	0.5	0.8	10.3	4.3
4.	अन्य कोई	21.8	37.0	29.9	30.1

अधिकांशत: बच्चों के नाक और कान में कोई तेल नहीं डाला गया। मिजोरम 76.3%, मेघालय में 57.6%, तथा त्रिपुरा में 57.7% तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में 62.9%।

तालिका 78: तेल के उपयोग करने के कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पारंपरिक प्रथा	3.4	50.5	29.9	27.4
2.	स्नेहन में सहायक	2.4	2.2	9.9	5.0
3.	अन्य कोई	1.7	7.3	4.5	4.4

अधिकांश लोगों ने यह बताया कि, तेल का प्रयोग पारंपरिक प्रथा के रूप में किया गया। मिजोरम में (3.4%), मेघालय में (50.5%), त्रिपुरा में (29.9%)।

तालिका 79: बालों में प्रयुक्त किया जाने वाला तेल

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	तेल का उपयोग नहीं किया	2.8	5.9	9.5	6.1
2.	नारियल तेल	18.9	39	50.0	36.1
3.	एरंडी का तेल	12.7	1.5	8.5	7.7
4.	कोई अन्य	65.6	53.7	3.2	50.1

परिणामों से यह पता चला कि, मिजोरम में (65.6%), मेघालय में (53.7%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (50.1%) यह बताया गया कि, बालों के लिए नारियल तेल तथा एरंडी के सिवाय अन्य तेल का प्रयोग किया जाता है। त्रिपुरा में अधिकांशत: (50%) लोगों ने बच्चों के लिए नारियल के तेल का उपयोग किया।

तालिका 80: हेअर प्रयोग करने के कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बाल बढ़ाने	57.1	37.0	66.2	54.1
2.	दिमाग या सर को ठंडा रखने का साधन	8.8	49.8	38.9	32.2
3.	पारम्परिक प्रथा	32.1	26.0	5.7	20.8
4.	कोई अन्य	19.3	12.5	0.3	10.4

ज्यादातर, मिजोरम में (57.1%),त्रिपुरा में (66.2%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (54.1%) लोगों ने बताया कि बालों में तेल लगाने से बाल बढ़ते हैं। पर मेघालय में अधिकांश (49.8%) लोगों ने बताया कि, सिर या दिमाग को ठंडा रखने के साधन के रूप में उपयोग किया।

तालिका 81: कान साफ करने के लिए प्रयुक्त सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कान साफ नहीं किये	0	0.7	18.7	6.7
2.	माचिस की तिल्ली	8.4	38.1	29.9	25.3
3.	रूई	78.4	24.2	55.4	53.5
4.	कोई अन्य	21.3	59.7	5.7	27.6

कान साफ करने वाले साधनों में से अधिकांश मिजोरम में (78.4%), त्रिपुरा में (55.4%), तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (53.5%) ने कान को साफ करने के लिए रूई का उपयोग किया। अन्य सामग्री में कपड़े से बनायी गयी बत्ती, हेयर क्लिप, सेफ्टी पिन तथा नाखून का इस्तेमाल किया।

तालिका 82: नाक साफ करने के लिए प्रयुक्त सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	साफ नहीं किया	0	0.7	11.1	4.2
2.	पानी	8.4	49.5	16.9	37.0
3.	कपडा	44.3	88.6	74.8	68.9
4.	कोई अन्य	24.0	3.7	1.3	9.6

अधिकांश, मिजोरम में (44.3%), मेघालय में (88.6%), तथा त्रिपुरा में (74.8%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (68.9%) लोगों ने नाक साफ करने के लिये कपड़े का इस्तेमाल किया।

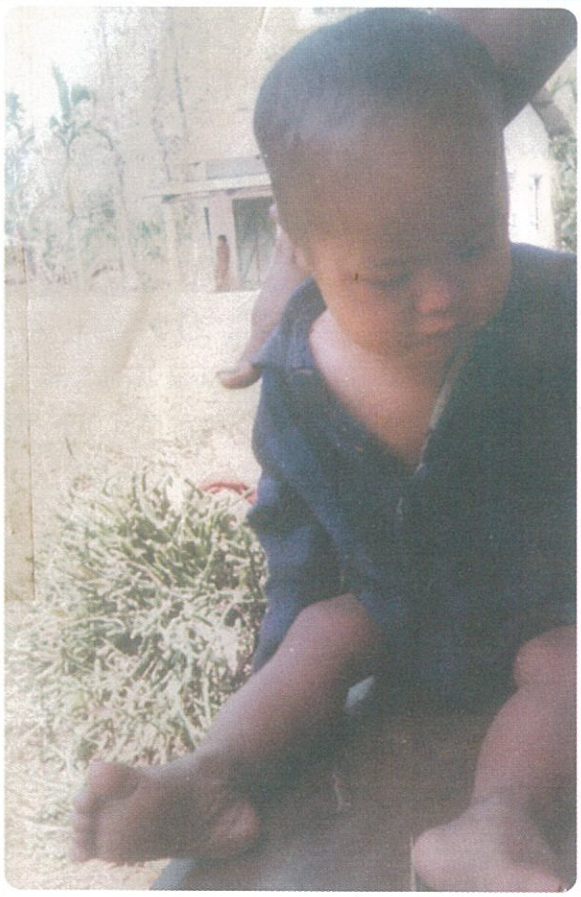

मलेरिया से पीडित बच्चा

ज्वर और अतिसार के इलाज के लिए बच्चे के गले में पहनाया गया औषधीय बैंड

IV. सौंदर्य साधन

तालिका 83: काज़ल के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	काज़ल का उपयोग नहीं किया	97.2	97.3	21.5	65.3
2.	घर का बना हुआ काजल	0.7	0.8	49.5	21.3
3.	बाजार से खरीदा गया काज़ल	2.1	1.9	29.0	13.4

मिजोरम में (97.2%), मेघालय में (97.3%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (65.3%) अधिकांश लोगों ने बच्चों के लिए काजल का उपयोग नहीं किया। जबकि, त्रिपुरा में अधिकांश 49.5% लोगों ने अपने बच्चों के लिए घर के बने हुए काज़ल का इस्तेमाल किया।

तालिका 84: काज़ल के उपयोग का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	48.3	16.8	5.4	23.3
2.	सुंदरता के लिए	1.4	0.4	41.4	15.3
3.	बुरी नज़र से बचाने के लिए	0.3	0.7	58.9	21.3
4.	आँखों की दृष्टि को बढ़ाने के लिए	0	0	4.8	1.7

यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकांशत: (48.3%) तथा मेघालय में (16.8%) ने काज़ल इस्तेमाल करने का कोई कारण नहीं बताया। त्रिपुरा में ज्यादातर (58.9%) लोगों ने बताया कि, बुराई दूर करने के लिए काज़ल का इस्तेमाल किया।

तालिका 85: पाउडर के उपयोग का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पाउडर का उपयोग नहीं किया	13.2	56.8	29.0	32.3
2.	सुंदरता के लिए	13.5	0	6.4	6.5
3.	ताज़ा रखने के लिए	65.9	38.5	60.8	55.6
4.	कोई अन्य	0	0	0	0

पाउडर उपयोग करने के कारणों में, मिजोरम, त्रिपुरा तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (65.9%), (60.8%) तथा (55.6%) लोगों ने ताजा रखने के लिए पाउडर का इस्तेमाल किया। मेघालय में (56.8%) लोगों ने पाउडर का उपयोग नहीं किया।

तालिका 86: प्रयुक्त अन्य सौंदर्य साधन

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	उपयोग नहीं किया	45.9	81.3	53.2	59.5
2.	क्रीम	0	0	18.2	6.5
3.	बिंदी	0.3	0	13	0.6
4.	हर्बल पेस्ट	0	2.9	0	0.9
5.	अन्य कोई	0	0	0	0

जब पूछा गया कि, क्या बच्चों को कोई अन्य सौंदर्य साधन का उपयोग किया जाता है, तब पूरे तीनों राज्यों में अधिकांश लोगों ने यह बताया कि, वे अपने बच्चों के लिए कोई सौंदर्य साधन का उपयोग नहीं करते।

तालिका 87: अन्य सौंदर्य-साधन उपयोग करने का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई कारण नहीं	29.4	15.4	7.6	16.6
2.	सुंदरता	22.3	7.7	26.8	19.4
3.	रिवाज	0.7	2.2	9.9	4.4
4.	स्वास्थ्य	28.7	4.0	10.5	14.6
5.	कोई अन्य कारण	0	1.8	0.3	0.7

सौंदर्य साधन उपयोग करने का कारण यह बताया गया कि, अधिकांशत:, मिजोरम में (29.4%) तथा मेघालय में (15.4%) कोई वजह नहीं बतायी। त्रिपुरा तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (19.4%) तथा (26.8%) सुंदर दिखने के लिए उपयोग किया।

V. पहनावा

तालिका 88: बच्चे को पहनाए गये कपड़े

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई कपड़े नहीं पहनाए	1.0	2.6	1.0	1.5
2.	पुराने कपड़ों में लपेटा	26.0	31.5	31.8	29.8
3.	घर का बना ड्रैस	48.0	22.7	39.2	37.0
4.	नैपी	4.1	50.9	26.1	26.4
5.	रेडी मेड ड्रेस	58.1	62.6	59.6	60.0
6.	शर्ट	65.5	39.6	14.6	39.4
7.	पैंट	44.3	32.2	9.9	28.3
8.	फ्रॉक	14.5	39.9	11.1	21.2
9.	टी-शर्ट	39.5	26.7	2.5	22.4
10.	अन्य कुछ	1.0	5.9	1.3	2.6

बच्चों के कपड़ों के बारे में यह पाया गया कि, अधिकांश लोगों मिजोरम में (65.5%) कुर्ता पहनाया। मिजोरम में (58.1%), मेघालय में (62.6%) तथा त्रिपुरा में (59.6%) लोगों ने, तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (60%) रेडीमेड ड्रैस पहनाए।

VI. नैपियों का विवरण

तालिका 89: गंदे होने पर नैपी बदलना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	85.8	95.1	67.6	83.2
2.	नहीं	14.2	4.9	32.4	16.8

संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र के तीन राज्यों में भी बच्चे की नैपी गंदे होने पर अधिकांश लोगों ने नैपी बदल दी हालांकि, त्रिपुरा में कुछ हद तक यह कम था।

तालिका 90: नैपी का आकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	त्रिकोण	43.9	74.1	50.8	57.6
2.	चौकोन	55.2	25.1	9.4	31.2
3.	अन्य कोई	0.9	0.8	39.8	11.8

मिजोरम में प्रयुक्त नैपी (55.2%) चौकोनी आकार की थी। जबकि, मेघालय में (74.1%), त्रिपुरा में (50.8%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (57.6%) त्रिकोण आकार की नैपी प्रयुक्त की गई।

तालिका 91: नैपी के लिए प्रयुक्त सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कपड़ा	26.7	96.3	53.8	57.9
2.	वाणिज्यिकी रूप से उपलब्ध	45.7	8.4	5.7	21.3
3.	अन्य कुछ	0.7	4.8	0.3	1.8

यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकांश लोग वाणिज्यिकी रूप से उपलब्ध नैपी (45.7%), मेघालय में (96.3%) त्रिपुरा में (53.8%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (57.9%) लोगों ने कपडे की नैपी का उपयोग किया।

VII. बच्चों के लिए प्रयुक्त वस्तुएँ

तालिका 92: बच्चे का सामान

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	टोपी	17.9	24.5	8.9	16.8
2.	कमर बैंड	1.0	1.5	28.0	10.8
3.	कलाई बैंड	2.0	0	30.9	11.7
4.	अन्य कुछ	0.7	0.4	22.9	8.5

मिजोरम में (17.9%), मेघालय में (24.5%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (16.8%) लोगों ने बच्चों को टोपी पहनाई। त्रिपुरा में (30.9%) अधिकांश लोगों ने बच्चों के लिए कलाई बैंड पहनाये।

तालिका 93: इन चीजों को पहनने का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई कारण नहीं	10	57	23	90
2.	खूबसूरती के लिए	38	1	31	170
3.	बुराई को दूर करने के लिए	-	19	90	109
4.	भाग्योदय के लिए	2	0	6	8
5.	विशेष महत्व बढ़ाने के लिए	24	22	31	77
6.	सांस्कृतिक प्रथा	2	26	4	32
7.	कोई अन्य	5	1	2	8

यह रिपोर्ट किया गया कि, मिजोरम में (38%) लोग खुबसूरती के लिए गहने पहनते हैं जबकि, इनमें से (24%) विशेष महत्व बढ़ाने के लिए पहनते हैं। मेघालय में (57%) लोगों ने गहने पहनने का कोई विशेष कारण नहीं बताया। त्रिपुरा में (90%) लोगों ने बुराई को दूर करने के लिए गहने पहने थे।

तालिका 94: बुराई दूर होने के लिए पहने जाने वाले आभूषण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	31.2	15.8	2.9	16.3
2.	तावीज़	0	8.1	18.2	8.9
3.	काला धागा	0.3	6.2	22.0	9.9
4.	अन्य कुछ	0	1.5	13.1	5.1

मिजोरम में लगभग (31.2%) तथा मेघालय में (15.8%) बुराई को दूर करने के लिए कोई आभूषण नहीं पहना। बुराई से दूर रखने के लिए त्रिपुरा में (22%) काला धागा पहना। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में लगभग 16.3% माताओं ने बुराई को दूर करने के लिए कोई आभूषण नहीं पहने।

तालिका 95: भाग्योदय के लिए पहने जाने वाले आभूषण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	30.4	21.6	6.7	19.3
2.	लक्की चार्म	2.7	1.5	2.5	2.3
3.	काला धागा	6.4	82.9	11.8	7.2
4.	अन्य कुछ	0.3	0.4	5.1	2.0

मिजोरम (30.4%) लोगों ने, मेघालय (21.6%) लोगों ने तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य (19.3%) के अधिकांश लोगों ने भाग्योदय के लिए कोई आभूषण नहीं पहना। त्रिपुरा में 11.8% माताओं ने भाग्योदय के लिए काला धागा पहना।

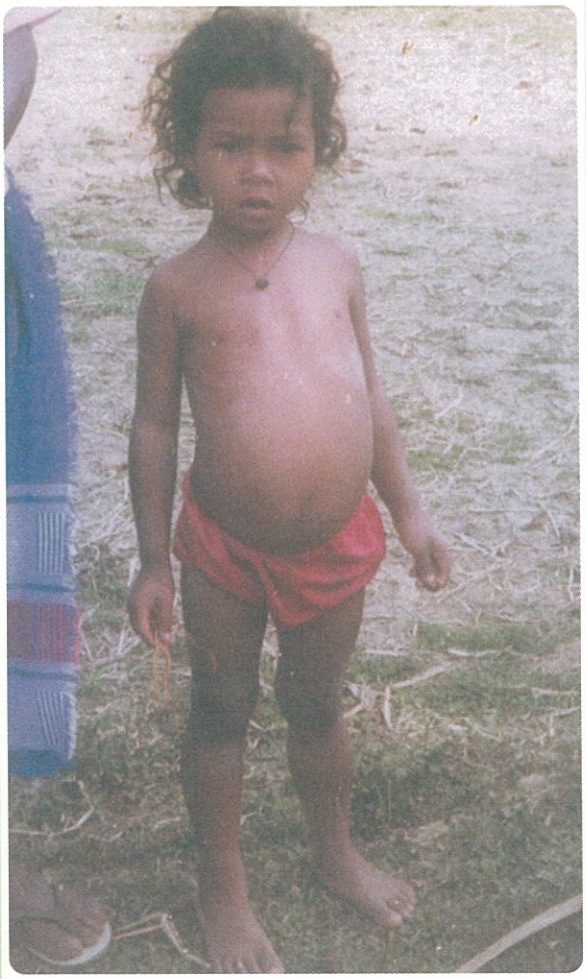

कुपोषण के इलाज के लिए बच्चे को पहनाया गया तलिस्मा

दृष्टि क्षति वाला बच्चा

VIII. छेदन

तालिका 96: छेदन करने वाले शरीर के भाग

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	किसी ने छेदन नहीं किया	63.5	47.6	15.6	41.6
2.	कर्ण पालि	3.4	27.5	34.4	21.9
3.	नाक	0.3	0	8.0	2.9
4.	अन्य कोई	0	0	0.3	0.1

मिजोरम में अधिकांश (63.5%) लोगों में, मेघालय में (47.6%) लोगों में, तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (41.6%) लोगों में शरीर के किसी भी भाग को छेदन करने की प्रथा नहीं थी। त्रिपुरा में (34.4%) बच्चों के कर्ण पालि छेदन की प्रथा है।

तालिका 97: छेदन की आयु

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई समारोह नहीं	98.4	96.7	82.8	91.1
2.	नामकरण महोत्सव	0	3.3	10.4	5.7
3.	मुंडन	0	0	53.1	1.6
4.	कोई अन्य	1.6	0	3.0	1.6

परिणाम यह बताते हैं कि, अधिकाश प्रतिशत बच्चों का छेदन कोई विशिष्ट समारोह में नहीं किया जाता है। मिजोरम (98.4%), मेघालय (96.7%), त्रिपुरा (82.8%) एवं संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (91.1%)।

तालिका 98: छेदन किसके द्वारा किया जाता है

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मामा	20.0	8.2	17.6	14.4
2.	सुनार	40.0	20.6	12.6	16.8
3.	कोई अन्य	40.0	71.2	69.8	68.8

मिजोरम में साधारणत: (40%) छेदन सुनार द्वारा किया जाता है और अन्य (40%)। मेघालय में (20.6%) छेदन का कार्य सुनार द्वारा किया जाता है। त्रिपुरा में (69.8%)अन्यों द्वारा जैसे चाचा तथा दादा द्वारा किया जाता है। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में ज्यादातर(68.8%) छेदन अन्यों द्वारा किया जाता है।

IX. खिलाना/ पिलाना

तालिका 99: जन्म के तुरंत बाद दूध पिलाना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	57	1	9	67
2.	शहद	3	3	141	147
3.	माँ का दूध	138	109	145	392
4.	ग्लूकोज	72	37	15	124
5.	जडी बूटी	5	119		124
6.	कोई अन्य				

मिजोरम में (50.1%) से ज्यादातर बच्चों को माँ का दूध पिलाया गया। मेघालय में जन्म के तुरंत बाद नवजात को ज्यादातर (44.2%) माताओं ने जडी बूटी दी। त्रिपुरा में (46.7%) माताओं ने तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य क्षेत्र में (45.9%) माताओं ने नवजात को जन्म के तुरंत बाद माँ का दूध पिलाया ।

तालिका 100: पहली बार दूध देने का समय

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	जन्म से एक घंटे के अंदर	141	72	180	393
2.	जन्म के बाद कुछ घंटों में	119	124	103	351
3.	एक दिन के बाद	22	48	8	78
4.	कोई अन्य	5	23	13	41

परिणाम यह दर्शाते हैं कि, मिजोरम में अधिकांश (49.1%), त्रिपुरा में (58.3%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य (7.8%) को जन्म के बाद एक घंटे के अंदर दूध पिलाया गया। मेघालय में यह पाया गया कि, 46.4% बच्चों को जन्म के कुछ घंटों के बाद ही दूध पिलाया गया।

तालिका 101: दूध पिलाना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ का दूध	226	215	95	140
2.	बाहरी दूध	22	23	1	91
3.	दोनो भी	54	36		

दूध पिलाने के बारे में यह देखा गया कि, अधिकांश बच्चों को मिजोरम में (76.4%), मेघालय में (78.8%), त्रिपुरा में (93%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्यक्षेत्र में (83%) माँ का दूध पिलाया गया।

इस बच्चे को बार बार सर्दी व बुखार आता है

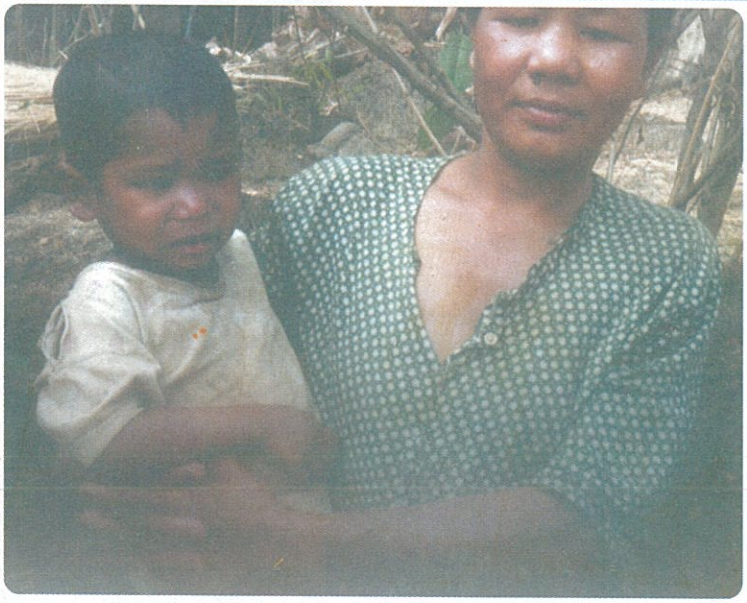

बहुत पुराने कपड़े पहना हुआ बच्चा

बुराई को दूर करने के लिए तलिस्मा पहनाया जाता है

बच्चे के साथ बातचीत करती माँ

तालिका 102: माँ का दूध पिलाने का कारण (%)

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	0.3	1.9	0.9	1.0
2.	बच्चे के लिए उपयुक्त	43.2	70.6	17.1	42.4
3.	स्वास्थ्य के लिए अच्छा है	80.7	53.1	50.3	61.3
4.	प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता	19.5	21.9	38.2	24.4
5.	अन्य कोई	0.3	0.7	0.6	0.5

अधिकांश ने यह रिपोर्ट किया कि, माँ के दूध से बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, मिजोरम में (80.7%), त्रिपुरा में (50.3%) एवं संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (61.4%)। केवल मेघालय में अधिकांश रिपोर्ट बताते हैं कि, माँ का दूध बच्चों के लिए उपयुक्त होता है (70.7%)।

तालिका 103: माँ के दूध के बदले अन्य दूध देने का कारण (%)

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	किसी अन्य दूध का प्रयोग नहीं	61.4	65.5	33.7	52.8
2.	स्वास्थ्य के लिए अच्छा	24.6	16.4	51.9	31.8
3.	प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है	10.8	6.2	12.1	9.8
4.	अन्य कोई	2.3	11.7	0.9	4.7

मिजोरम में (61.5%) और मेघालय में (65.5%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (52.8%) माताएँ अन्य दूध का प्रयोग नहीं करतीं जबकि, त्रिपुरा में (51.9%) अधिकांश लोग बताते हैं कि, स्तनपान बच्चे के स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।

तालिका 104: ऊपरी दूध के प्रकार (%)

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	टिन का दूध	6.4	22.0	15.9	14.6
2.	गाय का दूध	32.4	10.6	69.7	39.0
3.	भैंस का दूध	0.7	0	1.0	0.6
4.	कोई अन्य	51.0	8.1	9.2	22.9

यह पाया गया कि, मिजोरम में (51%) लोग बच्चों के लिए ऊपरी दूध का प्रयोग करते हैं। अन्य दूध में बकरी का दूध शामिल है। मेघालय में लगभग (22%) ने बच्चों को टिन का दूध पिलाया। त्रिपुरा में अधिकतर बच्चों को गाय का दूध दिया गया। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में अधिकांश (39%) ऊपरी दूध के रूप में गाय का दूध दिया गया।

X. स्तनपान कराना

तालिका 105: किसके द्वारा स्तनपान कराया जाता है-

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	जन्म देने वाली माँ	93.4	99.2	99.0	97.2
2.	दूध पिलाने वाली कोई भी माँ	6.6	0.8	1.0	2.8

सभी तीनों राज्यों में अधिकांश बच्चो को जन्म देने वाले माँ ने स्तनपान कराया। मिजोरम (93.4%), मेघालय (99.2%), त्रिपुरा (99%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र (97%)।

तालिका 106: दूध पिलाते समय माँ को दिया जाने वाला विशेष आहार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	फल	33.8	41.0	17.8	30.4
2.	मांस	33.8	38.8	16.2	29.1
3.	कोई अन्य	8.8	15.4	60.8	29.3

स्तनपान कराते समय विशेष आहार के संबंध में, यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकांशत: 33.8% लोगों ने माँ के आहार में फल शामिल किए, 33.8% लोगों ने मांस शामिल किया। मेघालय में अधिकांशत: (41%) लोगों ने अपने आहार में फल शामिल किये। त्रिपुरा में (60.8%) लोगों ने स्तनपान कराने वाले माँ के आहार में भिन्न-भिन्न तरह के फल शामिल किये हैं। इस आहार में पपीता, मसालेयुक्त भोजन, घी, सूखे मेवे, जड़ और कंद तथा ब्रेड शामिल है। संपूर्ण पूर्वोत्तर में (30.4%) लोगों ने दूध पिलाने वाली माँ के आहार में फल शामिल किये। इस आहार में पपीता, मसालेयुक्त भोजन, घी, सूखे मेवे, जड़ और कंद तथा ब्रेड शामिल है।

तालिका 107: विशेष आहार लेने का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अधिक दूध स्रवण में मदद	20.7	24.2	59.6	27.6
2.	माँ के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है	30.7	45.1	16.2	30.0
3.	बच्चे के लिए अच्छा है	14.9	13.9	18.8	16.0
4.	कोई अन्य	0.3	0.4	1.0	0.6

सभी तीनों राज्यों में विशेष आहार लेने का कारण भिन्न हैं। मिजोरम में बताया गया कारण यह है कि, यह माँ के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है (30.7%) और बताये गये अन्य कारण यह हैं कि, ये अधिक दूध स्रवण में मदद करता है (20.7%)। मेघालय में अधिकतर लोगों ने बताया कि, यह माँ के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है (45.1%) और त्रिपुरा में बताया गया कि, अधिक दूध स्रवण में मदद करता है (59.6%)।

मिर्गी की रोकथाम के लिए तलिस्मा पहनाया गया है

बच्चे को कपड़े की झोली में डालकर ले जाती हुई माँ

बच्चे को कमर बंद से बांध कर ले जाती हुई माँ

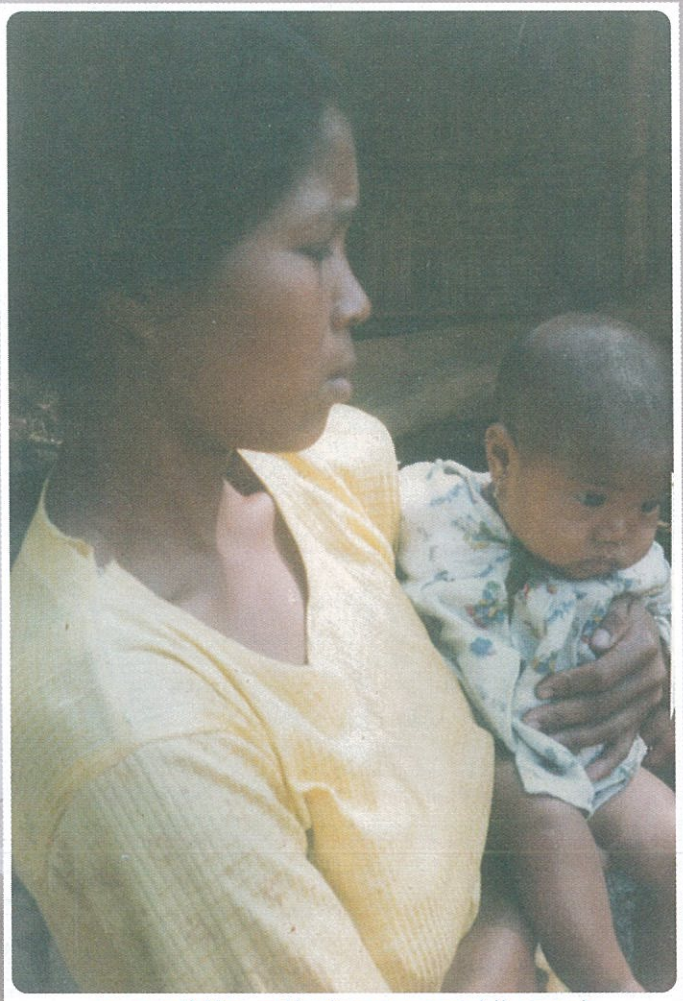

एक अप्रशिक्षित व्यक्ति के द्वारा बहुत छोटी आयु मे
कान छेदन करवाया जाता है

तालिका 108: दूध पिलाते समय परिहार्य आहार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	तेलीय आहार	9.5	25.3	78.0	38.7
2.	मसाले युक्त आहार	40.9	54.9	85.0	60.9
3.	अन्य कोई आहार	3.7	7.7	0	33.6

मिजोरम में (40.9%), मेघालय में (54.9%) तथा त्रिपुरा में (85.0%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (60.9%) माँ के द्वारा परिहार्य आहार है मसालेयुक्त भोजन ।

तालिका 109: इन आहारों के परिहार्यण का कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक	8.8	25.3	38.9	24.6
2.	बच्चे के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक	38.9	48.0	64.0	50.6
3.	कोई अन्य	0.7	0.7	0.3	0.6

इन आहारों का परिहार्यण का कारण, अधिकांश ने बताया कि, यह बच्चे के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मिजोरम में (38.9%), मेघालय में (48%) एवं त्रिपुरा में (64%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (50.6%)।

XI. दूध छुडाना

तालिका 110: बच्चों के आहार में सम्मलिति दूध छुडाने वाले आहार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	दाल	68.2	40.3	77.4	62.9
2.	चावल	80.4	83.5	75.2	79.5
3.	गेहूँ	11.1	1.8	25.2	13.3
4.	फल	18.2	34.4	16.6	22.7
5.	सब्जियाँ	35.8	44.4	35.7	38.3
6.	बाजार में उपलब्ध आहार	12.5	33.7	11.5	18.7
7.	कोई अन्य	0	0	0	0

अधिकांशत: दिये जाने वाला आहार है चावल, मिजोरम में (80.4%), मेघालय में (83.5%) और त्रिपुरा में (75.2%)। अन्य दूध छुडाने वाले आहार में दाल और सब्जियाँ शामिल हैं।

तालिका 111: दूध छुडाने में परिहार्य आहार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ भी नहीं	4.1	31.9	5.1	13.0
2.	मसाले	68.6	52.0	76.8	66.4
3.	मांस	44.3	21.6	60.8	43.1
4.	कोई अन्य	0	1.1	1.3	0.8

दूध छुडाते समय बच्चे के आहार में परिहार्य आहार में यह पाया गया कि, सभी तीनों में राज्यों में अधिकतर मसाले परिहार्य करते हैं। मिजोरम (68.6%), मेघालय (52%), त्रिपुरा (76.8%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (66.4%)।

तालिका 112: विशेष आहार परिहार्य

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पाचन समस्याएँ	46.3	23.1	15.9	28.3
2.	बच्चे के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक	26.4	38.5	65.0	43.8
3.	बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं	43.6	3.7	11.1	19.7
4.	अन्य कोई	0	0	0.3	0.1

मिजोरम में लगभग 46.3% ने रिपोर्ट किया कि, दूध छुडाने में विशेष आहार परिहार्य किया गया क्योंकि, ऐसे आहार से पाचन समस्याएँ होती हैं। मेघालय में (38.5%), त्रिपुरा में (65%), तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर में (43.8%) ने कहा कि, कुछ आहार बच्चे के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं।

तालिका 113: दूध छुडाने के लिए सूचना के स्रोत

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पारम्परिक प्रथा	55.7	49.8	29.0	44.4
2.	माँ	32.8	59.0	33.4	41.1
3.	दादी या नानी	23.3	14.3	21.0	19.7
4.	रेडियो	0.7	0.4	4.5	1.9
5.	डॉक्टर	3.7	0.4	11.5	5.4
6.	समाचार पत्र	1.0	0	1.0	0.7
7.	टेलीविज़न	0.7	0	0.6	0.5
8.	अन्य कोई	0.7	0.4	0	0.3

मिजोरम में (55.7%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर में (44.4%) ने दावा किया कि, दूध छुडाने के आहार में सूचना का स्रोत पारम्परिक प्रथा बतायी गयी। मेघालय (59%) तथा त्रिपुरा (33.4%) ने बताया कि, दूध छुडाने की सूचना का स्रोत माँ है।

तालिका 114: खिलाने के लिए बर्तन

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	थाली	40.5	51.3	53.2	48.4
2.	कटोरी	54.1	64.5	47.5	54.9
3.	पत्ते	0.3	14.7	0.3	4.8
4.	अन्य कोई	0	2.9	3.5	2.2

अधिकांश लोगों ने बताया कि, बच्चों को कटोरी में खिलाते हैं, मिजोरम में (54.1%), मेघालय में (64.5%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (54.9%)। त्रिपुरा में (53.2%) अधिकतर बच्चों को थाली में खाना खिलाते हैं और 47.5% कटोरी में खिलाते हैं।

तालिका 115: बच्चे का खाना बनाने के लिए ध्यान दिये जाने वाले कारक

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मात्रा	17.2	45.4	75.2	46.5
2.	रूप रंग	3.4	4.0	27.1	12.0
3.	मसाले परिहार्य	42.2	18.7	43.0	75.3
4.	बच्चे के पसंद	39.9	30.0	36.0	35.4
5.	खाने के लायक	3.7	5.5	7.3	5.5
6.	अन्य कोई	9.8	0	0.3	3.4

बच्चे का आहार तैयार करते समय अधिकतर पाये गये कारकों में मिजोरम में मसाले से परहेज (42.2%)। मेघालय में (45.4%) और त्रिपुरा में (75.2%) अधिकांश ने बच्चे के भोजन तैयार करने के मुख्य कारकों में भोजन की मात्रा पर ध्यान दिया। संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में 75.3% ने बच्चे के आहार में मसालों का परहेज किया।

XII. दूध औद दूध के उत्पादन

तालिका 116: दिये गये दूध के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	टिन का दूध	8.1	21.6	16.2	15.2
2.	गाय का दूध	37.5	11.0	68.8	48.4
3.	भैंस का दूध	0	0	1.0	0.3
4.	अन्य कोई	150.7	0	2.5	17.9

यह पाया गया कि, अधिकांश बच्चों को मिजोरम में (37.5%), त्रिपुरा में (68.8%) एवं संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (48.4%) को गाय का दूध दिया गया। मेघालय में (21.6%) अधिकांश बच्चों को टिन का दूध दिया गया।

चर्म रोग से पीडित बच्चा

किसी भी बिमारी के लिए स्थानीय दवाइयों पर परिवार निर्भर होते हैं

XIII. सामान्य बिमारी में आहार की पद्धतियाँ

तालिका 117: बच्चे के आहार में शामिल किये गये पदार्थ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	ब्रेड	23.0	26.4	11.5	19.9
2.	दलिया	14.5	0.4	19.7	12.0
3.	छाँछ	4.4	0.7	9.9	5.2
4.	सब्जियाँ	33.4	46.9	29.9	36.4
5.	फल	29.7	48.4	18.5	31.5
6.	चावल	82.8	68.9	53.8	68.2
7.	दाल	66.9	44.0	53.5	55.0
8.	अन्य कुछ	9.5	20.5	31.2	20.6

मिजोरम (82.8%), मेघालय में (68.9%), और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (68.2%) और त्रिपुरा में (53.8%) में अति सामान्य रूप से चावल बच्चे के आहार में सम्मिलित किया गया।

तालिका 118: बच्चे के आहार में परहेज करने वाले आहार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	मसाले	69.9	56.0	55.1	60.4
2.	मांसाहार	44.9	40.3	61.8	49.5
3.	तेलीय आहार	11.1	49.8	68.8	43.6
4.	अन्य कोई	0.3	1.5	1.6	1.1

बच्चो के आहार में परहेज किये जाने वाले पदार्थों में अधिकांशत: मसालों का परहेज, मिजोरम में (69.9%), मेघालय में (56%), पूर्वोत्तर राज्य में (60.4%)। त्रिपुरा में यह रिपोर्ट किया गया कि, (68.8%) बच्चों के खाने में तेलीय आहर से परहेज किया जाता है।

XIV. भोजन समय की प्रथाएँ

तालिका 119: भोजन के समय की प्रथाएँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	आवाज किये बिना भोजन करना	37.8	41.8	17.2	31.7
2.	भोजन करते समय बीच में पानी न पीना	16.6	37.4	35.4	29.7
3.	दाएँ हाथ से खाना	41.9	50.5	26.8	39.2
4.	परोसा हुआ पूरा भोजन खाना	66.9	49.5	24.8	46.5
5.	खाने से पहले हाथ धोना	51.4	50.2	35.4	45.3
6.	ठीक से चबाना	57.1	31.1	29.6	39.3
7.	अपने आप खाना	42.9	45.1	18.8	35.0
8.	खाने से पहले प्रार्थना करना	58.4	14.3	1.3	24.5

मिजोरम(66.9%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य (46.5%) में साधारणत: पायी गयी प्रथा 'परोसा हुआ भोजन पूरा खाना'। मेघालय में (50.5%) और (50.2%) लोगों में यह रिपोर्ट किया कि, दाएँ हाथ से खाना और खाने से पहले हाथ धोना अधिकांश लोगों में पाया गया। त्रिपुरा में 35.4% भोजन करते समय बीच में पानी नहीं पीने की प्रथा तथा खाने से पहले हाथ धोने की प्रथा 35.4% दिखाई दी।

तालिका 120: एक साथ मिलकर भोजन करने वाले परिवार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	एक साथ भोजन करने वाले परिवार	94.5	31.0	34.2	53.8
2.	एक साथ भोजन न करने वाले परिवार	5.5	69.0	65.8	46.2

एक साथ मिलकर खाने के बारे में, यह पाया गया कि, मिजोरम में (94.5%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (53.8%) अधिकांश लोग एक साथ मिलकर भोजन करते हैं। मेघालय में (69%) तथा त्रिपुरा में (65.8%), अधिकांश परिवार एक साथ भोजन नहीं करते हैं।

तालिका 121: बच्चों को खिलाने वाले व्यक्ति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ	98.3	90.7	86.3	91.6
2.	पिता	1.0	1.5	2.5	1.7
3.	अन्य कोई	0.7	7.8	11.1	6.7

परिणाम यह दर्शाते हैं कि, अधिकतर बच्चों को माँ खिलाती है (98.3%), मेघालय (90.7%), त्रिपुरा (86.3%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र (91.6%)।

तालिका 122: खिलाते समय सामना करने वाली समस्याएँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	17.2	11.7	4.5	11.0
2.	खाने में रुचि नहीं	40.9	13.6	21.0	25.4
3.	जो खाना चाहिए वह नहीं खाना	20.6	13.2	26.1	20.3
4.	चयनित पदार्थ खाना	22.0	19.8	26.1	22.8
5.	खाने के लिए ज्यादा समय लेना	14.5	26.4	18.8	19.7
6.	खाने के लिए सताना	3.4	9.9	1.9	4.9
7.	कुछ अन्य	16.9	0.7	0.3	6.0

खिलाते समय सामना किये गये समस्याओं के बारे में, यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकांश (40.9%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (25.4%) ने यह रिपोर्ट किया कि, बच्चें ने खाने में कोई रुचि नहीं दिखायी। मेघालय में (26.4%), अधिकतर यह रिपोर्ट किया गया कि, बच्चे खाने के लिए बहुत समय लेते हैं। त्रिपुरा में मुख्यत: बच्चों के चयनित पदार्थ खाने की समस्या का सामना करना पड़ा (26.1%)।

तालिका 123: इन समस्याओं का सामना करने के उपाय

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	17.9	35.5	32.5	28.5
2.	आकर्षक/भूख बढ़ाने वाला आहार तैयार करना	20.9	2.9	18.5	14.5
3.	बच्चे के पसंद के अनुसार खिलाना	21.3	26.0	30.9	26.2
4.	जबरदस्ती खिलाना	36.1	15.4	14.0	21.9
5.	थोडा थोडा खिलाना	10.1	5.9	13.7	10.1
6.	कुछ अन्य	0	1.8	0	0.6

खिलाने में उत्पन्न समस्याओं को सुलझाने के उपायों में, अधिकांश मिजोरम में (36.1%) ने यह बताया कि, बच्चों को जबरदस्ती खिलाना पड़ता है। मेघालय में (35.5%) और त्रिपुरा में (32.5%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (28.5%) बच्चों को खिलाते समय सामना करने वाली समस्याओं के लिए कोई उपाय नहीं किया गया।

XV. स्वास्थ्य

तालिका 124: प्रतिरक्षीकरण का स्थाना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	प्रतिरक्षीकरण नहीं किया गया	1.7	15.9	10.5	9.3
2.	पी.एच.सी.	76.6	50.4	46.6	57.7
3.	अस्पताल	19.7	7.0	40.3	73.1
4.	शिविर	2.1	26.7	2.6	9.9

मिजोरम में अधिकांश (76.6%), मेघालय में (50.4%) और त्रिपुरा में (46.6%) बच्चों को प्रतिरक्षीकरण पीएचसी में करवाया गया। जबकि, संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (73.1%), अधिकांश बच्चों को अस्पताल में प्रतिरक्षीकरण करवाया गया।

तालिका 125: दिये गये वैक्सीन

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बी.सी.जी.	97.3	65.6	73.2	78.9
2.	हेपिटाइटिस	0.3	9.5	5.7	5.1
3.	ओरल पोलियो	97.6	76.9	89.2	88.2
4.	डी.पी.टी.	71.3	40.7	53.2	55.6
5.	मीजिल्स	70.3	23.4	19.1	37.6
6.	एम.एम.आर.	4.7	5.9	13.1	8.0
7.	प्रथम बूस्टर (डी.पी.टी. व ओ.पी.वी.)	89.5	1.8	14.0	35.6
8.	टईफाइड	36.1	0.7	2.5	13.3
9.	हैमोफिलस इन्फ्लूयेन्जा टाईप बी	1.4	0	1.0	0.8

मिजोरम में अधिकांश बच्चों को बी.सी.जी. (97.3%) और ओरल पोलियो (97.6%) दिया गया। मेघालय में (65.6%) तथा त्रिपुरा में (73.2%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (78.9%) को बी.सी.जी. वैक्सीन दिया गया। मेघालय में (76.9%), त्रिपुरा में श(89.2%), संपूर्ण पूर्वोत्तर में (88.2%), अधिकांश बच्चों को ओरल पोलियो दिया गया।

तालिका 126: बच्चे बीमार पडने पर कहाँ ले जाते हैं

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	पी.एच.सी.	44.6	56.0	54.8	51.8
2.	धार्मिक संस्थान	0.3	0.4	4.5	1.8
3.	वैकल्पिक चिकित्सा	0.7	14.3	2.9	5.7
4.	अप्रशिक्षित व्यक्ति	0	21.2	1.0	6.9
5.	अस्पताल	62.2	8.1	33.1	35.1
6.	अन्य कोई	1.0	18.7	3.2	7.2

बच्चों के बीमार पर ज्यादातर ले जाने वाले स्थान अस्पताल हैं, मिजोरम में (62.2%)। मेघालय(56%), त्रिपुरा में (54.8%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर में (51.8%) को पीएचसी को रेफर किया गया।

तालिका 127: बच्चे के स्वास्थ्य-परामर्शदाता

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	डॉक्टर	83.9	46.1	88.0	76.0
2.	नर्स	12.2	33.0	1.4	13.3
3.	एमपीएचडब्ल्यू	1.8	2.1	1.4	1.7
4.	स्थानीय हकीम	0.7	17.8	2.4	5.6
5.	विश्वास दिलाने वाले	0	0	3.4	1.3
6.	काला जादू करने वाले	0	0	1.0	0.4
7.	कोई अन्य	1.4	1.0	2.4	1.7

अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार बच्चे के स्वास्थ्य परामर्शदाता, मिजोरम में (83.9%), मेघालय में (46.1%), त्रिपुरा में (88%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (76%) डाक्टर थे।

तालिका 128: बीमार पडने का अंतराल

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	महीने में	3.4	16.9	31.0	10.4
2.	2-3 महीने में एक बार	12.7	32.4	34.5	20.0
3.	6 महीने में एक बार	79.2	46.5	22.4	63.8
4.	कोई अन्य	4.7	4.2	12.1	5.8

बीमार पडने के अंतराल के संदर्भ में, यह पाया गया कि, अधिकांश बच्चे, मिजोरम में (79.2%), मेघालय में (46.5%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (63.8%) 6 महीने में एक बार बीमार पड़ते हैं। त्रिपुरा में (34.5%), यह पाया गया कि, अधिकांश बच्चे 2-3 महीनों में एक बार बीमार पडते हैं और कुछ कम लोग (31%) महीने में एक बार बीमार पडते हैं।

तालिका 129: बच्चे का क्रियकलाप स्तर

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	सतर्क	56.4	71.1	8.6	43.9
2.	दिमाग से तेज	35.8	26.7	2.2	21.1
3.	सुस्त	4.4	0.7	1.6	2.3
4.	प्रत्युत्तर देने में धीमा	7.8	7.0	2.2	5.5
5.	पिछली क्रियकलापों को जल्द याद करना	20.9	26.0	0	15.1

यह पाया गया कि, अधिकांश बच्चे मिजोरम में (56.4%), मेघालय में (71.1%), त्रिपुरा में (8.6%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (43.9%) सतर्क रहते हैं।

श्रवण क्षति और वाक् विकास में विलम्ब वाला बच्चा

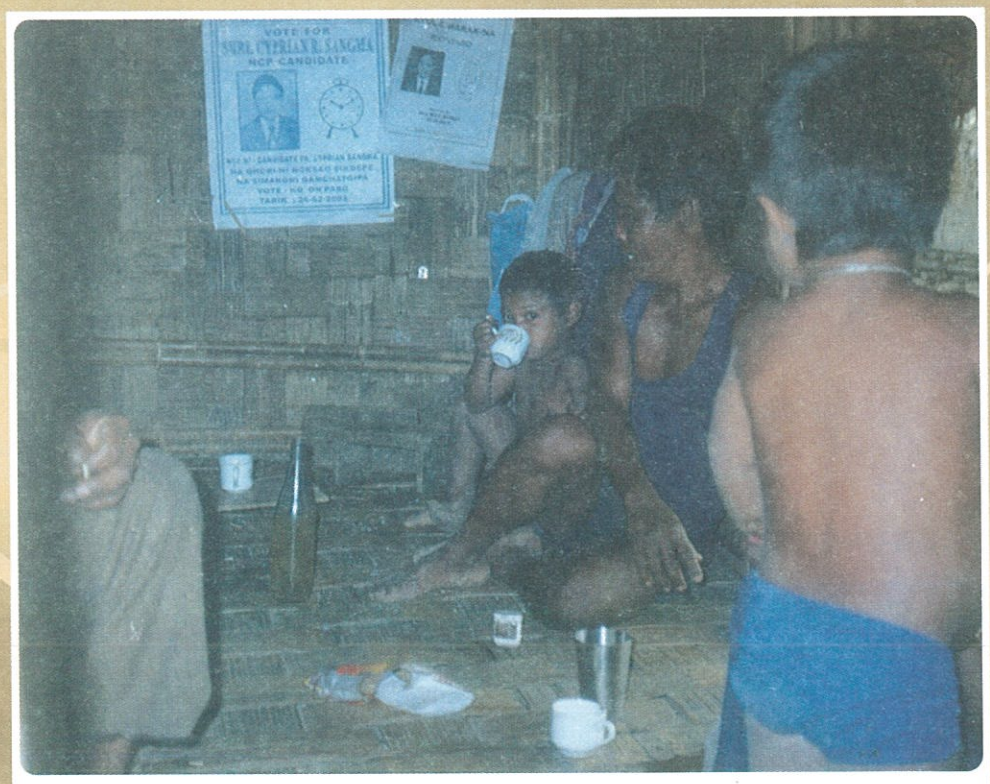

बच्चों को साथ मे बिठाकर हान्डिया पीने के लिए पुरुष प्रोत्साहित करते हैं

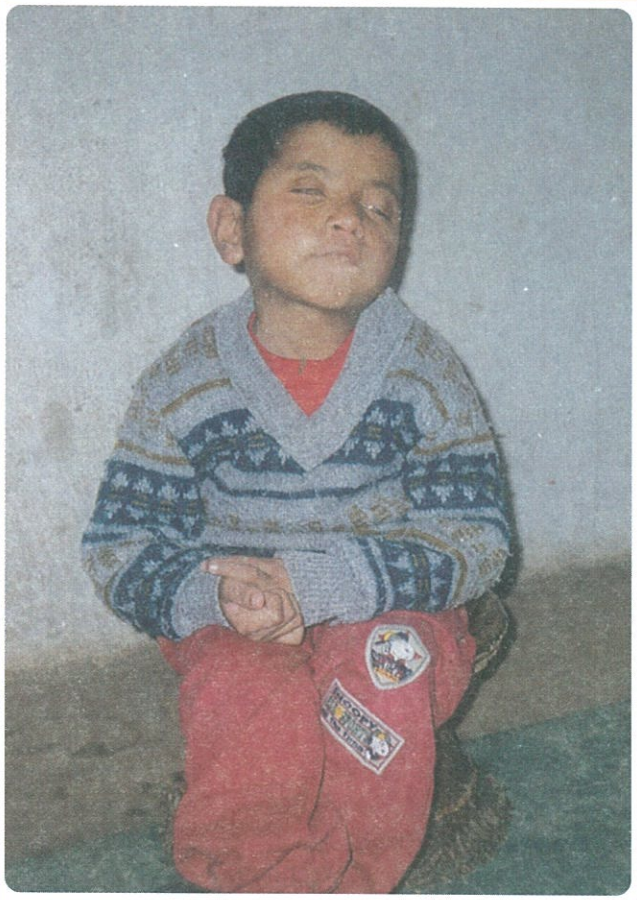

विकासात्मक विलम्ब वाला बच्चा

यह चार वर्षीय बच्चा कमर में सूजन के कारण चल नहीं पाता

तालिका 130: बीमारी में सामान्य प्रथाएँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	1.0	0	0	0.3
2.	नियमित रूप से आहार न लेना	27.4	1.8	6.1	11.9
3.	नहीं नहाना	49.7	33.0	15.0	32.2
4.	गर्म कपडे पहनना	78.7	72.2	9.6	52.1
5.	पीने के लिए गर्म पानी	28.4	14.3	0.6	14.2
6.	पेय पदार्थ लेना	15.5	9.2	3.8	9.4
7.	पारम्परिक उपचार	4.4	25.6	14.3	14.5
8.	डॉक्टर से परामर्श	73.6	34.8	75.2	62.2
9.	कोई अन्य	1.0	2.2	2.2	1.8

बीमारी के दौरान की सामान्य प्रथाओं में, यह पाया गया कि, मिजोरम में (78.7%) तथा मेघालय में (72.2%) बच्चों के लिए गर्म कपडे पहनाए। त्रिपुरा में (75.2%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर में (62.2%) मिजोरम में (73.6%), मेघालय में (34.8%), ने डाक्टर से परामर्श लिया।

तालिका 131: पाचन सुधारने के लिए लिये जाने वाले पेय पदार्थ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई पेय पदार्थ नहीं लिया गया	28.4	20.1	46.8	32.4
2.	जडी बूटी	5.1	33.3	18.8	18.7
3.	टॉनिक	11.5	3.3	53.1	6.7
4.	अन्य कोई	41.6	0	0.6	14.2

यह पाया गया कि, मिजोरम में अधिकतर माताओं (28.4%), त्रिपुरा में (46.8%), तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर में (32.4%) ने बच्चे के पाचन सुधारने के लिए कोई पेय पदार्थ नहीं दिया। मेघालय में लगभग 33.3% ने बच्चे के पाचन में सुधार लाने के लिए जडी बूटी का उपयोग किया। त्रिपुरा में 53.1% इसके लिए टानिक का उपयोग किया।

तालिका 132: भूख बढ़ाने के पेय पदार्थ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई पेय पदार्थ नहीं लिया गया	31.1	19.8	55.1	36.1
2.	जडी बूटी	3.0	31.9	15.9	16.5
3.	टॉनिक	10.5	12.8	12.4	11.9
4.	अन्य कोई	36.5	1.1	2.9	13.6

त्रिपुरा में (55.1%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर में (36.1%) ने बच्चे के भूख बढ़ाने के लिए कोई पेय पदार्थ नहीं दिया। मेघालय में (31.9%) ने जडी बूटी दी। मिजोरम में (36.5%) लोगों ने फलों का रस, सूखे मेवे दिये।

XVI. शौच प्रशिक्षण

तालिका 133: शौच प्रशिक्षण प्रारंभ करने की आयु

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	1 वर्ष से कम	49.7	7.3	25.2	27.9
2.	1-2 वर्ष	16.2	12.1	31.8	20.5
3.	2 वर्ष के बाद	34.1	80.6	43.0	51.6

मिजोरम में यह रिकार्ड किया गया कि, एक वर्ष की आयु के अंदर शौच प्रशिक्षण आरंभ किया गया (49.7%)। मेघालय तथा त्रिपुरा में लगभग (80.6%) लोगों ने 2 वर्ष की आयु के बाद शौच प्रशिक्षण आरंभ किया।

तालिका 134: शौच प्रशिक्षण में प्रयुक्त पद्धतियाँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई विशेष पद्धति प्रयुक्त नहीं	31.4	4.0	16.2	17.6
2.	समय समय पर बच्चे को शौचालय ले जाना	39.2	24.9	8.0	23.7
3.	बच्चे को इंगित करने के लिए कहना	5.1	19.4	25.8	16.9
4.	बच्चे को डांटना	0.7	6.6	1.3	2.7
5.	अन्य कोई	0.7	12.8	0.6	4.4

शौच प्रशिक्षण में बच्चों को समय समय पर शौचालय ले जाना, मिजोरम में (39.2%), मेघालय में (24.9%), अति साधारण पद्धति थी। त्रिपुरा में (25.8%), शौचा प्रशिक्षण में बच्चों को इंगित करना सिखाना एक पद्धति थी। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में बच्चे को समय समय पर शौचालय ले जाना एक आम प्रथा ?ी (23.7%)।

तालिका 135: शौच नियंत्रित करने की आयु

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	1 वर्ष से कम	11.8	3.7	12.1	9.4
2.	1-2 वर्ष	29.1	21.6	25.2	25.4
3.	2 वर्ष के बाद	59.1	74.7	62.7	65.2

सभी तीनों राज्यों में मिजोरम (59.1%), मेघालय (74.7%) तथा त्रिपुरा में (62.7%) अधिकांश बच्चों ने 2 वर्ष की आयु के बाद शौच नियंत्रित करना सीख लिया।

तालिका 136: शौच प्रशिक्षण के दौरान समस्याओं का सामना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई समस्या का सामना नहीं किया गया	53.4	39.9	52.9	49.0
2.	ज़िद्दी	12.5	8.4	1.3	7.2
3.	सताने वाला	5.4	2.2	0.3	2.6
4.	परेशान करने वाला	1.7	3.3	0.3	1.7
5.	कोई अन्य	0	0.4	0.6	0.3

अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह रिपोर्ट किया कि, बच्चों के शौच प्रशिक्षण में किसी समस्या का सामना नहीं किया। यह पाया गया कि, 53.4% मिजोरम में, 39.9% मेघालय में, 52.9% त्रिपुरा में और 49% संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में बच्चों के शौच प्रशिक्षण के दौरान किसी समस्या का सामना नहीं किया।

तालिका 137: प्रयुक्त शौचालय के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	निर्मित शौचालय	26.3	15.2	56.2	33.6
2.	खुली जगह	30.8	82.9	26.4	39.0
3.	बच्चे के लिए संशोधित	35.6	1.0	11.8	21.9
4.	कोई अन्य	7.3	1.0	5.6	5.6

मिजोरम में अधिकांश (35.6%) बच्चों के लिए संशोधित शौचालय प्रयुक्त किया। मेघालय में 82.9% ने खुली जगह में और त्रिपुरा में 56.2% ने निर्मित शौचालय प्रयुक्त किया। सभी तीनों राज्यों में खुली जगह का प्रयोग अधिकतर उपयोग किया (39%)।

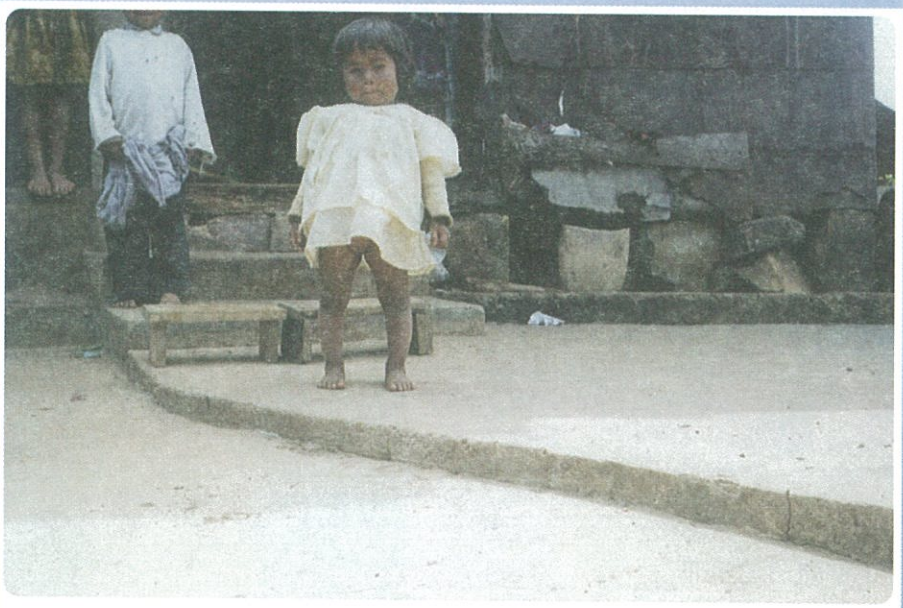

रीकेट्स् से पीडित 3 वर्ष 4 महीने का बच्चा

मानसिक मंदन और श्रवण दोष वाली एक 22 वर्षीय लडकी

XVII. सोने की आदतें

तालिका 138: नियमित समय पर सोने के लिए जोर देना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	57.6	80.6	91.2	73.0
2.	नहीं	42.4	19.4	8.8	27.0

सभी तीनों राज्यों में नियमित समय पर सोने की आदत है, मिजोरम में (57.6 %), मेघालय में (80.6 %), त्रिपुरा में (91.2 %)। बच्चों के अच्छे स्वस्थ्य के लिये नियमित समय पर सोना आवश्यक है।

तालिका 139: बच्चे को सुलाने की पद्धति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	6.8	2.2	4.8	4.6
2.	बाहों में झुलाना	43.2	45.4	26.8	38.1
3.	झूले में या पालने में झुलाना	4.1	2.2	8.0	4.9
4.	गाकर सुलाना	12.5	27.1	25.5	21.6
5.	थपथपाकर सुलाना	6.8	37.0	26.4	23.1
6.	अन्य कोई	34.8	28.6	6.4	22.8

बच्चों को सुलाने के लिए मिजोरम में 43.2 % अभिभावक बच्चों को बाहों में झुलाते हैं। इसी तरह मेघालय में (45.4 %) और त्रिपुरा में (26.8 %) बच्चों को बाहों में झुलाना आम प्रथा है। अन्य पद्धतियों में से गाकर सुलाना मेघालय में (27.1 %), त्रिपुरा में (25.5 %), थपथपाकर सुलाना मेघालय में (37 %), त्रिपुरा में (26.4 %) प्रचलित था।

तालिका 140: सताने वाले बच्चे के प्रबंध में प्रयुक्त पद्धतियाँ

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	12.8	22.3	32.5	22.8
2.	कमरे को अंधेरा करना	5.1	3.3	26.8	12.2
3.	बच्चे को डराना	46.3	24.5	8.6	26.2
4.	बच्चे को थप्पड मारना	30.7	30.4	25.5	28.8
5.	बच्चे को शांत या सुखदायक रखना	0	19.0	0	5.9
6.	कोई अन्य	5.7	0.7	0	2.2

सताने वाले बच्चों को शांत करने के लिए अधिकतर लोग बच्चों को डरातेहैं (46.3 %)। जबकि, मेघालय में (30.4 %) थप्पड मारना एक आम प्रथा है। त्रिपुरा में (32.5 %) अधिकांश ने कहा कि, सताने वाले बच्चों के प्रबंध के लिए कोई विशिष्ट पद्धति नही है।

तालिका 141: सोने की जगह

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माता पिता के साथ	96.5	92.6	95.5	95.0
2.	अलग झूले या बिछौने पर	2.1	4.8	2.9	3.2
3.	और कुछ	1.4	2.6	1.6	1.8

परिणाम यह दर्शाते हैं कि, अधिकांश बच्चे मिजोरम में (96.5 हैं), मेघालय में (92.6 %), त्रिपुरा में (95.5 %) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (95 %) माता पिता के साथ सोते हैं।

तालिका 142: प्रयुक्त बिछौने के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	झूला	3.5	3.7	6.1	4.5
2.	बिछौना	95.1	91.0	90.4	92.2
3.	पालना	0.4	0.4	2.2	1.0
4.	कुछ और	1.1	4.9	1.3	2.3

मिजोरम में (95.1%), मेघालय में (91.0%) तथा त्रिपुरा में (90.4%) अधिकतर बिछौने का प्रयोग किया जाता है।

XVIII. बच्चे को संभालने की स्थिति

तालिका 143: बच्चे को सामान्यत: किस तरह ले जाया जाता है

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बाहों में	18.0	25.8	33.8	26.0
2.	पीठ पर (कपड़े में लपेट कर)	76.2	70.1	14.8	52.5
3.	कंधे पर	4.1	2.2	36.0	14.8
4.	कोई अन्य	1.7	1.8	15.4	6.6

बच्चों को संभालने की आम प्रथा में मिजोरम में (76.2%) तथा त्रिपुरा में (70.1%) पीठ पर (कपडे में लपेटकर) ले जाया जाता है। त्रिपुरा में (36%) अधिकांश लोग बच्चों को कंधे पर ले जाते हैं। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (52.5%) लोग बच्चों को पीठ पर कपड़े से बने पाउच में ले जाते हैं।

तालिका 144: खिलाने/ पिलाने की स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ की गोद में	23.1	43.2	31.9	32.5
2.	माँ के द्वारा उठाकर	23.1	11.4	13.7	16.2
3.	कुर्सी पर बिठाकर	35.7	25.1	2.9	20.7
4.	ज़मीन पर बिठाकर	7.1	16.2	43.8	23.2
5.	बच्चा इधर उधर दौडता	10.2	1.5	5.8	5.9
6.	कुछ अन्य	0.7	2.6	1.9	1.7

मिजोरम में लगभग 35.7% लोग बच्चों को खिलाते समय कुर्सी पर बिठाते हैं। मेघालय में लगभग 43.2% लोग बच्चे को माँ के गोद में बिठाकर खिलाते हैं और त्रिपुरा में 43.8% लोग बच्चों को खिलाते समय जमीन पर बिठाते हैं।

तालिका 145: सोते समय की स्थिति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	सीधे सोना	72.9	55.2	37.1	54.7
2.	करवट लेना	25.4	37.8	46.0	36.6
3.	औंधा	1.4	6.3	6.4	4.7
4.	कोई अन्य	0.3	0.7	10.5	4.1

मिजोरम में 72.9% तथा मेघालय में 55.2% बच्चों को सीधा सुलाते हैं। त्रिपुरा में 46% बच्चों को औंधा सुलाते हैं।

तालिका 146: किसी विशेष स्थिति में बच्चे को ले जाने की मानदंड आयु है

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	75.8	38.8	78.8	71.5
2.	नहीं	24.2	61.2	21.2	28.5

मिजोरम में (75.8%) तथा त्रिपुरा में (78.8%) लोग बच्चों को ले जाने के लिए आयु को एक मानदंड के रूप में मानते हैं। इन दोनों राज्यों के भिन्नता में, मेघालय में 61.2% लोग बच्चों को ले जाने में आयु को एक मानदंड के रूप में नहीं मानते हैं।

XIX. सांस्कृतिक प्रथाएँ

तालिका 147: समारोह मनाने के कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बौद्धिकता को बढ़ावा देने के लिए	7.4	0.4	3.8	4.0
2.	सुंदरता के लिए	0.3	31.5	80.3	38.4
3.	बच्चे की पहचान बनाने के लिए	0.7	9.9	49.0	20.7
4.	आस पास से परिचित कराने में मदद करने	0	0.4	52.5	18.7
5.	ठोस आहार लेना प्रारंभ करने के लिए	0.3	5.5	5.4	3.7
6.	कोई अन्य	0.3	0.4	3.2	1.4

समारोह मनाने के कारण में बौद्धिकता बढाना मिजोरम में (7.4%) था। मेघालय में 31.5% और त्रिपुरा में 80.3% ने बताया कि, समारोह सुंदरता के लिए मनाते हैं।

तालिका 148: लड़को को दी जाने वाली प्राथमिकता

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	20.6	16.5	4.5	13.5
2.	नहीं	79.4	83.5	95.5	86.5

तीनो राज्यों में से किसी ने भी लड़कों को प्राथमिकता नहीं दी।

तालिका 149: प्राथमिकता दिखाने के प्रकार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कोई प्राथमिकता नहीं	54.4	83.2	95.2	77.8
2.	अधिक पौष्टिक आहार देना	6.4	1.8	2.2	3.5
3.	अच्छे कपड़े पहनाना	3.0	0.4	1.0	1.1
4.	बच्चे के साथ अधिक समय बिताना	5.4	5.9	0	4.0
5.	अन्य कोई	0.3	0.7	0	0.3

मिजोरम में 54.4%, मेघालय में 83.2%, तथा त्रिपुरा में 95.2% ने कोई प्राथमिकता नहीं दिखाई।

XX. बच्चे के देखभाल में परिवार का सम्मिलित होना

तालिका 150: मुख्य देखभालकर्ता

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ	95.2	86.6	89.4	90.5
2.	पिता	1.7	4.5	8.3	4.9
3.	नाना-नानी, दादा-दादी	1.4	4.1	2.3	2.5
4.	सहोदर	1.7	4.9	0	2.1
5.	और कोई	0.3	2.6	1.3	1.4

सभी तीनों राज्यों में प्रमुख देखभालकर्ता माँ है।

तालिका 151: बच्चे को अनुशासित करने वाले व्यक्ति

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	माँ	67.3	76.0	92.3	78.9
2.	पिता	30.1	17.8	7.0	18.1
3.	नाना-नानी, दादा-दादी	2.6	5.4	0.3	2.6
4.	कोई अन्य	-	0.8	0.3	0.4

मिजोरम में (67.3 %), मेघालय में (76 %) तथा त्रिपुरा में (92.3%) ने बताया कि, बच्चों को अनुशासित करने वाली व्यक्ति माँ है।

तालिका 152: प्रयुक्त अनुशासनिक तकनीकें

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	शारीरिक दंड (मारना)	15.9	36.5	18.2	21.5
2.	मौखिक दंड (ड़ांटना)	69.6	77.3	63.7	69.9
3.	समझाने की तकनीक	11.5	4.8	3.5	6.6
4.	विशेषाधिकार छीनना	0.3	10.6	0.65	3.6

सामान्यत: प्रयुक्त तकनीक में मौखित दंड था, मिजोरम में (69.6%), मेघालय में (77.3%) तथा त्रिपुरा में (63.7%), संपूर्ण पूर्वोत्तर में (69.9%)।

तालिका 153: पाये गये समस्यात्मक व्यवहार

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	कुछ नहीं	13.2	1.5	3.5	6.1
2.	नाखून चबाना	4.7	18.7	18.8	14.0
3.	जरूरत के लिए रोना	57.8	44.0	1.9	33.6
4.	बिस्तर पर पेशाब करना	48.0	75.8	13.7	44.4
5.	लात मारना	24.0	29.7	9.9	20.7
6.	थूँकना	18.9	14.3	4.8	12.5
7.	अंगूठा चूसना	3.7	28.9	22.0	18.0
8.	कोई अन्य	0.7	0.4	0.3	0.5

सामान्यत: पाये गये समस्यात्मक व्यवहार हैं बिस्तर पर पेशाब करना, जरूरतों को पूरा करने के लिए रोना और अंगूठा चूसना। मिजोरम में (57.8%), अधिकांश उत्तरदाताओं ने बताया कि जरूरतों को पूरा करने के लिए रोना एक समस्यात्मक व्यवहार है। मेघालय में (75.8%) ने बच्चों में बिस्तर पर पेशाब करना समस्यात्मक व्यवहार के रूप में बताया। त्रिपुरा में (22%) अधिकांश बच्चों में अंगूठा चूसने की आदत है। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में 44.4% बच्चों को बिस्तर पर पेशाब करने की आदत है।

शारीरिक अक्षमता वाली एक 13 वर्षीय लडकी

कई बार आपरेशन किया गया फटी तालू वाला चार वर्षीय बच्चा

XXI. खेल का विवरण

तालिका 154: खेल के प्रकारों में सम्मिलित

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अन्वेषणात्मक खेल	2.7	36.2	34.1	24.3
2.	एकांत खेल	50.6	30.2	48.3	43.7
3.	अथल-पुथल खेल	40.2	21.6	12.5	24.3
4.	स्वाँग भरने वाले	3.8	11.2	0.7	4.8
5.	समांतर खेल	0.8	0.4	1.4	0.9
6.	कोई और	1.9	0.4	3.0	1.9

खेल के प्रकार जिसमें बच्चों को शामिल किया जाता है, यह पाया गया कि, मिजोरम में (50.6%) अधिकांश बच्चे एकांत में खेलते हैं। मेघालय में (36.2%) बच्चे अन्वेषणात्मक खेल खेलते हैं। त्रिपुरा में अधिकांश बच्चे एकांत खेलने के स्तर पर हैं (48.3%)। संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (43.7%), अधिकांश बच्चे एकांत खेलने के स्तर पर हैं।

तालिका 155: बच्चे के खेल के साथी

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	अभिभावक	69.9	52.4	61.1	61.4
2.	सहोदर	41.6	58.2	34.7	44.3
3.	कोई और	6.4	5.9	8.9	7.1

यह रिपोर्ट किया गया कि, अधिकतर बच्चों के खेल के साथी उनके अभिभावक हैं। यह मिजोरम में (69.9%), त्रिपुरा में (61.1%), संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (61.4%) पाया गया। मेघालय में (58.2%) बच्चे अपने सहोदरों के साथ अधिकतर खेलते हैं।

तालिका 156: खेल का समय

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	सुबह	87.5	89.6	83.1	80.4
2.	दोपहर	22.6	72.5	77.4	57.5
3.	शाम	79.1	79.9	78.7	79.2

बच्चों के लिए सामान्य खेल के समय के बारे में पूछा गया, उन्होने बताया कि, अधिकतर बच्चे सुबह खेलते हैं। यह परिणाम मिजोरम में (87.5%), मेघालय में (89.6%), त्रिपुरा में (83.1%) और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (84.4%) इसका प्रमाण है।

XXII. बच्चे के खेल क्रियाकलापों में शमिल होना पारिवारिक सदस्य

तालिका 157: बच्चे के साथ अधिक समय बिताने की जरूरत

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	96.6	96.6	80.9	91.1
2.	नहीं	3.4	3.4	19.1	8.9

अधिकतर अभिभावकों ने बच्चे के साथ अधिक समय बिताने की जरूरत बताई। लगभग (96.9%), (96.9%), (80.9%) और (91.1%) क्रमश: मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा एवं संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में बच्चों के साथ अधिक समय बिताने की जरूरत बताई।

तालिका 158: बच्चे के साथ ज्यादा समय बिताने के कारण

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	बच्चे के लिए समय नहीं निकाल पा रहे हैं	12.4	91.6	69.1	57.8
2.	बच्चे की देखभाल से माँ को राहत देने के लिए	43.2	6.6	27.4	26.2
3.	अन्य कोई	44.4	1.8	3.5	16.0

अध्ययन यह दर्शाता है कि, अधिकांश अभिभावकों ने यह महसूस किया कि, अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताये क्यों कि, उनके पास बच्चों के साथ बिताने के लिए समय नहीं है। परिणामों द्वारा यह स्पष्ट होता है - मेघालय में (91.6%), त्रिपुरा में (69.1%), और संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में (57.8%)। यद्यपि, मिजोरम में माता-पिता ने बच्चों के समय नहीं बिता सकने के अन्य कारण बताये हैं -जैसे पारिवारिक झगडे, विलग परिवार पद्धति, परिवार की जिम्मेदारियाँ, स्वास्थ्य समस्याएँ, सहायता की कमी।

तालिका 159: बच्चे को नाम व वस्तुओं को पहचानने को प्रोत्साहित करना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	82.5	90.0	54.4	74.9
2.	नहीं	17.5	10.0	45.6	25.1

बच्चों को औपचारिक शिक्षा सिखाने के लिए तथा उन्हें स्कूल के लिए तैयार करने के लिए अभिभावक एवं देखभालकर्ता बच्चों को सामान्य नाम व वस्तुओं को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करते है। वर्तमान अध्ययन में यह पाया गया कि, मिजोरम (82.5%) तथा मेघालय (90%) में अधिकांश बच्चों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जबकि, त्रिपुरा में (54.4%) अधिकांश लोग अपने बच्चों को सीखने हेतु प्रोत्साहित नहीं करते।

तालिका 160: बच्चे को कविता तथा गाने सिखाना

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	हाँ	74.6	69.9	45.5	62.8
2.	नहीं	24.4	30.1	54.5	37.2

परिणाम यह सूचित करते हैं कि, अधिकांश परिवारों में मिजोरम (74.6%), मेघालय (69.9%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य (62.8%) में बच्चों को कविता एवं गानों द्वारा पर्याप्त भाषा उत्तेजना प्रदान की गई। परन्तु त्रिपुरा में (54.5%) अधिकांश बच्चों को कोई कविता या गाना सिखाया नहीं जाता है।

तालिका 161:बच्चों को दी गयी खेल सामग्री

क्र.	समूह	मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा	संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य
1.	घुमक्कड / वाकर	19.9	1.1	9.2	10.3
2.	सरल आँख-हाथ समन्वयन खिलौने	77.4	58.2	24.4	53.7
3.	अन्य कोई	5.7	45.4	57.6	36.5

मिजोरम में (77.4%), मेघालय में (58.2%) तथा संपूर्ण पूर्वोत्तर राज्य में (53.7%), अधिकांश खेल सामग्री में सरल या छोटे छोटे आँख-हाथ समन्वयन खिलौने हैं। जबकि, त्रिपुरा में अन्य खिलौने जैसे-मिट्टी के खिलौने, मोबाइल, पुल-पुश खिलौने दिये गये।

चर्चा

यह अध्याय तीन भागों में विभाजित है, अर्थात्, जनसांख्यिकी आंकडें, मातृक इतिहास और बच्चे की पालन-पोषण प्रथाएँ।

क. जनसांख्यिकी आंकडें

सभी तीनों राज्यों में उत्तरदाताओं में माताओं की संख्या अधिक है। बच्चों में से लड़कों की जनसंख्या अधिक थी, मिजोरम में (57.1%) तथा त्रिपुरा में (52.2%)। मिजोरम में विस्तृत परिवार अधिक थे (67.1%), जबकि, मेघालय में (72.5%) तथा त्रिपुरा में (63.7%) न्यूक्लियर यानि विलग परिवार हैं। मेघालय तथा मिजोरम में ईसाई परिवार अधिक हैं जबकि, त्रिपुरा मे हिन्दुओं का शासन है।

सामाजिक वर्ग के बारे में यह पाया गया कि, मिजोरम तथा मेघालय में लगभग 90% लोग अनुसूचित जनजाति के हैं। त्रिपुरा में अनुसूचित जनजाति के लोगों की प्रतिशतता कम है। अनुसूचित जाति व अन्य पिछडे वर्ग के लोगों से इनकी प्रतिशतता भी कम है।

जब महिला साक्षरता के बारे में देखा गया, तो यह पता चला कि, मिजोरम में अधिकांश माताओं ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। अन्य दो राज्यों की तुलना में मेघालय की अत्यधिक संख्या में माताएँ निरक्षर थी। त्रिपुरा में अधिकतर माताओं ने 6-9वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। मेघालय में अधिकतर माताओं ने 1-5वीं तक पढ़ाई की है। मिजोरम तथा मेघालय में कोई निरक्षर नही था। त्रिपुरा में निरक्षर लोगों की संख्या 1% से कम थी।

मिजोरम में लगभग 40% पिता नौकरी करते थे। मेघालय के अधिकतर पिता कृषक थे। मेघालय तथा त्रिपुरा में अधिक संख्या में कृषक तथा श्रमिक थे जिनका शैक्षणिक स्तर कम था।

सभी तीनों राज्यों में विवाह मुख्यत: सगोत्र में नहीं हुए थे।

सभी तीनों राज्यों में 70% से अधिक लोग अपने स्वयं के निवासों में रह रहे थे। मिजोरम तथा त्रिपुरा में अधिकतर घर कच्चे घर थे। मिजोरम में अधिकतर घर आधे पक्के थे।

मिजोरम में, लगभग 90% घरों में रोशनी अच्छी थी तथा घर हवादार भी थे। मेघालय तथा त्रिपुरा के घरों में वेंटिलेशन कम था।

संपूर्ण पूर्वोत्तर

अन्य तीनों राज्यों की तुलना में, **मिजोरम** में अधिक लोगों में साक्षरता होते हुए भी 85% माताएँ गृहिणी थी तथा साक्षरता की संख्या कम थी। मिजोरम में ज्यादा लोग निरक्षर नहीं थे। लगभग 2/3 परिवार अपने घरों में रहते थे और इनमें से आधे लोग आधे पक्के घरों में रहते थे जिसमें वेंटिलेशन ठीक या अच्छा था। पीने के पानी का मुख्य स्रोत नल था। रोशनी के लिए ऊर्जा के रूप में बिजली तथा खाना पकाने के लिए एलपीजी गैस का प्रयोग करते थे। लगभग 13.1% पुरुष बेरोजगार थे।

मेघालय में ज्यादातर परिवार न्यूक्लियर (विलग) एवं मातृप्रधान (99%) परिवार थे। माताओं में निरक्षरता अधिक रही। वैसा पिताओं में कोई भी निरक्षर न होते हुए भी, इनमें से अधिक तर ने 1-5वी तक पढाई की थी। मेघालय में ज्यादा निरक्षरता के कारण, गृहिणियों की संख्या 55.5% थी। पुरुषों में से 41% कृषक थे। बेरोजगार 1% से कम था। परिवारों में से लगभग 75% अपने घरों में रहते थे, जिनमें से 55% कच्चे घर थे। वेंटिलेशन तुलनात्मक रूप से अच्छा नहीं था। घरों में से केवल 3.3% में वेंटीलेशन अच्छा था।

त्रिपुरा, मूल रूप से एक हिन्दु प्रभुत्व राज्य (73.5%) में से लगभग 22.1% लोग अनुसूचित जनजाति के हैं, अनुसूचित जाति तथा अन्य पिछडे वर्ग के लोग लगभग समान थे (26.9%)। माताएँ निरक्षर थीं (24.9%)। 30% माताओं ने 6-9 कक्षा तक पढ़ाई की थी। इनमे से लगभग 94% गृहिणियाँ हैं। ये लोग खेती के काम के लिए नहीं जाते। यद्यपि निरक्षरता लगभग थी ही नहीं, 10वीं तक पढ़ाई करने वालों की प्रतिशतता अधिक थी। इनमें से अधिकतर लोग अपने स्वयं निर्मित कच्चे घरों में रहते थे। लगभग एक तिहाई घरों में हवा की अच्छी सुविधा है तथा दो तिहाई परिवारों में हवा की सुविधा अच्छी है। लगभग 94% माताएँ गृहिणियाँ हैं। यह पितृस्वामिक पद्धति के कारण हो सकता है ।

साक्षरता अधिक होते हुए भी अधिक संख्या गृहिणियों की है। मिजोरम में विस्तृत परिवारों की संख्या अधिक है जिनमे अधिकतर महिलाएँ गृहिणियाँ हैं।

मिजोरम में, यद्यपि, अधिक विलग परिवार (41%) होते हुए भी, महिलाएँ कृषक हैं। यह सूचित करता है कि परिवार का समर्थन कम है। शायद इसलिए कि, 41% पिता व्यवसायी हैं और सेवा सेक्टर में हैं, वहाँ पर अधिकतर स्त्रीयाँ गृहिणी हैं। जहाँ माता एवं पिता काम करते हैं, लगभग (41%) कृषक हैं। विलग परिवारों में, बेरोजगारी न्यूनतम है (1% से कम)। मिजोरम में पिताओं में बेरोजगारी अत्यधिक है (14%)।

त्रिपुरा में, निरक्षर माताओं की संख्या अधिक हैं (25%), अधिक विलग परिवार जहाँ लगभग (94%) स्त्रियाँ गृहिणी हैं। पुरुष अधिक संख्या में कृषी का काम करते हैं और अन्य पुरुष व्यापार का काम करते हैं तथा सर्विस सेक्टर में (लगभग 25.6%) हैं । त्रिपुरा में अधिक कार्मिक वर्ग हैं, लगभग 31.6% कार्मिक हैं। कृषी का काम करने वाले केवल 20.4% हैं। यद्यपि पुरुषों में निरक्षरों की संख्या नगण्य हैं, एक तिहाई पुरुषों ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की हैं। लगभग 40% पुरुषों ने प्राथमिक कक्षा यानि 5-6 कक्षा तक पढ़ाई की हैं। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूल शिक्षा तक अधिक लोगों ने पढ़ाई की है।

मेघालय में कम साक्षरता वाले लोग कृषि पर आधारित हैं और विलग परिवार के हैं। उनके लिए कोई परिवार संसाधन नहीं है, न ही कोई स्थिर आय है। 50% से अधिक लोगों के घर कम वेंटिलेशन वाले, कच्चे घर हैं। ठीक या कम रोशनी वाले घर 98% हैं।

त्रिपुरा में साक्षरता कम है और ज्यादातर पुरुष व्यापार और सेवा में कार्य करते हैं और केवल कुछ लोग ही खेती का काम करते हैं। 70% से अधिक घर कच्चे घर हैं जिनमें से एक तिहाई घरों में वेंटीलेशन अच्छा है।

भाग-I : परिवार का ब्यौरा

मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा
अत्यधिक परिवार पितृसत्तात्मक वंशज वाले विस्तृत परिवार हैं	अधिकतर परिवार विलग या न्यूक्लियर परिवार हैं, मातृसत्तात्मक वंशज और बडे परिवार हैं।	अधिकतर परिवार पितृसत्तात्मक वंशज वाले विलग परिवार हैं।
परिवार में ज्यादा से ज्यादा 5-7 बच्चे हैं।	लगभग 74.4% परिवारों में पाँच या अधिक लोग हैं।	यहाँ पाँच सदस्यों से कम वाले छोटे परिवार हैं (53.2%)। इसमें भी, एक या दो बच्चों वाले परिवार अधिक हैं।
अधिकतर लोग ईसाई धर्म का पालन करते हैं(98.3%)। अनुसूचित जनजाति वाले लोग 98.3% हैं।	लगभग 89% लोग ईसाई धर्म के हैं और इनमें से अनुसूचित जनजाति के हैं।	प्रमुख धर्म हिन्दुत्व है (73.5%)। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछडे वर्ग के लोगों की संख्या समान है।
6ठी कक्षा से 10वी कक्षा तक शिक्षित व्यक्तियों की संख्या अधिक है और अत्यधिक स्नातक और स्नातकोत्तर। अधिक साक्षरता, कोई पिता निरक्षर नहीं है। 10वीं कक्षा और इन्टरमीडियेट तक साक्षरता अधिक है जिसका 78.9% बनता है। यहाँ कई पिता शिक्षित हैं। माताएँ ज्यादातर गृहिणी हैं (85.5%)। लगभग (40%) पिता सर्विस करते हैं। अगला विकल्प है, खेती करना (23.8%)।	साक्षरता 1 से 9 वी कक्षा तक है जिसका 53.9% बनता है। यहाँ कोई पिता निरक्षर नहीं है और इनके शिक्षा स्तर 1 से 9 वीं कक्षा तक है। लगभग 58.5% माताएँ गृहिणी हैं। लगभग 24.5% माताएँ खेती का कार्य करती हैं। लगभग 41% पिता खेती का कार्य करते हैं या श्रमिक हैं जिसका प्रतिशत 34.6% है। सर्विस करने वाले लोग बहुत कम है (10.9%)।	लगभग 25% माताएँ निरक्षर हैं और यदि साक्षर हैं तो शैक्षणिक स्तर 1 से 9 वी कक्षा तक है (58.2%)। 10वीं कक्षा तक पिता शिक्षित 30.8% है और 1 से 10वीं तक पढ़ाई करने वालों की संख्या 71.8% हैं। माताओं में अधिकतर गृहिणी (93.9%) हैं। तीनों राज्यों में से यह संख्या अधिक है। पिता परिपक्व श्रमिक के रूप में काम करते हैं। इनमें से लगभग (25%) व्यापार करते हैं या तीसरा विकल्प इनका खेती का काम (24.4%) हैं।
अधिकांश सगोत्र विवाह नहीं हैं।	अधिकांश सगोत्र विवाह नही हैं।	अधिकतम विवाह सगोत्र नहीं हैं।

परिवार के प्रकार:

सामान्यत: परिवारों को विलग या संयुक्त के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। वास्तव में, परिवार के प्रकारों को कई विद्वानों ने भिन्न भिन्न रूप में वर्गीकृत किया है। कपाडिया (1969) ने परिवार के दो प्रकारों में पहचाना है, अर्थात्, विलग तथा संयुक्त / विस्तृत, जबकि, रिचर्ड एट.आल., (1989) तथा काल्डवेल एट.अत.(1988) ने परिवारों को विलग, स्टेम, संयुक्त, संयुक्त-स्टेम व अन्य के रूप में वर्गीकृत किया है।

परिवारों की संरचना में भिन्नता यह दर्शाता है कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का भारत के विलग परिवारों की वृद्धि में परिवार के मुखिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवारों की संरचना में ये परिवर्तन परिवार के सदस्यों के रवैये तथा व्यवहार पर पड़ने वाली संभाव्य परिणामों की सूक्ष्म स्तर पर जाँच करने की मांग करती है।

मिजोरम में अधिकांश परिवार विस्तृत परिवार हैं। पर मेघालय तथा त्रिपुरा में विलग परिवार ज्यादा दिखाई देते हैं।

संयुक्त तथा विस्तृत प्रकार के परिवार होने से परिवार का समर्थन तथा संसाधन बेहतर होता है।

परिवार का आकार

मिजोरम में, अधिक परिवारों में 5-7 सदस्य हैं। मेघालय में, पाँच सदस्यों से अधिक रहने वाले परिवार 74.4% है तथा त्रिपुरा में अधिकतम परिवारों में पाँच सदस्यों से कम हैं (53.2%)।

धर्म

मिजोरम तथा मेघालय में, अधिकतम लोग ईसाई धर्म का पालन करते हैं (98.3% तथा 89%), जबकि, त्रिपुरा में अधिकतम (73.5%) लोग हिन्दु धर्म का पालन करते हैं।

सामाजिक समूह

मिजोरम तथा मेघालय में अधिकतम लोग अनुसूचित जनजाति के हैं। त्रिपुरा में संप्रति अनुसूचित जनजाति, पिछडे वर्ग या उन्नत वर्ग के हैं।

माताओं की शैक्षणिक स्थिति

मिजोरम में ज्यादातर माताओं ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। मेघालय में ज्यादातर माताएँ निरक्षर हैं। पर त्रिपुरा में निरक्षर माताओं की संख्या और छठी कक्षा तक पढ़ाई करने वालों की संख्या समान है।

सिफारिश

महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम आरंभ करना चाहिए।

पिताओं की शैक्षणिक स्थिति

मिजोरम में मेघालय तथा त्रिपुरा की तुलना में साक्षरता की संख्या अधिक है। यहाँ पिता निरक्षर नहीं हैं। ज्यादातर पिता ने 10वीं तक या इन्टरमीडियेट स्तर तक पढ़ाई की है। मेघालय में भी निरक्षर पिता नही हैं। ज्यादातर पिताओं ने 9वीं कक्षा तक पढ़ाई की हैं। त्रिपुरा में भी कोई भी पिता निरक्षर नही हैं। इनमें से लगभग 30% ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की हैं।

माता का व्यवसाय

अधिकांश माताएँ गृहिणी हैं, मिजोरम में 85.5%। लगभग 58.5% गृहिणी हैं, इसके बाद आने वाला व्यवसाय है खेती का काम (24.5%) मेघालय में। त्रिपुरा में 93.9% माताएँ गृहिणी हैं जो तीनों राज्यों में से अत्यधिक है।

पिता का व्यवसाय

मिजोरम में, 40% पिता नौकरी करते हैं तथा (23.8%) खेती का का करते हैं। मेघालय में लगभग 41% पिता कृषक हैं तथा 34.6% श्रमिक हैं। मेघालय में नौकरी करने वाले पिता कम (10.5%) हैं। त्रिपुरा में लगभग 25% व्यापार करते हैं, लगभग 31% श्रमिक हैं तथा इनका तीसरा विकल्प है खेती का काम।

सगोत्र विवाह

सभी तीनों राज्यों में सगोत्र विवाह नहीं हैं।

भाग-II : जीवन की परिस्थितियों का ब्यौरा

मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा
अधिकतम लोगों के अपने स्वयं के घर है (73.8%) जो आधे पक्के हैं (72%)	लगभग (75%) अपने स्वयं के घरों में रहते हैं, 50% कच्चे और 43.2% आधे पक्के।	अधिकांश घर स्वयं के हैं और कच्चे (72.1%), और आधे पक्के (21.2%)।
कमरों की संख्या 4 या अधिक (43.9%)। दो कमरों वाले घर 75% तक है।	अधिकांश घरों में 2 कमरे हैं (48.7%), तीन कमरों वाले 29.1%।	साधारणत: घरों में दो कमरे होते हैं (42.4%) और एक कमरा (31.8%)। तीन कमरों वाले घर कम प्रतिशत मे हैं (13.4%)।
घरों में वेंटिलेशन ठीक या अच्छा है। प्रमुख जल स्रोत नल है (50%)। नदी तथा नाले से 19.9%, टैंक एवं तालाब से 16.8%।	ठीक वेंटिलेशन वाले घर 53.5% से कम वेंटिलेशन व रोशनी वाले घर 43.2% हैं। पीने के पानी का मुख्य स्रोत टैंक एवं तालाब है (42.5%)। नल से पानी (32.6%)।	वेंटिलेशन एवं रोशनी कम 36.9% है, ठीक वेंटिलेशन वाले घर 35.7% हैं। पीने के पानी का मुख्य स्रोत ट्यूब वेल (52.9%) तथा नल का पानी (31.1%)।
प्रकाश के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत बिजली है (99%)। खाना पकाने के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत एलपीजी है। लगभग (34%) ईंधन लकड़ी, पत्तियाँ और भूसा है।	रोशनी के लिए मुख्य स्रोत बिजली है (56.3%)। खाना पकाने के लिए ऊर्जा का स्रोत ईंधन लकडी है (91.9%)।	प्रकाश का मुख्य स्रोत बिजली है (67.7%) तथा तेल (40.7%)। खाना पकाने के लिए मुख्य स्रोत ईंधन लकडी, पत्तियाँ तथा भूसा है जबकि, एलपीजी 17.9% लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है।

मिजोरम में:

मिजोरम में अधिकतम परिवार अपने स्वयं के घर में रहते हैं। लगभग 72% आधे पक्के हैं। चार या अधिक कमरों वाले (43.9%) है। दो कमरों से अधिक कमरों वाले घर 75% है। वेंटिलेशन उचित से लेकर अच्छे तक है। पीने के पानी का मुख्य स्रोत नल है तथा रोशनी के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत विद्युत है।

मेघालय में:

मेघालय में 75% लोग अपने स्वयं के घरों में रहते हैं, अधिकांश कच्चे तथा (43.2%) आधे पक्के हैं। ज्यादातर घरों में दो कमरे हैं। घरों में वेंटिलेशन तथा रोशनी उचित से लेकर कम तक है। पीने के पानी का मुख्य स्रोत टैंक तथा तालाब हैं। रोशनी के लिए बिजली मुख्य स्रोत है (56.3%)। खाना पकाने के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत ईंधन लकड़ी है।

त्रिपुरा में:

त्रिपुरा में ज्यादातर घर स्वयं के हैं पर कच्चे घर हैं। इन घरों में दो कमरे हैं। वेंटिलेशन तथा रोशनी कम है 36.9% और उचित 35.7% है। पीने के पानी के लिए मुख्य स्रोत ट्यूब वेल (52.3%) और नल का पानी (31.1%)। रोशनी के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत बिजली है (67.7%) तथा तेल (40.7%)। खाना पकाने के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत ईंधन लकड़ी, पत्तियाँ तथा भूसा है जबकि, एलपीजी 17.9% परिवारों द्वारा उपयोग किया जाता है।

भाग-III : पर्यावरणीय ब्यौरा

मिजोरम	मेघालय	त्रिपुरा
मिजोरम में (85.5%) खुली नालियाँ हैं।	अधिकतर (77.2%)नाली व्यवस्था नहीं हैं और (21.7%) खुली नालियाँ हैं।	(53.4%) घरों में नालियों की व्यवस्था नहीं हैं। कच्ची नाली (21.4%) घरों में हैं और खुले नाले (16.9%) में।
कचरा फेंकने के लिए निवासियों द्वारा बनाई गई व्यवस्था (90.7%) हैं।	(93.6%) घरों में कचरा फेंकने के लिए कोई व्यवस्था नहीं हैं।	अधिकतर (62.6%) घरों में कचरा फेंकने के लिए कोई व्यवस्था नहीं हैं। लेकिन (33.3%) घरों में यह व्यवस्था निवासियों द्वारा सामूहिक रूप से बनायी गयी है।
ज्यादातर (84.6%) प्राकृतिक आपदाएँ जंगल की आग के रूप में रही हैं।	आम आपदाएँ जंगल की आग (59.6%), भूस्खलन (31.3%) हैं।	त्रिपुरा में बाढ़ (85.5%) ही एक प्राकृतिक आपदा है।

बच्चे को बिठाकर स्नान करवाया जा रहा है। बच्चे को नहलाने के लिए एक मुलायम स्क्रबर और साबुन का प्रयोग किया जाता है।

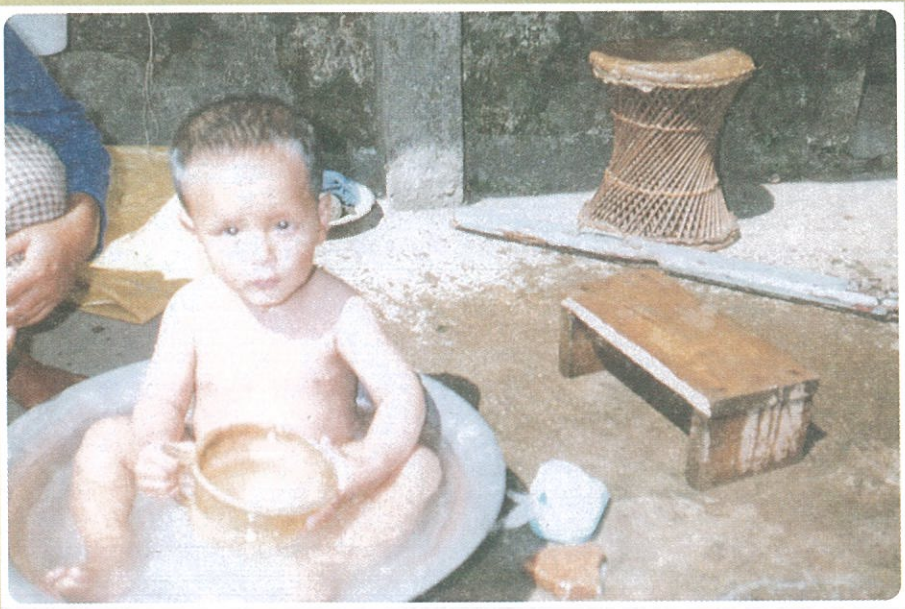

टब में पानी के साथ खेल रहा बच्चा

बच्चे को माँ स्तनपान करा रही है

बच्चे को नहलाने के बाद उसका बदन सूखे कपड़े से पोछा जा रहा है।
सिर से लेकर पैर तक रसोई के तेल से बच्चे की मालिश की जाती है

माँ बच्चे को साफ कपड़े पहना रही है

बच्चे को पूरे कपडे पहना दिये गये हैं।
अभी बच्चे को नैपी की जरूरत नहीं है।